धातुरूप-निदर्शनम्

संस्कृत के ''कृ'' धातु से बनने वाले समस्त तिङन्त एवं कृदन्त रूपों तथा कृदन्त शब्दों से बनने वाली समस्त क्रियाओं का एक निदर्शन

लेखक

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री



उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान
लखनऊ

धातुरूप-निदर्शनम्

संस्कृत के "कृ" धातु से बनने वाले समस्त तिङन्त एवं कृदन्त रूपों तथा कृदन्त शब्दों से बनने वाली समस्त क्रियाओं का एक निदर्शन

लेखक

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री



उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान

लखनऊ

दुर्लभ एवं अप्राप्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशन
योजनान्तर्गत-अष्टम् पुष्प

प्रकाशक : निदेशक
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ

प्राप्ति स्थान : **विक्रय विभाग**
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान,
नया हैदराबाद, लखनऊ-226 007

प्रथम संस्करण : वि.स. 2054 (1998 ई.)
द्वितीय संस्करण : 2015

प्रतियाँ : 1100

मूल्य : रु. 170.00

मुद्रक : शिवम् आर्ट्स, निशातगंज, लखनऊ
दूरभाष : 0522-4104922
मो. 9415061690

प्रकाशकीय

संस्कृत केवल विद्या, विषय, भारतीय संस्कृति की वाहिका न होकर एक पूर्ण वैज्ञानिक भाषा है। ध्वनि और लिपि की समानता इसे एक ओर वैशिष्ट्य प्रदान करता है तो दूसरी ओर इस भाषा के व्याकरण को रीढ़ रूप बहुसंख्य धातुयें अमरता जो सार्वकालिक ज्ञान को अनुदित तथा व्यवहारिक रूप देने के लिए समर्थ बनाता है। आज समस्त भारतीय भाषाओं में अधुनातन ज्ञान को प्रकट करने का सामर्थ्य संस्कृत भाषा ही प्रदान करती है। विशेषकर राजभाषा हिंदी में नये-नये शब्दों को गढ़ने के लिए संस्कृत के धातु पाठ ही आधार रूप में मान्य है। इस दृष्टि से 'धातुरूप निदर्शनम्' ग्रन्थ का पुनः प्रकाशित होना प्रासंगिक है।

इसको उपयोगिता और भी अधिक तब बढ़ जाती है जब सामान्य बोल चाल की संस्कृत सीखने की इच्छा से आये हुए लोग तथा संस्कृत में लिखे छोटे-छोटे ग्रन्थों के अध्ययन में सहायक-सामग्री के रूप में पढ़ने के इच्छुक जन इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए संस्थान के विक्री केन्द्र पर निरन्तर आते हैं।

उ.प्र. संस्कृत संस्थान के स्थापित उद्देश्यों में से एक है-'दुर्लभ एवम् अप्राप्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशन'। इसके अन्तर्गत समय-समय देश के मूर्धन्य विद्वानों की पाण्डुलिपियों को संस्थान ग्रन्थ रूप प्रदान कर उसे प्रकाशित करता है। इसी क्रम में अष्टम् पुष्प के रूप में सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थान, वाराणसी के माध्यम से संस्कृत भाषा को लोकभाषा रूप देने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले, आचार्य वासुदेव द्विवेदी जी की 'धातु रूप निदर्शनम्' कृति को प्रकाशित करने का निश्चय हुआ। वर्ष 1998 में इस पुस्तक का प्रकाशन संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से महत्त्व को देखते हुए 1000 प्रतियों में किया गया जो बहुत दिनों से संस्थान के पुस्तक भण्डार में समाप्त हो गया था। पाठकों के निरन्तर माँग को देखते हुए इसका पुनः प्रकाशन किया जा रहा है।

अन्त में मैं इस पुस्तक के पुनः प्रकाशन के अवसर पर मैं लेखक आचार्य वासुदेव द्विवेदी जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि तथा इस प्रकाशन कार्य को देखने वाली संस्थानकर्मी डॉ. चन्द्रकला शाक्य के लिए साधुवाद एवं सुन्दर अक्षर संयोजन एवं मुद्रण हेतु शिवम् आर्ट्स निशानतगंज, लखनऊ के प्रति शुभकामना व्यक्त करता हूँ। इस कार्य के लिए अपने कार्यकारी अध्यक्ष श्री शैलेश कृष्ण जी के प्रति भी आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

बृजेशचन्द्र
निदेशक

पुस्तक के सम्बन्ध में दो शब्द

संस्कृत सीखने के इच्छुक बालकों तथा प्रौढ़ विद्यार्थियों को भी आरम्भ में ही आवश्यक शब्दरूपों तथा धातुरूपों का भी ज्ञान कराकर संस्कृत में बोलने तथा अनुवाद करने के योग्य बनाने की दृष्टि से संस्थानम् द्वारा "सुगम शब्द रूपावलि" तथा "सुगम धातु रूपावलि" नाम से दो पुस्तकें पहले ही प्रकाशित की गई हैं।[1] अब इसी क्रम में धातुरूपों की यह एक दूसरी पुस्तक प्रकाशित की जा रही है जिसका उद्देश्य एक धातु से बनने वाले सभी प्रकार के क्रियारूपों का दिग्दर्शन कराना है। अगली पंक्तियों में उक्त उद्देश्य का अधिक स्पष्टीकरण किया जा रहा है। विद्यार्थी इसे ध्यानपूर्वक पढ़ें और समझें।

किसी भी धातु से दो प्रकार की क्रियायें बनाई जाती हैं। एक तो धातु में सीधे तिङ् प्रत्ययों को लगाकर तथा दूसरे धातु में कृत् प्रत्ययों को लगाकर बनाये हुए शब्दों में अस्, भू, स्था, आस् तथा वृत् आदि धातुओं के लट् लङ् लिङ् लृट् तथा लृङ् लकारों के रूपों को लगाकर। इन दोनों प्रकारों के क्रियारूपों को जाने बिना न तो कोई समस्त क्रियात्मक भावों को प्रगट कर सकता है और न अन्य भाषाओं से संस्कृत में अनुवाद ही कर सकता है। इसलिये यह आवश्यक है कि किसी भी संस्कृत पढ़ने वाले व्यक्ति को, जो संस्कृत में बोलना, लिखना तथा अनुवाद बनाना सीखना चाहता हो, उसे किसी भी एक धातु के (जो परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी दोनों हो) रूपों को बतला कर एक कर्ता एवं एक कर्म के साथ उनका प्रयोग करने का अभ्यास करा दिया जाय जिससे कि इसी आधार पर उसे अन्य परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी धातुओं से बनने वाली दोनों प्रकार की क्रियाओं के रूप, उनके अर्थ तथा वाक्यों में उनके प्रयोग की दृष्टि मिल सके। जैसे एक छोटे से दर्पण में भी विशाल आकृति का दर्शन किया जा सकता है उसी प्रकार एक धातु के ही दोनों प्रकार के क्रियारूपों का अर्थ एवं प्रयोग के साथ ज्ञान हो जाने पर समस्त धातुओं के क्रियारूपों का रहस्य खुल जाता है और वे एक छोटी सी खिड़की के सहारे विशाल आकाश को दृष्टिगत कर लेते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये कार्यालय द्वारा दो प्रकार के पोस्टर[2] भी प्रकाशित किये गये हैं जिनमें पठ् धातु के दोनों प्रकार के क्रियारूपों

---

1. संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने वालों को आरंभ में इन दोनों पुस्तकों को अवश्य पढ़ लेना चाहिये।
2. इन दोनों पोस्टरों की सहायता से एक पठ धातु के समस्त तिङन्त-कृदन्त रूपों तथा कालभेदों के अनुसार उनका प्रयोग करने का ज्ञान हो जाता है।

का उल्लेख कर दिया गया है। ये दोनों प्रकार के पोस्टर छात्रों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

आज उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये ही कुछ वृद्धि के साथ यह पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में आदर्श के रूप में कृ धातु को रखा गया है। क्योंकि यह उभयपदी धातु है अर्थात् परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी दोनों है। अतः इस एक धातु से ही दोनों प्रकार के रूपों का ज्ञान हो जाता है। इसके अतिरिक्त कृ धातु के रूपों के जानने का एक यह भी लाभ है कि इसी एक धातु के रूपों में ''पठनं, पाठनं, स्नानं, भोजनं, शयनं, जागरणं, क्रीडनं, खेलनं'' आदि सैकड़ों क्रियावाचक संस्कृत संज्ञाशब्दों को, जो अपनी-अपनी मातृभाषा के ही माध्यम से विदित होते हैं, लगाकर हजारों वाक्य बनाये और बोले जा सकते हैं। इस कारण भी उदाहरण के रूप में यहाँ कृ धातु का ही ग्रहण किया गया है।

इस पुस्तक के लिखने का दूसरा उद्देश्य एक और है। हिन्दी में बहुत सी क्रियायें ऐसी हैं जिनका संस्कृत अनुवाद उचित होने पर भी अप्रचलित होने के कारण बहुत से विद्वानों को भी खटकता रहता है और उसे वे संस्कृत परम्परासम्मत तथा संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में प्रयुक्त नहीं मानते। उदाहरण के रूप में नीचे कुछ हिन्दी क्रियाओं के ऐसे संस्कृत अनुवाद दिये जा रहे हैं जो प्रायः सभी विद्वानों को अटपटे से लगते हैं। यथा :-

हिन्दी	संस्कृत
यह पढ़ रहा है	स पठन् अस्ति
वह पढ़ता होगा	स पठन् भविष्यति
वह पढ़ने वाला है	स पठिष्यन् अस्ति
उसने पढ़ा होगा	स पठितवान् भविष्यति
वह पढ़ने देता है	स पठितुं ददाति
वह पढ़ पाता है	स पठितुं लभते
वह पढ़ने लगता है	स पठितुं लगति

उक्त प्रकार के संस्कृत के वाक्यों को सुनकर बहुत से विद्वान् इन्हें संस्कृत की परम्परा के अनुकूल न मानकर इन्हें केवल अंग्रेजी और हिन्दी आदि भाषाओं का अनुकरणमात्र मानते हैं। संस्कृत की एक पत्रिका में तो इस प्रसंग की चर्चा करते हुए एक विद्वान ने ऐसे वाक्यों को सर्वथा अव्यवहार्य ही मान लिया है। उनका कहना है कि ऐसे वाक्य संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में कहीं आये ही नहीं हैं।

हमने अपनी "संस्कृत वाक्य संग्रह" नामक पुस्तक में "जाने दो, आने दो" इन दो वाक्यों के लिये "गन्तुं देहि, आगन्तुं देहि" ऐसे वाक्य प्रकाशित किये हैं। इन्हें बहुत से विद्वान सर्वथा अशुद्ध और अप्रयुक्त मानते हैं। परन्तु जब उनसे पूछा जाता है कि आपके विचार से इन वाक्यों की क्या संस्कृत होगी तो वे झटपट कोई उत्तर नहीं दे पाते। इसी प्रकार जब उनसे यह वाक्य कहा जाता है कि "स प्रातरेव गृहं गतवान् भविष्यति" तो वे तुरन्त कह बैठते हैं कि भूतकाल में भविष्यत् का प्रयोग कैसे होगा? हाँ, "स गतवान् स्यात्" ऐसा हो सकता है। इस प्रकार ऐसी हिन्दी क्रियाओं के संस्कृत अनुवाद के विषय में बहुतों को सन्देह बना रहता है और वे कोई ठीक निर्णय नहीं कर पाते। परन्तु पाठकगण इस पुस्तक के अन्त में दिये गये विभिन्न ग्रन्थों से संकलित उद्धरणों को पढ़कर यह देखेंगे कि इस प्रकार के वाक्य प्राचीन ग्रन्थों में भी कितनी बार प्रयुक्त हुए हैं। अतः संस्कृत का कोई भी छात्र या विद्वान निस्सन्देह रूप से ऐसे वाक्यों का प्रयोग कर सके यह भी इस पुस्तक के प्रकाशन का एक विशिष्ट उद्देश्य रहा है।

परन्तु इतने से ही हिन्दी क्रियाओं के संस्कृत अनुवाद की समस्या हल नहीं हो जाती। उदाहरण के रूप में हिन्दी में संयुक्त क्रियाओं से जो विविध भाव प्रगट होते हैं उनका सही अनुवाद संस्कृत की क्रियाओं द्वारा नहीं हो पाता। निम्नलिखित हिन्दी क्रियाओं पर ध्यान देने से यह बात स्पष्ट हो जायगी। यथा-

पढ़ चुकता है	पढ़ लेने देता है।
पढ़ लेता है	पढ़ते बनता है
पढ़ डालता है	पढ़ता चला जाता है
पढ़ देता है	पढ़ना आता है
पढ़ा करता है	पढ़ जाता है
पढ़ता रहता है	पढ़ने दे सकता है

इसी प्रकार हिन्दी तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं में असंख्य वाक्य ऐसे होते हैं जिनका क्रिया, सहयोगी क्रिया, वाक्यनिर्माणशैली, अव्यय, मुहावरा आदि की विभिन्नता के कारण संस्कृत अनुवाद करने में कठिनाई होती है। वास्तव में इस प्रकार की कठिनाइयों को दूर करने के लिये एक ऐसी अनुवादपरिषद् का गठन होना चाहिये जो इस प्रकार की कठिनाइयों की छानबीन कर उनका कोई समाधान निकाल सके तथा संस्कृत के विद्वानों, छात्रों, लेखकों, अनुवादकों तथा भाषणकर्ताओं के लिये अनुवाद का मार्ग प्रशस्त कर सके।

इसी प्रकार हिन्दी में स्वयं हिन्दी के तथा अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी के जो असंख्य शब्द

दैनिक बोलचाल तथा कामकाज में प्रयुक्त होते हैं उनके लिये भी संस्कृत पर्याय शब्दों के निर्माण की एक विकट समस्या है जिसके समाधान का उत्तरदायित्व संस्कृत की ही संस्थाओं तथा विद्वानों पर है। यदि संस्कृत में पठन-पाठन, दैनिक बोलचाल, हिन्दी ग्रन्थों का संस्कृत अनुवाद, आकाशवाणी में सभी आधुनिक विषयों पर संस्कृतवार्ता, आधुनिक समस्याओं पर नाटक, प्रहसन एवं संभाषण आदि चालू रखना या इस क्रम को सातत्य प्रदान करना है तो संस्कृत व्याकरण के शास्त्रीय पद्धति के स्थान पर व्यवहार को देखकर उसी अनुरूप रुचिकर शैली में प्रस्तुत करना होगा। छोटे-छोटे वाक्यों के निर्माण के लिए अधिकाधिक उदाहरणों के माध्यम से क्रियाओं से सम्बद्ध नियम बोध करना श्रेयष्कर होगा।

अन्त में इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष सहयोग करने वाले संस्थान के समस्त अधिकारी-कर्मचारी जनों के प्रति मेरा साधुवाद जिन्होंने इस कार्य को उ.प्र. संस्कृत संस्थान के माध्यम से जन मानस तक पहुँचाने का कार्य किया।

वि.सं. २०५४ (१९९८ ई.) — वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

विषय सूची

8. यङन्त	(पौनः पुन्यार्थक) भृशार्थक	कर्मवाच्य	चेक्रीयते	बार-बार किया जाता है अधिक किया जाता है
9. यङ्लुगन्त	(पौनः पुन्यार्थक) भृशार्थक	कर्तृवाच्य	चर्करीति	बार-बार करता है अधिक करता है
10. यङ्लुगन्त	(पौनः पुन्यार्थक) भृशार्थक	कर्मवाच्य	चर्क्रीयते	बार-बार किया जाता है अधिक किया जाता है

कृ धातु के साथ तिङ् प्रत्ययों के योग से बने धातुरूपों के उदाहरण

प्रारंभिक ज्ञातव्य विषय

कृ धातु का परिचय

1. कृ धातु का अर्थ "करना" होता है। यह तनादि गण का धातु है अतः इसमें तिङ् प्रत्यक्षों के अतिरिक्त एक विशेष गणप्रत्यय "उ" लगता है। यह धातु उभयपदी है अर्थात् परस्मैपदी भी है और आत्मनेपदी भी है इसलिये इसके करोति और कुरुते आदि दो प्रकार के रूप होते हैं जो आगे के पृष्ठों में अर्थ के साथ लिखे हुए हैं।

तिङन्त रूपों के 10 प्रकार

2. संस्कृत भाषा में व्याकरणानुसार किसी भी धातु के तिङन्त रूप 10 प्रकार के होते हैं। 5 कर्तृवाच्य के और पाँच कर्म या भाववाच्य के। यथा-

1. नवगणी	(सामान्य रूप)	कर्तृवाच्य	करोति	करता है
2. नवगणी	(सामान्य रूप)	कर्मवाच्य	क्रियते	किया जाता है
3. णिजन्त	(प्रेरणार्थक)	कर्तृवाच्य	कारयति	कराता है
4. णिजन्त	(प्रेरणार्थक)	कर्मवाच्य	कार्यते	कराया जाता है
5. सन्नन्त	(इच्छार्थक)	कर्तृवाच्य	चिकीर्षति	करना चाहता है
6. सन्नन्त	(इच्छार्थक)	कर्मवाच्य	चिकीर्षति	करना चाहा जाता है
7. यङन्त	(पौनः पुन्यार्थक) भृशार्थक	कर्तृवाच्य	चेक्रीयते	बार-बार करता है अधिक करता है
8. यङन्त	(पौनः पुन्यार्थक) भृशार्थक	कर्मवाच्य	चेक्रीयते	बार-बार किया जाता है अधिक किया जाता है
9. यङ्लुगन्त	(पौनः पुन्यार्थक) भृशार्थक	कर्तृवाच्य	चर्करीति	बार-बार करता है अधिक करता है
10. यङ्लुगन्त	(पौनः पुन्यार्थक) भृशार्थक	कर्मवाच्य	चर्क्रीयते	बार-बार किया जाता है अधिक किया जाता है

ऊपर के इन दस भेदों में से आदि के चार भेदों के समस्त रूपों का ज्ञान परमावश्यक

है। क्योंकि इनमें से एक के भी बिना पूर्ण रूप से बोलने या लिखने का काम नहीं चल सकता। शेष दो रूप जो सन्नन्त के हैं उनके बिना काम चल सकता है क्योंकि ''चिकीर्षति'' की जगह ''कर्तुम् इच्छति'' कहने का भी विधान है। परन्तु सन्नन्त रूपों का प्रयोग संस्कृत के प्राचीन तथा आधुनिक ग्रन्थों में भी मिलता है। अतः इनके रूपों का भी ज्ञान हो जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त बहुत से सन्नन्त क्रियाओं के कृदन्त रूप--जिज्ञासा-जिज्ञासु, पिपासा-पिपासु, बुभुक्षा-बुभुक्षु, लिप्सा-लिप्सु, मुमूर्षा-मुमूर्षु, शुश्रूषा-शुश्रूषु आदि व्यवहार में प्रचलित हैं अतः इनकी जानकारी के लिये भी सन्नन्त रूपों का परिचय आवश्यक है। इन छः प्रकार के भेदों के अतिरिक्त जो चार भेद और हैं उनका साहित्य तथा व्यवहार में भी अत्यल्प प्रयोग है। फिर भी कुछ यङन्त क्रियाओं से बने हुए कृदन्त रूप--जाज्वल्यमान (अत्यधिक जलता हुआ), देदीप्यमान (अत्यधिक चमकता हुआ), चंक्रम्यमाण (अत्यधिक चलता हुआ) आदि व्यवहार में प्रचलित हैं अतः इस पाँचवें भेद का भी थोड़ा ज्ञान छात्रों को रहना ही चाहिये।

काल, वृत्तियाँ तथा लकार

3. संस्कृत में सात कालभेद तथा तीन वृत्तिभेद हैं तथा इनके लिये दस लकारों का प्रयोग होता है। यथा-

(क) वर्तमान काल का एक ही भेद है (ख) भूतकाल के चार भेद होते हैं--अनद्यतन परोक्षभूत, अनद्यतन भूत, सामान्य भूत तथा हेतुहेतुमद् भूत। (ग) भविष्यत् काल के दो भेद होते हैं--अनद्यतन भविष्यत् तथा सामान्य भविष्यत्। (घ) वृत्तियाँ (मूड) तीन प्रकार की हैं--आज्ञा, विधि एवं आशी। इन दस भेदों के लिये दस लकार होते हैं यथा-लट् लिट् लुट् लृट् लोट्, लङ् लिङ् (विधिलिंङ् तथा आशीर्लिंङ्) लुङ् तथा लृङ्।

संस्कृत के व्याकरण में लकारों का यही क्रम है परन्तु इस पुस्तक में जो छः लकार बोलचाल के लिये अत्यावश्यक हैं उन्हें पहले दिया गया है और जिन चार लकारों का ज्ञान ग्रन्थों के अध्ययन के लिये आवश्यक है वे बाद मे दिये गये हैं। छात्रों को चाहिये कि दैनिक व्यवहार के लिये वे पहले आरंभ के छः लकारों के ही रूप कण्ठस्थ करें और बाद में शेष चार लकारों के रूप भी ग्रन्थों के अध्ययन के लिये कण्ठस्थ कर लें।

तिङ् प्रत्यय

4. जिन तिङ् प्रत्ययों को लगाकर धातुओं के रूप बनाये जाते हैं वे अठारह होते हैं। नौ परस्मैपदी धातुओं के लिये तथा नौ आत्मनेपदी धातुओं के लिये। यथा-

प्र० पु०-तिप् तस् झि, म० पु०-सिप् थस् थ, उ० पु०-मिप् वस् मस् (परस्मैपदी)

प्र0 पु0-त आताम् झ, म0 पु0-थास् थायाम् ध्वम्, उ0 पु0-इड् वहिङ् महिङ् (आत्मनेपदी)

ये तिङ् प्रत्यय केवल लट् लकार के ही रूपों में लगते हैं पर इन्हीं में कुछ परिवर्तन कर अन्य लकारों के भी रूप बनाये जाते हैं। अधिक जानकारी के लिये संस्थानम् द्वारा प्रकाशित "सुगम धातु रूपावली" पुस्तक देखें।

प्रत्येक लकार में प्रथम, मध्यम एवं उत्तम ये तीन पुरुष तथा प्रत्येक पुरुष में एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन ये तीन वचन होने के कारण प्रत्येक लकार के नौ-नौ रूप होते हैं। इस प्रकार दस लकारों के रूपों की संख्या नब्बे हो जाती है पर वैकल्पिक रूपों के कारण इस संख्या में कभी-कभी कुछ वृद्धि भी होती है। आगे के पृष्ठों में कृ धातु के सभी प्रकारों तथा सभी लकारों के रूप दिये जा रहे हैं। इन रूपों में एक कर्ता तथा एक कर्मकारक के पदों को जोड़कर वाक्य बनाने का अभ्यास करना चाहिये।

1. कृ धातु के नवगणी या सामान्य रूप (परस्मैपदी)

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र0	करोति करता है	कुरुत करते हैं	कुर्वन्ति करते हैं
	म0	करोषि करते हो	कुरुथः करते हो	कुरुथ करते हो
	उ0	करोमि करता हूँ	कुर्वः करते हैं	कुर्मः करते हैं
लृट्	प्र0	करिष्यति करेगा	करिष्यतः करेंगे	करिष्यन्ति करेंगे
	म0	करिष्यसि करोगे	करिष्यथः करोगे	करिष्यथ करोगे
	उ0	करिष्यामि करूँगा	करिष्यावः करेंगे	करिष्यामः करेंगे
लोट्	प्र0	करोतु करे	कुरुताम् करें	कुर्वन्तु करें
	म0	कुरु करो	कुरुतम् करो	कुरुत करो
	उ0	करवाणि करू	करवाव करें	करवाम करें
लिङ	प्र0	कुर्यात् करे	कुर्याताम् करें	कुर्युः करें
	म0	कुर्याः करो, करना	कुर्यातम् करो	कुर्यात करो
	उ0	कुर्याम्, करू	कुर्याव करें	कुर्याम करें
लङ्	प्र0	अकरोत् किया	अकुरुताम् किया	अकुर्वन् किया
	म0	अकरोः किया	अकुरुतम् किया	अकुरुत किया
	उ0	अकरवम् किया	अकुर्व किया	अकुर्म किया

लृङ्	प्र0	अकरिष्यत् करता	अकरिष्यताम् करते	अकरिष्यन् करते
	म0	अकरिष्यः करते	अकरिष्यतम् करते	अकरिष्यत करते
	उ0	अकरिष्यम् करता	अकरिष्याव करते	अकरिष्याम करते

ग्रन्थों के अध्ययन के लिये उपयोगी लकार

लिट्	प्र0	चकार	चक्रतुः	चक्रुः	लिट् का प्रयोग परोक्ष अनद्यतन भूतकाल के लिये होता है। इसका अर्थ लङ् के ही समान होता है।
	म0	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	
	उ0	चकार	चकृव	चकृम	
लुङ्	प्र0	अकार्षीत्	अर्कार्ष्टाम	अर्कार्षुः	लुङ् सामान्य भूतकाल के लिये प्रयुक्त होता है। अर्थ लङ् के ही समान होता है।
	म0	अकार्षीः	अर्कार्ष्टम्	अकार्ष्ट	
	उ0	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म	
लुट्	प्र0	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	लुट् का प्रयोग अनद्यतन भविष्यत् काल के लिये होता है।
	म0	कर्तासि	कर्तास्थः	कर्तास्थ	
	उ0	कर्तास्मि	कर्तास्वः	कर्तास्मः	
आशीर्लिङ	प्र0	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः	इसका प्रयोग किसी को आशीर्वाद देने तथा शुभकामना प्रकट करने में किया जाता है।
	म0	क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त	
	उ0	क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म	

2. कृ धातु के नवगणी (सामान्य) रूप (आत्मनेपदी)

(अर्थ परस्मैपदी रूपों के अर्थ के समान होगा)

लट्	प्र0	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
	म0	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
	उ0	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
लृट्	प्र0	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
	म0	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
	उ0	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लोट्	प्र0	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
	म0	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
	उ0	करवै	करवावहै	करवामहै
वि0 लिङ्	प्र0	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
	म0	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
	उ0	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
लृट्	प्र0	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
	म0	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
	उ0	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
लृङ्	प्र0	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यन्त
	म0	अकरिष्यथाः	अकरिष्येथाम्	अकरिष्यध्वम्
	उ0	अकरिष्ये	अकरिष्यावहि	अकरिष्यामहि

ग्रन्थों के अध्ययन के लिये उपयोगी लकार

लिट्	प्र0	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
	म0	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
	उ0	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे
लुङ्	प्र0	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
	म0	अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
	उ0	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि
आ0लिङ्	प्र0	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्
	म0	कृषोष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीढ्वम्
	उ0	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि
लुट्	प्र0	कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तारः
	म0	कर्त्तासे	कर्त्तासाथे	कर्त्ताध्वे
	उ0	कर्त्ताहे	कर्त्तास्वहे	कर्त्तास्महे

३. कृ धातु के णिजन्त (प्रेरणार्थक) रूप (परस्मैपदी)

लट्	प्र0	कारयति	कराता है	कारयतः	कराते हैं	कारयन्ति	कराते हैं
	म0	कारयसि	कराते हो	कारयथः	कराते हो	कारयथ	कराते हो
	उ0	कारयामि	कराता हूँ	कारयावः	कराते हैं	कारयामः	कराते हैं
लृट्	प्र0	कारयिष्यति	करायेगा	कारयिष्यतः	करायेंगे	कारयिष्यन्ति	करायेंगे
	म0	कारयिष्यसि	कराओगे	कारयिष्यथः	कराओगे	कारयिष्यथ	कराओगे
	उ0	कारयिष्यामि	कराऊंगा	कारयिष्यावः	करायेंगे	कारयिष्यामः	करायेंगे
लोट्	प्र0	कारयतु	कराये	कारयताम्	करायें	कारयन्तु	करायें
	म0	कारय	कराओ	कारयतम्	कराओ	कारयत	कराओ
	उ0	कारयानि	कराऊँ	कारयाव	करावें	कारयाम	करावें
लिङ्	प्र0	कारयेत्	करायें	कारयेताम्	करायें	कारयेयुः	करायें
	म0	कारयेः	कराओ	कारयेतम्	कराओ	कारयेत	कराओ
	उ0	कारयेयम्	कराऊँ	कारयेव	करावे	कारयेन	करावें
लङ्	प्र0	अकारयत्	कराया	अकारयताम्	कराये	अकारयन्	कराये
	म0	अकारयः	कराये	अकारयतम्	कराये	अकारयत	कराये
	उ0	अकारयम्	कराया	अकारयाव	कराये	अकारयाम	कराये
लृङ्	प्र0	अकारयिष्यत्	कराता	अकारयिष्यताम्	कराते	अकारयिष्यन्	कराते
	म0	अकारयिष्यः	कराते	अकारयिष्यतम्	कराते	अकारयिष्यत	कराते
	उ0	अकारयिष्यम्	करता	अकारयिष्याव	कराते	अकारयिष्याम	कराते

ग्रन्थों के अध्ययन के लिये उपयोगी लकार

लिट्	प्र0	कारयाञ्चकार	कारयाञ्चक्रतुः	कारयाञ्चक्रुः	इसी प्रकार कारयां-बभूव, तथा कारयामास आदि रूप चलेंगे। अर्थ लङ् के समान होगा।
	म0	कारयाञ्चकर्थ	कारयाञ्चक्रथुः	कायाञ्चक्र	
	उ0	कारयाञ्चकार	कारयाञ्चकृव	कायाञ्चकृमः	
लुङ्	प्र0	अचीकरत्	अचीकरताम्	अचीकरन्	अर्थ लङ् लकार के समान होगा।
	म0	अचीकरः	अचीकरतम्	अचीकरत	
	उ0	अचीकरम्	अचीकराव	अचीकराम	

लुट्	प्र0	कारयिता	कारयितारौ	कारयितारः	अर्थ लुट् लकार के समान होगा।
	म0	कारयितासि	कारयितास्थः	कारयितास्थ	
	उ0	कारयितास्मि	कारयितास्वः	कारयितास्मः	
आशीर्लिङ	प्र0	कार्यात्	कार्यास्ताम्	कार्यासुः	अर्थ लिङ् लकार के समान होगा।
	म0	कार्याः	कार्यास्तम्	कार्यास्त	
	उ0	कार्यासम्	कार्यास्व	कार्यास्म	

4. कृ धातु के णिजन्त (प्रेरणार्थक) रूप (आत्मनेपदी)

(अर्थ परस्मैपदी रूपों के अर्थों के समान होंगे)

लट्	प्र0	कारयते	कारयेते	कारयन्ते
	म0	कारयसे	कारयेथे	कारयध्वे
	उ0	कारये	कारयावहे	कारयामहे
लृट्	प्र0	कारयिष्यते	कारयिष्येते	कारयिष्यन्ते
	म0	कारयिष्यसे	कारयिष्येथे	कारयिष्यध्वे
	उ0	कारयिष्ये	कारयिष्यावहे	कारयिष्यामहे
लोट्	प्र0	कारयताम्	कारयेताम्	कारयन्ताम्
	म0	कारयस्व	कारयेथाम्	कारयध्वम्
	उ0	कारयै	कारयावहै	कारयामहै
वि0 लिङ्	प्र0	कारयेत	कारयेयाताम्	कारयेरन्
	म0	कारयेथाः	कारयेयाथाम्	कारयेध्वम्
	उ0	कारयेय	कारयेवहि	कारयेमहि
लंङ्	प्र0	अकारयत	अकारयेताम्	अकारयन्त
	म0	अकारयथाः	अकारयेथाम्	अकारयध्वम्
	उ0	अकारये	अकारयावहि	अकारयामहि
लृङ्	प्र0	अकारयिष्यत	अकारयिष्येताम्	अकारयिष्यन्त
	म0	अकारयिष्यथाः	अकारयिष्येथाम्	अकारयिष्यध्वम्
	उ0	अकारयिष्ये	अकारयिष्यावहि	अकारयिष्यामहि

ग्रन्थों के अध्ययन के लिये उपयोगी लकार

लिट्	प्र0	कारयाञ्चक्रे	कारयाञ्चक्राते	कारयाञ्चक्रिरे
	म0	कारयाञ्चकृषे	कारयाञ्चक्राथे	कारयाञ्चकृढ्वे
	उ0	कारयाञ्चक्रे	कारयाञ्चकृवहे	कारयाञ्चकृमहे
लुङ्	प्र0	अचीकरत	अचीकरेताम्	अचीकरन्त
	म0	अचीकरथाः	अचीकरेथाम्	अचीकरध्वम्
	उ0	अचीकरे	अचीकरावहि	अचीकरामहि
लुट्	प्र0	कारयिता	कारयितारौ	कारयितारः
	म0	कारयितासे	कारयितासाथे	कारयिताध्वे
	उ0	कारयिताहे	कारयितास्वहे	कारयितास्महे
आ0 लिङ्	प्र0	कारयिषीष्ट	कारयिषीयास्ताम्	कारयिषीरन्
	म0	कारयिषीष्ठाः	कारयिषीयास्थाम्	कारयिषीढ्वम्-ध्वम्
	उ0	कारयिषीयि	कारयिषीष्वहि	कारयिषीष्महि

5. कृ धातु के नवगणी (सामान्य) रूपों के कर्मवाच्य के रूप

लट्	क्रियते-किया जाता है	क्रियते-किये जाते हैं	क्रियन्ते-किये जाते हैं
	क्रियसे-किये जाते हो	क्रियथे-किये जाते हो	क्रियध्वे-किये जाते हो
	क्रिये-किया जाता हूँ	क्रियावहे-किये जाते हैं	क्रियामहे-किये जाते हैं
लृट्	करिष्यते-किया जायेगा	करिष्येते-किये जायेंगे	करिष्यन्ते-किये जायेंगे
	करिष्यसे-किये जाओगे	करिष्येथे-किये जाओगे	करिष्यध्वे-किये जाओगे
	करिष्यये-किया जाऊँगा	करिष्यावहे-किये जायेंगे	करिष्यामहे-किये जायेंगे
लोट्	क्रियताम्-किया जाय	क्रियेताम्-किये जायँ	क्रियन्ताम-किये जायँ
	क्रियस्व-किये जाओ	क्रियेथाम्-किये जाओ	क्रियध्वम्-किये जाओ
	क्रियै-किया जाऊँ	क्रियावहै-किये जायें	क्रियामहे-किये जायें
वि0 लिङ्	क्रियेत-किया जाय	क्रियाताम्-किये जाओ	क्रियेरन्-किये जायें
	क्रियेथाः-किये जाओ	क्रियेयाथाम्-किये जाओ	क्रियेध्वम्-किये जाओ
	क्रियेय-किया जाऊँ	क्रियेवहि-किये जायें	क्रियेमहि-किये जायें

लङ्	अक्रियन-किया गया	अक्रियेताम्-किये गये	अक्रियन्त-किये गये
	अक्रियथाः-किये गये	अक्रियेथाम्-किये गये	अक्रियध्वम्-किये गये
	अक्रिये-किया गया	अक्रियावहि-किये गये	अक्रियामहि-किये गये हैं
लृङ्	अकरिष्यत-किया जाता	अकरिष्येताम्-किये जाते	अकरिष्यन्त-किये जाते
	अकरिष्यथाः-किये जाते	अकरिष्येथाम्-किये जाते	अकरिष्यध्वम्-किये जाते
	अकरिष्ये-किया जाता	अकरिष्यावहि-किये जाते	अकरिष्यामहि-किये जाते

ग्रन्थों के अध्ययन के लिये उपयोगी लकार

लिट्	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे	अर्थ लङ् लकार के
	चकृषे	चक्राथे	चकृद्वे	समान होगा।
	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे	
लुङ्	अकारि	अकारिषाताम्	अकारिषत	अर्थ लङ् लकार
	अकारिथाः	अकारिषाथाम्	अकारिध्वम्	के समान होगा।
	अकारिषि	अकारिष्वहि	अकारिष्महि	
लुट्	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	अर्थ लृट लकार
	कर्तासे	कर्तासाथे	कर्ताध्वे	के समान होगा।
	कर्ताहे	कर्तास्वहे	कर्तास्महे	
आ0 लिङ्	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्	अर्थ लिङ् लकार
	कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीढ्वम्	के समान होगा।
	कृषीय	कृषीवहि	कृषिमहि	

6. कृधातु के णिजन्त (प्रेरणार्थक) रूपों के कर्मवाच्य के रूप

लट्	प्र0 कार्यते कराया जाता है	कार्येते कराये जाते हैं	कार्यन्ते कराये जाते हैं
	म0 कार्यसे कराये जाते हो	कार्येथे कराये जाते हो	कार्यध्वे कराये जाते हो
	उ0 कार्ये कराया जाता हूँ	कार्यावहे कराते जाते हैं	कार्यामहे कराये जाते हैं
लृट्	प्र0 कारयिष्यते कराया जायेगा	कारयिष्येते कराये जायेंगे	कारयिष्यन्ते -
	म0 कारयिष्यसे कराये जाओगे	कारयिष्येथे कराये	कारयिष्यध्वे -
	उ0 कारयिष्ये कराया जाऊँगा	कारयिष्यावहे कराये जायेंगे	कारयिष्यामहे कराये जायेंगे

लोट्	प्र0 कार्यताम् कराया जाय	कार्येताम् कराये जायँ	कार्यन्ताम् कराये जायँ
	म0 कार्यस्व कराये जाओ	कार्येथाम् कराये जाओ	कार्यध्वम् कराये जाओ
	उ0 कार्ये कराया जाऊँ	कार्यावहे कराये जायँ	कार्यामहे कराये जायँ
लिङ्	प्र0 कार्येत कराया जाय	कार्येयाताम् कराये जायँ	कार्येरन् कराये जायँ
	म0 कार्येथाः कराये जाओ	कार्येयाथाम् कराये जाओ	कार्येध्वम् कराये जाओ
	उ0 कार्येय कराया जाऊँ	कार्येवहि कराये जायँ	कार्येमहि कराये जायँ
लङ्	प्र0 अकार्यत कराया गया	अकार्येताम् कराये गये	अकार्यन्त कराये गये
	म0 अकार्यथाः कराये गये	अकार्येथाम् कराये गये	अकार्यध्वम् कराये गये
	उ0 अकार्ये कराया गया	अकार्यावहि कराये गये	अकार्यामहि कराये गये
लृङ्	प्र0 अकारयिष्यत कराया जाता	अकारयिष्येताम् कराये जाते	अकारयिष्यन्त कराये जाते
	म0 अकारयिष्यथाः कराये जाते	अकारयिष्येथाम् -	अकारयिष्यध्वम् -
	उ0 अकारयिष्ये कराया जाता	अकारयिष्यावाहि जाते	अकारयिष्यामहि जाते

ग्रन्थों के अध्ययन के लिये उपयोगी लकार

लिट्	प्र0 कारयाञ्चक्रे	कारयाञ्चक्राते	कारयाञ्चक्रिरे	इसी प्रकार कारयांबभूवे, तथा कारयामासे, आदि रूप चलेंगे। अर्थ लङ् के समान।
	म0 कारयाञ्चकृषे	कारयाञ्चक्राथे	कारयाञ्चकृढ्वे	
	उ0 कारयाञ्चक्रे	कारयाञ्चकृवहे	कारयाञ्चकृमहे	
लुङ्	प्र0 अकारि	अकारिषाताम्	अकारिषत	अर्थ लङ् लकार के समान होगा।
	म0 अकारिथाः	अकारिषाथाम्	अकारिध्वम्	
	उ0 अकारिषि	अकारिष्वहि	अकारिष्वमहि	
लुट्	प्र0 कारिता	कारितावै	कारितारः	अर्थ लृट् लकार के समान होगा।
	म0 कारितासे	कारितासाथे	कारिताध्वे	
	उ0 कारिताहे	कारितास्वहे	कारितास्महे	
आशीर्लिङ्	प्र0 कारिषीष्ट	कारिषीयास्ताम्	कारिषीरन्	अर्थ लिङ् लकार के समान होगा।
	म0 कारिषीष्ठाः	कारिषीयास्थाम्	कारिषीध्वम्	
	उ0 कारिषीय	कारिषीवहि	कारिषीमहि	

7. कृ धातु के सन्नन्त (इच्छार्थक) रूप (कर्तृवाच्य)

लट्	प्र0	चिकीर्षति करना चाहता है	चिकीर्षतः करना चाहते हैं	चिकीर्षन्ति
	म0	चिकीर्षसि करना चाहते हो	चिकीर्षथः करना चाहते हो	चिकीर्षथ
	उ0	चिकीर्षामि करना चाहता हूँ	चिकीर्षावः करना चाहते है	चिकीर्षामः
लृट्	प्र0	चिकीर्षिष्यति करना चाहेगा	चिकीर्षिष्यतः करना चाहेंगे	चिकीर्षिष्यन्ति
	म0	चिकीर्षिष्यसि करना चाहोगे	चिकीर्षिष्यथः करना चाहोगे	चिकीर्षिष्यथ
	उ0	चिकीर्षिष्यामि करना चाहूँगा	चिकीर्षिष्यावः करना चाहेंगे	चिकीर्षिष्यामः
लोट्	प्र0	चिकीर्षतु करना चाहे	चिकीर्षताम् करना चाहें	चिकीर्षन्तु
	म0	चिकीर्ष करना चाहो	चिकीर्षतम् करना चाहो	चिकीर्षत
	उ0	चिकीर्षाणि करना चाहूँ	चिकीर्षाव करना चाहें	चिकीर्षाम
लिङ्	प्र0	चिकीर्षेत् करना चाहे	चिकीर्षेताम् करना चाहें	चिकीर्षेयुः
	म0	चिकीर्षेः करना चाहो	चिकीर्षेतम् करना चाहें	चिकीर्षेत
	उ0	चिकीर्षेयम् करना चाहूँ	चिकीर्षेव करना चाहें	चिकीर्षेम
लङ्	प्र0	अचिकीर्षेत् करना चाहा	अचिकीर्षेताम् करना चाहें	अचिकीर्षन्
	म0	अचिकीर्षः करना चाहा	अचिकीर्षतम् करना चाहे	अचिकीर्षत
	उ0	अचिकीर्षम् करना चाहा	अचिकीर्षाव करना चाहे	अचिकीर्षाम
लृङ्	प्र0	अचिकीर्षिष्तः करना चाहता	अचिकीपिष्यताताम् चाहते	अचिकीर्षियन्
	म0	अचिकीर्षिष्यः करना चाहते	अचिकीर्षिष्यतम् -	अचिकीर्षिष्यत
	उ0	अचिकीर्षिष्यम् करना चाहता	अचिकीर्षिष्याव चाहते	अचिकीर्षिष्याम

ग्रन्थों के अध्ययन के लिये उपयोगी लकार

लिट्	प्र0 चिचिकीर्ष	चिचिकीर्षतुः	चिचिकीर्षुः	अर्थ लङ् लकार के समान होगा।
	म0 चिचिकीर्षथ	चिचिकीर्षयुः	चिचिकीर्ष	
	उ0 चिचिकीर्ष	चिचिकीर्षिव	चिचिकीर्षिम	
लुङ्	प्र0 अचिकीर्षत्	अचिकीर्षताम्	अचिकीर्षन्	अर्थ लङ् लकार के समान होगा।
	म0 अचिकीर्षः	अचिकीर्षतम्	अचिकीर्षत	
	उ0 अचिकीर्षम्	अचिकीर्षिव	अचकीर्षिम	

लुट्	प्र0	चिकीर्षिता	चिकीर्षितारौ	चिकीर्षितारः	अर्थ लृट् लकार के समान होगा।
	म0	चिकीर्षितासि	चिकीर्षितास्थः	चिकीर्षितास्थ	
	उ0	चिकीर्षितास्मि	चिकीर्षितास्वः	चिकीर्षितास्मः	
आशीर्लिङ्	प्र0	चिकीर्ष्यात्	चिकीर्ष्यास्ताम्	चिकीर्ष्यासुः	अर्थ लिङ् लकार के समान होगा।
	म0	चिकीर्ष्याः	चिकीर्ष्यास्तम्	चिकीर्ष्यास्त	
	उ0	चिकीर्ष्यासम्	चिकीर्ष्यास्व	चिकीर्ष्यास्म	

8. कृ धातु के सन्नन्त (इच्छार्थक) रूप (कर्मवाच्य)

(अर्थ-करना चाहा जाता है, करना चाहा जायगा, करना चाहा गया, करना चाहा जाय करना चाहा जाता आदि)

लट्	प्र0	चिकीर्ष्यते	चिकीर्ष्येते	चिकीर्ष्यन्ते
	म0	चिकीर्ष्यसे	चिकीर्ष्येथे	चिकीर्ष्यध्वे
	उ0	चिकीर्ष्ये	चिकीर्ष्यावहे	चिकीर्ष्यामहे
लृट्	प्र0	चिकीर्षिष्यते	चिकीर्षिष्येते	चिकीर्षिष्यन्ते
	म0	चिकीर्षिष्यसे	चिकीर्षिष्येथे	चिकीर्षिष्यध्वे
	उ0	चिकीर्षिष्ये	चिकीर्षिष्यावहे	चिकीर्षिष्यामहे
लोट्	प्र0	चिकीर्ष्यताम्	चिकीर्ष्येताम्	चिकीर्ष्यन्ताम्
	म0	चिकीर्ष्यस्व	चिकीर्ष्येथाम्	चिकीर्ष्यध्वम्
	उ0	चिकीर्ष्ये	चिकीर्ष्यावहे	चिकीर्ष्यमिहे
लिङ्	प्र0	चिकीर्ष्येत	चिकीर्ष्येयाताम्	चिकीर्ष्येरन्
	म0	चिकीर्ष्येथाः	चिकीर्ष्येयाथाम्	चिकीर्ष्येध्वम्
	उ0	चिकीर्ष्येय	चिकीर्ष्येवहि	चिकीर्ष्येमहि
लङ्	प्र0	अचिकीर्ष्यत	अचिकीर्ष्येताम्	अचिकीर्ष्यन्त
	म0	अचिकीर्ष्यथाः	अचिकीर्ष्येथाम्	अचिकीर्षिध्वम्
	उ0	अचिकीर्ष्ये	अचिकीर्ष्यावहि	अचिकीर्ष्यामहि
लृङ्	प्र0	अचिकीर्षिष्यत	अचिकीर्षिष्येताम्	अचिकीर्षिष्यन्त
	म0	अचिकीर्षिष्यथाः	अचिकीर्षिष्येथाम्	अचिकीर्षिष्यध्वम्
	उ0	अचिकीर्षिष्ये	अचिकीर्षिष्यावहि	अचकीर्षिष्यामहि

ग्रन्थों के अध्ययन के लिये उपयोगी लकार

लिट्	प्र0	चिकीर्षाञ्चक्रे	चिकीर्षाञ्चक्राते	चिकीर्षाञ्चक्रिरे
लुङ्	प्र0	अचिकीर्षि	अचिकीर्षिषताम्	अचिकीर्षिषत
	म0	अचिकीर्षिष्ठाः	अचिकीर्षिषाथाम्	अचिकीर्षिढ्वम्
	उ0	अचिकीर्षिषि	अचिकीर्षिष्वहि	अचिकीर्षिष्महि
लुट्	प्र0	चिकीर्षिता	चिकीर्षितारौ	चिकीर्षितारः
	म0	चिकीर्षितासे	चिकिर्षितासाथे	चिकीर्षिताध्वे
	उ0	चिकीर्षिताहे	चिकीर्षितास्वहे	चिकीर्षितास्महे
आ0लिङ्	प्र0	चिकीर्षिषीष्ट	चिकीर्षिषीयास्ताम्	चिकीर्षिषीरन्
	म0	चिकीर्षिषीष्ठाः	चिकीर्षिषीयास्थाम्	चिकीर्षिषीढ्वम्
	उ0	चिकीर्षिषीय	चिकीर्षिषीवहि	चिकीर्षिषीमहि

9. कृ धातु के यङन्त (पौनःपुन्यार्थक, भृशार्थक) रूप

(कर्तृवाच्य)

लट्	प्र0 चेक्रीयते	चेक्रोयेते	चेक्रयन्ते	अर्थ-बार बार या अधिक करता है।
	म0 चेक्रीयसे	चेक्रीयेथे	चेक्रीयध्वे	
	उ0 चेक्रीये	चेक्रीयावहे	चेक्रीयामहे	

अन्य लकारों में इसके रूप-चेक्रीयिष्यते (लृट्), चेक्रीयताम् (लोट्), चेक्रीयेत (लिङ्) अचेक्रीयत (लङ्), अचेक्रीयिष्यत (लृङ्), चेक्रीयञ्चक्रे (लिट्), अचेक्रीयिष्ट (लुङ्) चेक्रीयिता (लुट्) चेक्रीयिष्ट (आशीर्लिङ्)

कर्मवाच्य के रूप

लट्	प्र0 चेक्रीय्यते	चेक्रीय्येते	चेक्रीय्यन्ते	अर्थ- बार-बार या अधिक किया जाता है।
	म0 चेक्रीय्यसे	चेक्रीय्येथे	चेक्रीय्यध्वे	
	चेक्रीय्ये	चेक्रीय्यावहे	चेक्रीय्यामहे	

अन्य लकारों में इसके रूप- चेक्रय्यिष्यते, चेक्रीय्यताम्, चेक्रीय्येत, अचेक्रीय्यिष्यत, चेक्रीय्याञ्चक्रे, अचेक्रीयिष्ट, चेक्रीय्यिता, चेक्रीय्यिषीष्ट, आदि होंगे।

10. कृ धातु के यङ्लुगन्त (पौनःपुन्यार्थक, भृशार्थक) रूप

(कर्तृवाच्य)

लट्	प्र0 चर्करीति, चर्कर्त्ति	चर्कृतः	चर्क्रति
	म0 चर्करीषि, चर्कर्षि	चर्कृथः	चर्कृथ
	उ0 चर्करीमि, चर्कर्मि	चर्कृवः	चर्कृमः
	प्र0 चरिकरीति, चरिकर्त्ति	चरिकृतः	चरिक्रति
	म0 चरिकरीषि, चरिवर्षि	चरिकृथः	चरिकृथ
	उ0 चरिकरीमि, चरिकर्मि	चरिकृवः	चरिकृमः
	प्र0 चरीकरीति, चरीकर्त्ति	चरीकृतः	चरीक्रति
	म0 चरीकरीषि, चरिकर्षि	चरीकृथः	चरीकृथ
	उ0 चीरकरीमि, चीरकर्मि	चरीकृवः	चरीकृमः

कर्मवाच्य के रूप

लट्	चर्क्रीयते	चक्रीयेत	चक्रीयन्ते
	चर्क्रीयसे	चक्रीयेथे	चक्रीयध्वे
	चर्क्रीये	चक्रीयावहे	चर्क्रीयामहे

अर्थ- बार बार या अधिक किया जाता है।

अनावश्यक समझ कर यङन्त तथा यङ्लुगन्त के अन्य रूप नहीं दिये जा रहे हैं।

कृ धातु के कृत्प्रत्ययान्त शब्दों में असू एवं भू धातु के योग से बने क्रियारूपों के उदाहरण

कतिपय सर्वप्रथम ज्ञातव्य विषय

1. कृ धातु के साथ तिङ् प्रत्ययों के योग से जितने प्रकार के रूप होते हैं उनका पहले के पृष्ठों में अर्थ के साथ उल्लेख किया गया है। अब इस द्वितीय प्रकरण में उन क्रियारूपों का उल्लेख किया जा रहा है जो कृ धातु में शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु, स्यतृ, स्यमान तथा तव्यत् अनीपर आदि विभिन्न कृ प्रत्ययों को लगा कर बने हुए शब्दों से, अस् एवं भू धातु के योग से, बनाये जाते हैं। इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य इन्हीं क्रियारूपों को दिखाना है। ये क्रियारूप आवश्यक समझ कर पाँच लकारों में ही दिये गये हैं। छात्रगण इसी प्रकार अन्य व्यवहारोपयोगी आवश्यक धातुओं के भी कृतप्रत्ययान्त रूपों के साथ अस् एवं भृ धातु के पाँच लकारों के रूपों को लगा कर वाक्य बनाने का अभ्यास करें। अन्य व्यवहारोपयोगी धातुओं के कृतप्रत्ययान्त रूप तथा उनका अर्थ जानने के लिए छात्रों को संस्थानम् द्वारा प्रकाशित "सुगम धातुरूपावलि" पुस्तक को पहले पढ़ लेना चाहिये।

2. इस प्रकरण के क्रियारूपों में प्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम के स्थान पर "सः तौ ते" यह केवल तत् शब्द के, पुलिङ्ग के ही रूप दिये गये हैं। छात्रों को इनके स्त्रीलिङ्ग रूप "सा ते ताः" तथा नपुंसक लिङ्ग के रूप "तत् ते तानि" का भी प्रयोग करना चाहिये। इसी प्रकार तत् शब्द के अतिरिक्त और भी जितने प्रथमपुरुषवाचक सर्वनाम शब्द हैं उनके भी तीनों लिङ्गों के रूपों को कण्ठस्थ कर उनका प्रयोग करना चाहिये।

3. वाक्यों में जो कृत्प्रत्ययान्त शब्दों के रूप दिये गये हैं वे केवल पुलिङ्ग के ही हैं। यथा- कुर्वन् कुर्वन्तो कुर्वन्तः इत्यादि। छात्रों को इनके भी स्त्रीलिङ्ग-रूप "कुर्वती कुर्वत्यो कुर्वत्यः" तथा नपुंसक लिङ्ग के रूप" कुर्वत् कुर्वती कुर्वन्ति" कण्ठस्थ कर लेने चाहिये तथा सर्वनाम शब्दों के अनुसार ही इनका प्रयोग करना चाहिये। यथा- सः कुर्वन् अस्ति, सा कुर्वती अस्ति, तत् कुर्वत् अस्ति। कुर्वती और कुर्वत् के शेष रूप नदी तथा जगत् शब्द के समान चलेंगे। यह बात आगे भी स्पष्ट की गई है।

4. आगे के सभी लकारों के सभी वाक्यों में कर्म के स्थान पर केवल "कार्य" यही एकवचनान्त एक पद दिया गया है परन्तु छात्रों को इसके "कार्ये कार्याणि" इन द्विवचन तथा बहुवचन के भी रूपों का प्रयोग करना चाहिये। इसके अतिरिक्त प्रत्येक वाक्य में कार्य शब्द को बदल कर इसके स्थान में अन्य क्रियावाचक संज्ञाशब्दों का भी प्रयोग करना चाहिये। यथा- पठन, पाठन, लेखन, भ्रमण, शयन, भोजन, विश्राम आदि।

5. इस प्रकरण में कृत्यप्रत्यान्त शब्दों के साथ अस् एवं भू धातु के रूपों को लगाकर जितने प्रकार के क्रियारूप दिये गये हैं उनका प्रयोग संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। इस पुस्तक के अन्त में ऐसे प्रयोगों के भी बहुत से उदाहरण, विविध

ग्रन्थों के संकलन के रूप में, दे दिये गये हैं जिससे कि छात्रों एवं विद्वानों को भी ऐसे वाक्यों का प्रयोग करने में कोई सन्देह या कठिनाई न हो। क्योंकि बहुत से विद्वानों एवं अध्यापकों को इस प्रकार के नये तथा अप्रचलित प्रयोग अटपटे-से लगते हैं।

6. इस प्रकरण में जितने वाक्य दिये गये हैं उनमें केवल तीन पद हैं- एक कर्ता, एक कर्म एवं एक क्रिया। इन वाक्यों में किम् (क्या) कुत्र (कहाँ) कदा (कब) कथं (कैसे) किमर्यम् (किसलिये) आदि प्रश्नवाचक अव्ययों को लगाकर छात्रों को इन्हें प्रश्नवाचक तथा न नहि लगाकर निषेधावाचक वाक्य बनाना चाहिए।

कृ धातु में कृत्य एवं कृत्प्रत्यय लगाकर बनाये हुए सामान्य तथा प्रेरणार्थक रूप

विध्यर्थक कृत्य प्रत्यय-

तव्यत्	कर्तव्य-करना चाहिये, कराने योग्य (कर्मवाच्य)			
	कारयितव्य-कराना चाहिये, करने योग्य (कर्मवाच्य)			
अनीयर्	करणीय	”	”	”
	कारणीय	”	”	”
ण्यत्	कार्य	”	”	”

वर्तमानकालिक कृत् प्रत्यय-

शतृ	कुर्वत्-करता हुआ, कर रहा (कर्तृवाच्य)			
	चिकीर्षत्-(सन्नत) करना चाहता हुआ			
	कारयत्-कराता हुआ, करा रहा (कर्तृवाच्य)			
शानच्	कुर्वाण-	”	”	”
	कारयमाण-	”	”	”
	क्रियमाण-किया जा रहा, कार्यमाण कराया जा रहा (कर्तृवाच्य)			

भविष्यत्कालिक कृत् प्रत्यय-

स्यतृ	करिष्यत्-करने वाला (कर्तृवाच्य)
	कारयिष्यत्-कराने वाला (कर्तृवाच्य)
तृच् कर्तृ	करने वाला, प्रेरणा० कारयितृ-कराने वाला

स्यमान करिष्यमाण-करने वाला, (कर्तृ0) किया जाने वाला (कर्म0) कारयिष्यमाण-कराया जाने वाला (कर्मवाच्य)

भूतकालिक कृत् प्रत्यय-

क्त कृत-किया हुआ, किया गया (कर्मवाच्य)

कारित-कराया हुआ, कराया गया (कर्मवाच्य)

क्तवतु कृतवत्-किया, किया हुआ (कर्त्तृवाच्य)

कारितवत्-कराया, कराया हुआ (कर्त्तृवाच्य)

निमित्तार्थक कृत् प्रत्यय-

तुमुन् कर्तुम्-कर, करना, करने (अव्यय)

कारयितुम्-करा, कराना, कराने (अव्यय)

वर्तमानकालिक शतृ प्रत्ययान्त "कुर्वत्" शब्द से बने

कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् अस्ति	वह काम कर रहा है
तौ	" कुर्वन्तौ स्तः	वे दोनों काम कर रहे हैं
ते	" कुर्वतन्तः सन्ति	वे सब काम कर रहे हैं
त्वं	" कुर्वन् असि	तुम काम कर रहे हो
युवां	" कुर्वन्तौ स्थः	तुम दोनों काम कर रहे हो
यूयं	" कुर्वन्तः स्य	तुम सब काम कर रहे हो
अहं	" कुर्वन् अस्मि	मैं काम कर रहा हूँ
आवां	" कुर्वन्तौ स्वः	हम दोनों काम कर रहे हैं
वयं	" कुर्वन्तः स्म	हम सब काम कर रहे हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् आसीत्	वह काम कर रहा था
तौ	" कुर्वन्तौ आस्ताम्	वे दोनों काम कर रहे थे

ते	" कुर्वन्तः आसन्	वे सब काम कर रहे थे
त्वं	" कुर्वन् आसीः	तुम काम कर रहे थे
युवां	" कुर्वन्तो आस्तम्	तुम दोनों काम कर रहे थे
यूयं	" कुर्वन्तः आस्त	तुम सब काम कर रहे थे
अहं	" कुर्वन् आसम्	मैं काम कर रहा था
आवां	" कुर्वन्तौ आस्व	हम दोनों काम कर रहे थे
वयं	" कुर्वन्तः आस्म	हम सब काम कर रहे थे

लिङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् स्यात्	वह काम कर रहा हो
तौ	" कुर्वन्तौ स्याताम्	वे दोनों काम कर रहे हों
ते	" कुर्वन्तः स्युः	वे सब काम कर रहे हों
त्वं	" कुर्वन् स्याः	तुम काम कर रहे होवो
युवां	" कुर्वन्तो स्यातम्	तुम दोनों काम कर रहे होवो
यूयं	" कुर्वन्तः स्यात	तुम सब काम कर रहे होवो
अहं	" कुर्वन् स्याम्	मैं काम कर रहा होऊँ
आवां	" कुर्वन्तौ स्याव	हम दोनों काम कर रहे होवें
वयं	" कुर्वन्तः स्याम	हम सब काम कर रहे होवें

टिप्पणी- अस् एवं भू धातु के स्थान पर अस्, स्था तथा वृतु धातु के रूपों का भी प्रयोग होता है।

लृट् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् भविष्यति	वह काम कर रहा होगा
तौ	" कुर्वन्तौ भविष्यतः	वे दोनों काम कर रहे होंगे
ते	" कुर्वन्तः भविष्यन्ति	वे सब काम कर रहे होंगे
त्वं	" कुर्वन् भविष्यसि	तुम काम कर रहे होगे
युवां	" कुर्वन्तो भविष्यथः	तुम दोनों काम कर रहे होगे
यूयं	" कुर्वन्तः भविष्यथ	तुम सब काम कर रहे होगे

अहं	" कुर्वन् भविष्यामि	मैं काम कर रहा हूँगा
आवां	" कुर्वन्तौ भविष्यावः	हम दोनों काम कर रहे होंगे
वयं	" कुर्वन्तः भविष्यामः	हम सब काम कर रहे होंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् अभविष्यत्	वह काम कर रहा होता
तौ	" कुर्वन्तौ अभविष्यताम्	वे दोनों काम कर रहे होते
ते	" कुर्वन्तः अभविष्यन्	वे सब काम कर रहे होते
त्वं	" कुर्वन् अभविष्यः	तुम काम कर रहे होते
युवां	" कुर्वन्तो अभविष्यतम्	तुम दोनों काम कर रहे होते
यूयं	" कुर्वन्तः अभविष्यत	तुम सब काम कर रहे होते
अहं	" कुर्वन् अभविष्यम्	मैं काम कर रहा होता
आवां	" कुर्वन्तौ अभविष्याव	हम दोनों काम कर रहे होते
वयं	" कुर्वन्तः अभविष्याम	हम सब काम कर रहे होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. कुर्वत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप "कुर्वती कुर्वत्यौ कुर्वत्यः" आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसकलिङ्ग के रूप "कुर्वत् कुर्वती कुर्वन्ति" आदि जगत् शब्द के समान चलेंगे।

2. कुर्वत् शब्द के समान ही पठत् लिखत् गच्छत् तिष्ठत् आदि शब्दों के भी रूप चलेंगे तथा इनके साथ भी वाक्य बनाने का अभ्यास करना चाहिये।

3. कृ धातु आत्मनेपदी भी है अतः इससे शतृ के स्थान पर शानच् प्रत्यय भी होता है जिससे "कुर्वाण" शब्द बनता है। इस शब्द के पुंलिङ्ग रूप "कुर्वाणः कुर्वाणौ कुर्वाणाः" आदि बालक शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग रूप "कुर्वाणा कुर्वाणे कुर्वाणाः" आदि विद्या शब्द के समान तथा नपुंसक लिङ्ग के रूप "कुर्वाणं कुर्वाणे कुर्वाणानि" आदि ज्ञान शब्द के समान चलेंगे। इसी प्रकार यङन्त चेक्रीयमाण, जाज्वल्यमान, वेदीप्यमान आदि शब्दों के भी रूप होंगे।

4. कुर्वाण शब्द के समान ही शयान (सोता हुआ) जायमान (होता हुआ) अधीयान (पढ़ता हुआ) वर्द्धमान (बढ़ता हुआ) आदि शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप चलेंगे।

5. कर्मवाच्य में तेन कार्यं क्रियमाणम् अस्ति, आसीत्, स्यात्, भविष्यति, अभविष्यत् आदि रूप होंगे।

2. कुर्वत् शब्द के साथ भू धातु के योग से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् भवति	वह काम करता रहता है
तौ	" कुर्वन्तौ भवतः	वे काम करते रहते हैं
ते	" कुर्वन्तः भवन्ति	वे सब काम करते रहते हैं
त्वं	" कुर्वन् भवसि	तुम काम करते रहते हो
युवां	" कुर्वन्तो भवथः	तुम दोनों काम करते रहते हो
यूयं	" कुर्वन्तः भवथ	तुम लोग काम करते रहते हो
अहं	" कुर्वन् भवामि	मैं काम करता रहता हूँ
आवां	" कुर्वन्तौ भवावः	हम दोनों काम करते रहते हैं
वयं	" कुर्वन्तः भवामः	हम लोग काम करते रहते हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् अभवत	वह काम करता रहा
तौ	" कुर्वन्तौ अभवताम्	वे दोनों काम करते रहे
ते	" कुर्वन्तः अभवन्	वे लोग काम करते रहे
त्वं	" कुर्वन् अभवः	तुम काम करते रहे
युवां	" कुर्वन्तो अभवतम्	तुम दोनों काम करते रहे
यूयं	" कुर्वन्तः अभवत	तुम लोग काम करते रहे
अहं	" कुर्वन् अभवम्	मैं काम करता रहा
आवां	" कुर्वन्तौ अभवाव	हम दोनों काम करते रहे
वयं	" कुर्वन्तः अभवाम	हम लोग काम करते रहे

लिङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् भवेत्	वह काम करता रहे
तौ	" कुर्वन्तौ भवेताम्	वे दोनों काम करते रहें

ते	" कुर्वन्तः भवेयुः	वे सब काम करते रहें
त्वं	" कुर्वन् भवेः	तुम काम करते रहे
युवां	" कुर्वन्तौ भवेतम्	तुम दोनों काम करते रहे
यूयं	" कुर्वन्तः भवेत	तुम लोग काम करते रहे
अहं	" कुर्वन् भवेयम्	मैं काम करता रहा
आवां	" कुर्वन्तौ भवेव	हम दोनों काम करते रहे
वयं	" कुर्वन्तः भवेम	हम लोग काम करते रहें

लृट् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् भविष्यति	वह काम करता रहेगा
तौ	" कुर्वन्तौ भविष्यतः	वे दोनों काम करते रहेंगे
ते	" कुर्वन्तः भविष्यन्ति	वे लोग काम करते रहेंगे
त्वं	" कुर्वन् भविष्यसि	तुम काम करते रहोगे
युवां	" कुर्वन्तो भविष्यथः	तुम दोनों काम करते रहोगे
यूयं	" कुर्वन्तः भविष्यथ	तुम लोग काम करते रहोगे
अहं	" कुर्वन् भविष्यामि	मैं काम करता हूँगा
आवां	" कुर्वन्तौ भविष्यावः	हम दोनों काम करते रहेंगे
वयं	" कुर्वन्तः भविष्यामः	हम लोग काम करते रहेंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कुर्वन् अभविष्यत्	वह काम करता रहता
तौ	" कुर्वन्तौ अभविष्यताम्	वे दोनों काम करते रहते
ते	" कुर्वन्तः अभविष्यन्	वे लोग काम करते रहते
त्वं	" कुर्वन् अभविष्यः	तुम काम करते रहते
युवां	" कुर्वन्तो अभविष्यतम्	तुम दोनों काम करते रहते
यूयं	" कुर्वन्तः अभविष्यत	तुम लोग काम करते रहते
अहं	" कुर्वन् अभविष्यम्	मैं काम करता रहता

आवां	'' कुर्वन्तौ अभविष्याव	हम दोनों काम करते रहते
वयं	'' कुर्वन्तः अभविष्याम	हम लोग काम करते रहते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. इसके पूर्व अस् धातु के साथ पाँचों लकारों के वाक्य बनाने के बाद जो टिप्पणियाँ दी गई हैं वे सब यहाँ भी लागू होगीं।

2. कर्मवाच्य में ''तेन कार्यं क्रियमाणं भवति'' आदि पूर्ववत् रूप होंगे।

3. पूर्व सूचना के अनुसार भू धातु के समान ही स्था, आस्, तथा वृतु धातु का भी प्रयोग किया जाता है। यथा- सः कार्यं कुर्वन् भवति, सः कार्यं कुर्वन् तिष्ठति, सः कार्यं कुर्वन् आस्ते, सः कार्यं कुर्वन् वर्तते इत्यादि।

4. जब क्रिया में निरन्तरता का बोध कराना होता है तो भू, एवं स्था का प्रयोग होता है।

3. सन्नन्त कृ धातु के शतृप्रत्ययान्त ''चिकीर्षत्'' शब्द से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं चिकीर्षन् अस्ति।	वह काम करना चाह रहा है
तौ	'' चिकीर्षन्तौ स्तः।	वे दोनों काम करना चाह रहे हैं
ते	'' चिकीर्षन्तः सन्ति।	वे लोग काम करना चाह रहे हैं
त्वं	'' चिकीर्षन् असि।	तुम काम करना चाह रहे हो
युवां	'' चिकिर्षन्तौ स्थः।	तुम दोनों काम करना चाह रहे हो
यूयं	'' चिकीर्षन्तः स्थ।	हम लोग काम करना चाह रहे हो
अहं	'' चिकीर्षन् अस्मि।	मैं काम करना चाह रहा हूँ
आवां	'' चिकीर्षन्तौ स्वः।	हम दोनों काम करना चाह रहे हैं
वयं	'' चिकीर्षन्तः स्म।	हम लोग काम करना चाह रहे हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं चिकीर्षन् आसीत्।	वह काम करना चाह रहा था
तौ	'' चिकीर्षन्तौ आस्ताम्।	वे दोनों काम करना चाह रहे थे

ते	" चिकीर्षन्तः आसन्।	वे लोग काम करना चाह रहे थे
त्वं	" चिकीर्षन् आसीः।	तुम काम करना चाह रहे थे
युवां	" चिकिर्षन्तौ आस्तम्।	तुम दोनों काम करना चाह रहे थे
यूयं	" चिकीर्षन्तः आस्त।	तुम लोग काम करना चाह रहे थे
अहं	" चिकीर्षन् आसम्।	मैं काम करना चाह रहा था
आवां	" चिकीर्षन्तौ आस्व।	हम दोनों काम करना चाह रहे थे
वयं	" चिकीर्षन्तः आस्म।	हम लोग काम करना चाह रहे थे

लिङ् लकार

सः	क्रार्यं चिकीर्षन् स्यात्।	वह काम करना चाह रहा हो
तौ	" चिकीर्षन्तौ स्याताम्।	वे दोनों काम करना चाह रहे हों
ते	" चिकीर्षन्तः स्युः।	वे लोग काम करना चाह रहे हों
त्वं	" चिकीर्षन् स्याः।	तुम काम करना चाह रहे होवो
युवां	" चिकिर्षन्तौ स्यातम्।	तुम लोग काम करना चाह रहे होवो
यूयं	" चिकीर्षन्तः स्यात।	तुम लोग काम करना चाह रहे होवो
अहं	" चिकीर्षन् स्याम्।	मैं काम करना चाह रहा होऊँ
आवां	" चिकीर्षन्तौ स्याव।	हम दोनों काम करना चाह रहे होवें
वयं	" चिकीर्षन्तः स्याम।	हम लोग काम करना चाह रहे होवें

लृट् लकार

सः	कार्यं चिकीर्षन् भविष्यति।	वह काम करना चाह रहा होगा
तौ	" चिकीर्षन्तौ भविष्यतः।	वे दोनों काम करना चाह रहे होंगे
ते	" चिकीर्षन्तः भविष्यन्ति।	वे लोग काम करना चाह रहे होंगे
त्वं	" चिकीर्षन् भविष्यसि।	तुम काम करना चाह रहे होगे
युवां	" चिकिर्षन्तौ भविष्यथः।	तुम दोनों काम करना चाह रहे होगे
यूयं	" चिकीर्षन्तः भविष्यथ।	हम लोग काम करना चाह रहे होगे
अहं	" चिकीर्षन् भविष्यामि	मैं काम करना चाह रहा हूँगा

आवां	" चिकीर्षन्तौ भविष्यावः	हम दोनों काम करना चाह रहे होंगे
वयं	" चिकीर्षन्तः भविष्यामः	हम लोग काम करना चाह रहे होंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं चिकीर्षन् अभविष्यत्	वह काम करना चाह रहा होता
तौ	" चिकीर्षन्तौ अभविष्यताम्	वे दोनों काम करना चाह रहे होते
ते	" चिकीर्षन्तः अभविष्यन्	वे लोग काम करना चाह रहे होते
त्वं	" च्रिकीर्षन् अभविष्यः	तुम काम करना चाह रहे होते
युवां	" चिकिर्षन्तौ अभविष्यतम्	तुम दोनों काम करना चाह रहे होते
यूयं	" चिकीर्षन्तः अभविष्यत	हम लोग काम करना चाह रहे होते
अहं	" चिकीर्षन् अभविष्यम्	मैं काम करना चाह रहा होता
आवां	" चिकीर्षन्तौ अभविष्याव	हम दोनों काम करना चाह रहे होते
वयं	" चिकीर्षन्तः अभविष्याम	हम लोग काम करना चाह रहे होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. चिकीर्षत् शब्द के समान ही जि धातु से जिगीषत् (जीतना चाहने वाला) गम् से जिगमिषत् (जाना चाहने वाला) जीव से जिजीविषत् (जीना चाहने वाला) तृ से तितीर्षत् (तैरना चाहने वाला) हृ से जिहीर्षत् (हरण करना चाहने वाला) युध से युयुत्सत् (लड़ना चाहने वाला) आदि शब्दों के प्रयोग कर वाक्य बनाने चाहिये।

2. शानच् प्रत्यय से बने शब्द चिकीर्षमाण (करना चाह रहा) ज्ञा से जिज्ञासमान् (जानना चाह रहा) आदि शब्दों के रूप कुर्वाण के समान चलेंगे।

3. ऊपर के शतृ-शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के स्थान पर उ प्रत्ययान्त शब्द-जिगीषु, जिगमिषु, जिजीविषु, तितीर्षु, जिहीर्षृ युयुत्सु, जिज्ञासु आदि शब्दों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

4. कर्मवाच्य में "तेन कार्यं चिकीर्ष्यमाणम् अस्ति, आसीत्, स्यात, भविष्यति, अभविष्यत् आदि प्रयोग होगा।

4. वर्तमानकालिक शतृप्रत्ययान्त प्रेरणार्थक "कारयत्" शब्द से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं कारयन् अस्ति।	वह काम करा रहा है
तौ	" कारयन्तौ स्तः।	वे दोनों काम करा रहे हैं
ते	" कारयन्तः सन्ति।	वे सब काम करा रहे हैं
त्वं	" कारयन् असि।	तुम काम करा रहे हो
युवां	" कारयन्तौ स्थः।	तुम दोनों काम करा रहे हो
यूयं	" कारयन्तः स्थ।	तुम सब काम करा रहे हो
अहं	" कारयन् अस्मि।	मैं काम करा रहा हूँ
आवां	" कारयन्तौ स्वः।	हम दोनों काम करा रहे हैं
वयं	" कारयन्तः स्म।	हम सब काम करा रहे हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं कारयन् आसीत्।	वह काम करा रहा था
तौ	" कारयन्तौ आस्ताम्।	वे दोनों काम करा रहे थे
ते	" कारयन्तः आसन्।	वे सब काम करा रहे थे
त्वं	" कारयन् आसीः।	तुम काम करा रहे थे
युवां	" कारयन्तौ आस्तम्।	तुम दोनों काम करा रहे थे
यूयं	" कारयन्तः आस्त।	तुम सब काम करा रहे थे
अहं	" कारयन् आसम्।	मैं काम करा रहा था
आवां	" कारयन्तौ आस्व।	हम दोनों काम करा रहे थे
वयं	" कारयन्तः आस्म।	हम सब काम करा रहे थे

लिङ् लकार

सः	कार्यं कारयन् स्यात्।	वह काम करा रहा हो
तौ	" कारयन्तौ स्याताम्।	वे दोनों काम करा रहे हों
ते	" कारयन्तः स्युः।	वे सब काम करा रहे हों

त्वं	" कारयन् स्याः।	तुम काम करा रहे होवो
युवां	" कारयन्तौ स्यातम्।	तुम दोनों काम करा रहे होवो
यूयं	" कारयन्तः स्यात।	हम सब काम करा रहे होवो
अहं	" कारयन् स्याम्।	मैं काम करा रहा होऊँ
आवां	" कारयन्तौ स्याव।	हम दोनों काम करा रहे हों
वयं	" कारयन्तः स्याम।	हम सब काम करा रहे हों

लृट् लकार

सः	कार्यं कारयन् भविष्यति।	वह काम करा रहा होगा
तौ	" कारयन्तौ भविष्यतः।	वे दोनों काम करा रहे होंगे
ते	" कारयन्तः भविष्यन्ति।	वे सब काम करा रहे होंगे
त्वं	" कारयन् भविष्यसि।	तुम काम करा रहे होगे
युवां	" कारयन्तौ भविष्यथः।	तुम दोनों काम करा रहे होगे
यूयं	" कारयन्तः भविष्यथ।	तुम सब काम करा रहे होगे
अहं	" कारयन् भविष्यामि।	मैं काम करा रहा हूँगा
आवां	" कारयन्तौ भविष्यावः।	हम दोनों काम करा रहे होंगे
वयं	" कारयन्तः भविष्यामः।	हम सब काम करा रहे होंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कारयन् अभविष्यत्।	वह काम करा रहा होता
तौ	" कारयन्तौ अभविष्यताम्।	वे दोनों काम करा रहे होते
ते	" कारयन्तः अभविष्यन्।	वे लोग काम करा रहे होते
त्वं	" कारयन् अभविष्यः।	तुम काम करा रहे होते
युवां	" कारयन्तौ अभविष्यतम्।	तुम दोनों काम करा रहे होते
यूयं	" कारयन्तः अभविष्यत।	तुम सब काम करा रहे होते
अहं	" कारयन् अभविष्यम्।	मैं काम करा रहा होता
आवां	" कारयन्तौ अभविष्याव।	हम दोनों काम करा रहे होते
वयं	" कारयन्तः अभविष्याम।	हम लोग काम करा रहे होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. कारयत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप "कारयन्ती कारयन्त्यौ कारयन्त्यः" आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसक लिङ्ग के रूप "कारयत् कारयतौ कारयन्ति" इत्यादि जगत् शब्द के समान चलेंगे।

2. कारयत् शब्द के समान पाठयत् (पढ़ा रहा) लेखयत् (लिखा रहा) श्रावयत् (सुना रहा) दर्शयत् (दिखा रहा) बोधयत् (समझा रहा) आदि शब्दों को लगाकर वाक्य बनाने चाहिये।

3. पाठयत् आदि शब्दों का प्रयोग करते समय कार्य के स्थान पर इन्हीं के अनुरूप पाठं, लेखं, गीतं, दृश्यं, अर्थं आदि पदों का प्रयोग करना चाहिये।

4. कर्मवाच्य में तेन कार्यं कार्यमाणम् अस्ति, आसीत्, स्यात् आदि रूप होंगे।

5. भूतकालिक क्तवतु प्रत्ययान्त "कृतवत्" शब्द से बने कर्त्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं कृतवान् अस्ति।	उसने काम किया है
तौ	" कृतवन्तौ स्तः।	उन दोनों ने काम किया है
ते	" कृतवन्तः सन्ति।	उन सब ने काम किया है
त्वं	" कृतवान् असि।	तुमने काम किया है
युवां	" कृतवन्तौ स्थः।	तुम दोनों ने काम किया है
यूयं	" कृतवन्तः स्थ।	तुम सबने काम किया है
अहं	" कृतवान् अस्मि।	मैंने काम किया है
आवां	" कृतवन्तौ स्वः।	हम दोनों ने काम किया है
वयं	" कृतवन्तः स्मः।	हम सब ने काम किया है

लङ् लकार

सः	कार्यं कृतवान् आसीत्।	उसने काम किया था
तौ	" कृतवन्तौ आस्ताम्।	उन दोनों ने काम किया था
ते	" कृतवन्तः आसन्।	उन सब ने काम किया था
त्वं	" कृतवान् आसीः।	तुमने काम किया था

युवां	" कृतवन्तौ आस्तम्।	तुम दोनों ने काम किया था
यूयं	" कृतवन्तः आस्त।	तुम सब ने काम किया था
अहं	" कृतवान् आसम्।	मैंने काम किया था
आवां	" कृतवन्तौ आस्व।	हम दोनों ने काम किया था
वयं	" कृतवन्तः आस्म।	हम सब ने काम किया था

लिङ् लकार

सः	कार्यं कृतवान् स्यात्।	उसने काम किया हो
तौ	" कृतवन्तौ स्याताम्।	उन दोनों ने काम किया हो
ते	" कृतवन्तः स्युः।	उन सब ने काम किया हो
त्वं	" कृतवान् स्याः।	तुमने काम किया हो
युवां	" कृतवन्तौ स्यातम्।	तुम दोनों ने काम किया हो
यूयं	" कृतवन्तः स्यात।	तुम सब ने काम किया हो
अहं	" कृतवान् स्याम्।	मैंने काम किया हो
आवां	" कृतवन्तौ स्याव।	हम दोनों ने काम किया हो
वयं	" कृतवन्तः स्याम।	हम सब ने काम किया हो

लृट् लकार

सः	कार्यं कृतवान् भविष्यति।	उसने काम किया होगा
तौ	" कृतवन्तौ भविष्यतः।	उन दोनों ने काम किया होगा
ते	" कृतवन्तः भविष्यन्ति।	उन सब ने काम किया होगा
त्वं	" कृतवान् भविष्यसि।	तुमने काम किया होगा
युवां	" कृतवन्तौ भविष्यथः।	तुम दोनों ने काम किया होगा
यूयं	" कृतवन्तः भविष्यथ।	तुम सब ने काम किया होगा
अहं	" कृतवान् भविष्यामि।	मैंने काम किया होगा
आवां	" कृतवन्तौ भविष्यावः।	हम दोनों ने काम किया होगा
वयं	" कृतवन्तः भविष्यामः।	हम सब ने काम किया होगा

लृङ् लकार

सः	कार्यं कृतवान् अभविष्यत्।	उसने काम किया होता
तौ	" कृतवन्तौ अभविष्यताम्।	उन दोनों ने काम किया होता
ते	" कृतवन्तः अभविष्यन्।	उन सब ने काम किया होता
त्वं	" कृतवान् अभविष्यः।	तुमने काम किया होता
युवां	" कृतवन्तौ अभविष्यतम्।	तुम दोनों ने काम किया होता
यूयं	" कृतवन्तः अभविष्यत।	तुम सब ने काम किया होता
अहं	" कृतवान् अभविष्यम्।	मैंने काम किया होता
आवां	" कृतवन्तौ अभविष्याव।	हम दोनों ने काम किया होता
वयं	" कृतवन्तः अभविष्याम।	हम सबने काम किया होता

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. कृतवत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप "कृतवती कृतवत्यौ कृतवत्यः" आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसकलिंग के रूप "कृतवत् कृतवती कृतवन्ति" आदि जगत् शब्द के समान चलते हैं।

2. कृतवत् शब्द के समान ही पठितवत्, गतवत्, आगतवत्, दृष्टवत्, श्रुतवत् आदि शब्दों को लगाकर तथा इनके साथ पाठं, लेखं, ग्रामं, गृहं, नाटकं, कथां आदि पद लगाकर वाक्य बनाने चाहिये।

3. कर्मवाच्य में तेन कार्य कृतम् अस्ति, आसीत्, स्यात्, भविष्यति, अभविष्यत् आदि रूप होंगे।

6. भूतकालिक क्तवतु प्रत्ययान्त प्रेरणार्थक 'कारितवत्' शब्द से बने कर्त्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं कारितवान् अस्ति।	उसने काम कराया है
तौ	" कारितवन्तौ स्तः।	उन दोनों ने काम कराया है
ते	" कारितवन्तः सन्ति।	उन सब ने काम कराया है
त्वं	" कारितवान् असि।	तुमने काम कराया है

युवां	" कारितवन्तौ स्थः।	तुम दोनों ने काम कराया है
यूयं	" कारितवन्तः स्थ।	तुम सबने काम कराया है
अहं	" कारितवान् अस्मि।	मैंने काम कराया है
आवां	" कारितवन्तौ स्वः।	हम दोनों ने काम कराया है
वयं	" कारितवन्तः स्मः।	हम सब ने काम कराया है

लङ् लकार

सः	कार्यं कारितवान् आसीत्।	उसने काम कराया था
तौ	" कारितवन्तौ आस्ताम्।	उन दोनों ने काम कराया था
ते	" कारितवन्तः आसन्।	उन सब ने काम कराया था
त्वं	" कारितवान् आसीः।	तुमने काम कराया था
युवां	" कारितवन्तौ आस्तम्।	तुम दोनों ने काम कराया था
यूयं	" कारितवन्तः आस्त।	तुम सब ने काम कराया था
अहं	" कारितवान् आसम्।	मैंने काम कराया था
आवां	" कारितवन्तौ आस्व।	हम दोनों ने काम कराया था
वयं	" कारितवन्तः आस्म।	हम सब ने काम कराया था

लिङ् लकार

सः	कार्यं कारितवांन् स्यात्।	उसने काम कराया हो
तौ	" कारितवन्तौ स्याताम्।	उन दोनों ने काम कराया हो
ते	" कारितवन्तः स्युः।	उन सब ने काम कराया हो
त्वं	" कारितवान् स्याः।	तुमने काम कराया हो
युवां	" कारितवन्तौ स्यातम्।	तुम दोनों ने काम कराया हो
यूयं	" कारितवन्तः स्यात।	तुम सब ने काम किया हो
अहं	" कारितवान् स्याम्।	मैंने काम कराया हो
आवां	" कारितवन्तौ स्याव।	हम दोनों ने काम कराया हो
वयं	" कारितवन्तः स्याम।	हम सब ने काम कराया हो

लृट् लकार

सः	कार्यं कारितवान् भविष्यति।	उसने काम कराया होगा
तौ	" कारितवन्तौ भविष्यतः।	उन दोनों ने काम कराया होगा
ते	" कारितवन्तः भविष्यन्ति।	उन सब ने काम कराया होगा
त्वं	" कारितवान् भविष्यसि।	तुमने काम कराया होगा
युवां	" कारितवन्तौ भविष्यथः।	तुम दोनों ने काम कराया होगा
यूयं	" कारितवन्तः भविष्यथ।	तुम सब ने काम कराया होगा
अहं	" कारितवान् भविष्यामि।	मैंने काम कराया होगा
आवां	" कारितवन्तौ भविष्यावः।	हम दोनों ने काम कराया होगा
वयं	" कारितवन्तः भविष्यामः।	हम सब ने काम कराया होगा

लृङ् लकार

सः	कार्यं कारितवान् अभविष्यत्।	उसने काम कराया होता
तौ	" कारितवन्तौ अभविष्यताम्।	उन दोनों ने काम कराया होता
ते	" कारितवन्तः अभविष्यन्।	उन सब ने काम कराया होता
त्वं	" कारितवान् अभविष्यः।	तुमने काम कराया होता
युवां	" कारितवन्तौ अभविष्यतम्।	तुम दोनों ने काम कराया होता
यूयं	" कारितवन्तः अभविष्यत।	तुम सब ने काम कराया होता
अहं	" कारितवान् अभविष्यम्।	मैंने काम कराया होता
आवां	" कारितवन्तौ अभविष्याव।	हम दोनों ने काम कराया होता
वयं	" कारितवन्तः अभविष्याम।	हम सबने काम कराया होता

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. कारितवान् शब्द के स्त्रीलिंग रूप "कारितवती कारितवत्यौ कारितवत्यः" आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसकलिङ्ग के रूप "कारितवत् कारितवती कारितवन्ति" आदि जगत् शब्द के समान चलेंगे।

2. कारितवत् शब्द के समान पाठितवत् (पढ़ाया) लेखितवत् (लिखाया) श्रावितवत् (सुनाया) दर्शितवत् (दिखाया) बोधितवत् (समझाया) आदि शब्दों का पाठ लेख आदि शब्दों

के साथ प्रयोग कर इनके वाक्य बनाने चाहिये। विशेष्य शब्दों के साथ इनके निम्नलिखित रूप में प्रयोग होंगे। यथा- सः मां पाठितवान् अस्ति, ते पत्रं लेखितवन्तः सन्ति, तौ कथां श्रावितवन्तौ स्तः, माता पुत्रं पाठितवती आसीत्, गुरुः शिष्यं बोधितवान् भविष्यति, भवान् दृश्यं दर्शितवान् आसीत् इत्यादि।

7. भविष्यत्कालिक स्यतृ प्रत्ययान्त ''करिष्यत्' शब्द से बने कर्त्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं करिष्यन् अस्ति।	वह काम करने वाला है
तौ	'' करिष्यन्तौ स्तः।	वे दोनों काम करने वाले हैं
ते	'' करिष्यन्तः सन्ति।	वे सब काम करने वाले हैं
त्वं	'' करिष्यन् असि।	तुम काम करने वाले हो
युवां	'' करिष्यन्तौ स्थः।	तुम दोनों काम करने वाले हो
यूयं	'' करिष्यन्तः स्थ।	तुम सब काम करने वाले हो
अहं	'' करिष्यन् अस्मि।	मैं काम करने वाला हूँ
आवां	'' करिष्यन्तौ स्वः।	हम दोनों काम करने वाले हैं
वयं	'' करिष्यन्तः स्मः।	हम सब काम करने वाले हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं करिष्यन् आसीत्।	वह काम करने वाला था
तौ	'' करिष्यन्तौ आस्ताम्।	वे दोनों काम करने वाले थे
ते	'' करिष्यन्तः आसन्।	वे सब काम करने वाले थे
त्वं	'' करिष्यन् आसीः।	तुम काम करने वाले थे
युवां	'' करिष्यन्तौ आस्तम्।	तुम दोनों काम करने वाले थे
यूयं	'' करिष्यन्तः आस्त।	तुम सब काम करने वाले थे
अहं	'' करिष्यन् आसम्।	मैं काम करने वाला था
आवां	'' करिष्यन्तौ आस्व।	हम दोनों काम करने वाले थे
वयं	'' करिष्यन्तः आस्म।	हम सब काम करने वाले थे

लिङ् लकार

सः	कार्यं करिष्यन् स्यात्।	वह काम करने वाला हो
तौ	" करिष्यन्तौ स्याताम्।	वे दोनों काम करने हों
ते	" करिष्यन्तः स्युः।	वे सब काम करने वाले हो
त्वं	" करिष्यन् स्याः।	तुम काम करने वाले होवों
युवां	" करिष्यन्तौ स्यातम्।	तुम दोनों काम करने वाले होवो
यूयं	" करिष्यन्तः स्यात।	तुम सब काम करने वाले होवो
अहं	" करिष्यन् स्याम्।	मैं काम करने वाला होऊँ
आवां	" करिष्यन्तौ स्याव।	हम दोनों काम करने वाला होवें
वयं	" करिष्यन्तः स्याम।	हम सब काम करने वाले होवें

लृट् लकार

सः	कार्यं करिष्यन् भविष्यति।	वह काम करने वाला होगा
तौ	" करिष्यन्तौ भविष्यतः।	वे दोनों काम करने वाले होंगे
ते	" करिष्यन्तः भविष्यन्ति।	वे सब काम करने वाले होंगे
त्वं	" करिष्यन् भविष्यसि।	तुम काम करने वाले होवोगे
युवां	" करिष्यन्तौ भविष्यथः।	तुम दोनों काम करने वाले होवोगे
यूयं	" करिष्यन्तः भविष्यथ।	तुम सब काम करने वाले होवोगे
अहं	" करिष्यन् भविष्यामि।	मैं काम करने वाला होऊँगा
आवां	" करिष्यन्तौ भविष्यावः।	हम दोनों काम करने वाले होंगे
वयं	" करिष्यन्तः भविष्यामः	हम सब काम करने वाले होंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं करिष्यन् अभविष्यत्।	वह काम करने वाला होता
तौ	" करिष्यन्तौ अभविष्यताम्।	वे दोनों काम करने वाले होते
ते	" करिष्यन्तः अभविष्यन्।	वे सब काम करने वाले होते
त्वं	" करिष्यन् अभविष्यः	तुम काम करने वाले होते

युवां	'' करिष्यन्तौ अभविष्यतम्	तुम दोनों काम करने वाले होते
यूयं	'' करिष्यन्तः अभविष्यत	तुम सब काम करने वाले होते
अहं	'' करिष्यन् अभविष्यम्	मैं काम करने वाला होता
आवां	'' करिष्यन्तौ अभविष्याव	हम दोनों काम करने वाले होते
वयं	'' करिष्यन्तः अभविष्याम	हम सब काम करने वाले होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. करिष्यत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप ''करिष्यन्ती करिष्यन्त्यौ करिष्यन्त्यः'' आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसकलिङ्ग के रूप ''करिष्यत्'' करिष्यती करिष्यन्ति'' आदि जगत् शब्द के समान चलेंगे।

2. करिष्यत् शब्द के समान ही पठिष्यत् (पढ़ने वाला) लेखिष्यत् (लिखने वाला) गमिष्यत् (जाने वाला) भविष्यत् (होने वाला) श्रोष्यत् (सुनने वाला) द्रक्ष्यत् (देखने वाला) आदि शब्दों के भी पुलिंङ्ग स्त्रीलिङ्ग यथा नपुंसकलिङ्ग में रूप चलेंगे।

3. कृ धातु के उभयपदी होने के कारण इससे भविष्यत्काल के अर्थ में स्यमान प्रत्यय लगाने पर ''करिष्यमाण'' ऐसा रूप भी होता है। अर्थ करिष्यत् शब्द के ही समान होगा तथा पूर्वोक्त कुर्वाण शब्द के समान ही इसके भी तीनों लिङ्गों में रूप होंगे। यथा- स कार्यं करिष्यमाणः अस्ति, सा कार्यं करिष्यमाणा अस्ति, ताः कार्यं करिष्यमाणाः स्युः इत्यादि।

8. भविष्यत्कालिक स्यतृ प्रत्ययान्त प्रेरणार्थक 'कारियष्यत्' शब्द से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

सः	कार्यं कारयिष्यन् अस्ति।	वह काम कराने वाला है
तौ	'' कारयिष्यन्तौ स्तः।	वे दोनों काम कराने वाले हैं
ते	'' कारयिष्यन्तः सन्ति।	वे सब काम कराने वाले हैं
त्वं	'' कारयिष्यन् असि।	तुम काम कराने वाले हो
युवां	'' कारयिष्यन्तौ स्थः।	तुम दोनों काम कराने वाले हो
यूयं	'' कारयिष्यन्तः स्थ।	तुम सब काम कराने वाले हो
अहं	'' कारयिष्यन् अस्मि।	मैं काम कराने वाला हूँ

आवां	" कारयिष्यन्तौ स्वः।	हम दोनों काम कराने वाले हैं
वयं	" कारयिष्यन्तः स्मः।	हम सब काम कराने वाले हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं कारयिष्यन् आसीत्।	वह काम कराने वाला था
तौ	" कारयिष्यन्तौ आस्ताम्।	वे दोनों काम कराने वाले थे
ते	" कारयिष्यन्तः आसन्।	वे सब काम कराने वाले थे
त्वं	" कारयिष्यन् आसीः।	तुम काम कराने वाले थे
युवां	" कारयिष्यन्तौ आस्तम्।	तुम दोनों काम कराने वाले थे
यूयं	" कारयिष्यन्तः आस्त।	तुम सब काम कराने वाले थे
अहं	" कारयिष्यन् आसम्।	मैं काम कराने वाला था
आवां	" कारयिष्यन्तौ आस्व।	हम दोनों काम कराने वाले थे
वयं	" कारयिष्यन्तः आस्म।	हम सब काम कराने वाले थे

लिङ् लकार

सः	कार्यं कारयिष्यन् स्यात्।	वह काम कराने वाला हो
तौ	" कारयिष्यन्तौ स्याताम्।	वे दोनों काम कराने वाले हों
ते	" कारयिष्यन्तः स्युः।	वे सब काम कराने वाले हों
त्वं	" काररिष्यन् स्याः।	तुम काम कराने वाले हो
युवां	" कारयिष्यन्तौ स्यातम्।	तुम दोनों काम कराने वाले होवो
यूयं	" कारयिष्यन्तः स्यात।	तुम सब काम कराने वाले होवो
अहं	" कारयिष्यन् स्याम्।	मैं काम कराने वाला होऊँ
आवां	" कारयिष्यन्तौ स्याव।	हम दोनों काम कराने वाला होवें
वयं	" कारयिष्यन्तः स्याम।	हम सब काम कराने वाले होवें

लृट् लकार

सः	कार्यं कारयिष्यन् भविष्यति।	वह काम कराने वाला होगा
तौ	" कारयिष्यन्तौ भविष्यतः।	वे दोनों काम कराने वाले होंगे

ते	" कारयिष्यन्तः भविष्यन्ति।	वे सब काम कराने वाले होंगे
त्वं	" कारयिष्यन् भविष्यसि।	तुम काम कराने वाले होवोगे
युवां	" कारयिष्यन्तौ भविष्यथः।	तुम दोनों काम कराने वाले होवेगे
यूयं	" कारयिष्यन्तः भविष्यथ।	तुम सब काम कराने वाले होवेगे
अहं	" कारयिष्यन् भविष्यामि	मैं काम कराने वाला हूँगा
आवां	" कारयिष्यन्तौ भविष्यावः	हम दोनों काम कराने वाले होंगे
वयं	" कारयिष्यन्तः भविष्यामः	हम सब काम कराने वाले होंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कारयिष्यन् अभविष्यत्	वह काम कराने वाला होता
तौ	" कारयिष्यन्तौ अभविष्यताम्	वे दोनों काम कराने वाले होते
ते	" कारयिष्यन्तः अभविष्यन्	वे सब काम कराने वाले होते
त्वं	" कारयिष्यन् अभविष्यः	तुम काम कराने वाले होते
युवां	" कारयिष्यन्तौ अभविष्यतम्	तुम दोनों काम कराने वाले होते
यूयं	" कारयिष्यन्तः अभविष्यत	तुम सब काम कराने वाले होते
अहं	" कारयिष्यन् अभविष्यम्	मैं काम कराने वाला होता
आवां	" कारयिष्यन्तौ अभविष्याव	हम दोनों काम कराने वाले होते
वयं	" कारयिष्यन्तः अभविष्याम	हम सब काम कराने वाले होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. कारयिष्यत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप "कारयिष्यन्ती कारयिष्यन्त्यौ कारयिष्यन्त्यः" आदि नदी शब्द के समान तथा नपुंसक लिङ्ग के रूप "कारयिष्यत् कारयिष्यती कारयिष्यन्ति" आदि जगत शब्द के समान चलेंगे।

2. कारयिष्यत् शब्द के समान ही पाठयिष्यत् (पढ़ाने वाला) लेखयिष्यत् (लिखाने वाला) दर्शयिष्यत् (दिखाने वाला) श्रावयिष्यत् (सुनाने वाला) आदि शब्दों के तीनों लिङ्गों में रूप चलेंगे। छात्र इस प्रकार के अन्य शब्दों का भी एक कर्म के साथ वाक्यों में प्रयोग करें।

3. कृ धातु के णिजन्त रूप के भी उभयपदी होने के कारण कारयिष्यत् के स्थान पर "कारयिष्यमाण" ऐसा भी रूप होगा तथा करिष्यमाण के समान ही तीनों लिङ्गों में रूप चलेंगे।

कारयिष्यत् शब्द के समान ही कारयिष्यमाण शब्द का भी अर्थ होगा।

4. कर्मवाच्य में तेन कार्यं कारयिष्यमाणम् अस्ति, आसीत्, स्यात् आदि रूप होंगे।

पिछले पृष्ठों में कृ धातु के साथ कर्तृवाच्य में शतृ, शानच्, क्तवतु, स्पतृ तथा स्यमान आदि कृत्प्रत्ययों को लगाकर बने सामान्य तथा प्रेरणार्थक रूपों के साथ अस् एवं भू धातु के योग से बनने वाले क्रियारूपों को अर्थ के साथ बतलाया गया है। साथ ही टिप्पणियों में कुछ अन्य अवश्य ज्ञातव्य विषयों का भी उल्लेख कर दिया गया है। पाठकों को चाहिये कि पूर्वोल्लिखित समस्त संस्कृत तथा हिन्दी वाक्यों का, कर्ता, कर्म, विशेष्य, विशेषण, लिङ्ग, पुरुष वचन आदि को ध्यान में रखते हुए, अभ्यास कर लें और दैनिक बोलचाल में इनका व्यवहार करें।

पिछले वाक्यों में केवल कृ धातु से बने शब्दों का ही प्रयोग किया गया है और कर्म के रूप में कार्य शब्द का प्रयोग किया गया है। परन्तु पाठकों को टिप्पणी में उल्लिखित अन्य उदाहरणों के समान और भी अनेक व्यवहारोपयोगी धातुओं तथा उनके साथ तदनुरूप कर्मवाचक पदों को जोड़कर सैकड़ों वाक्य बनाने चाहिये।

क्त, तव्यत्, शानच् एवं स्यमान प्रत्ययों से बने शब्दों के साथ अस् एवं भू धातु के योग से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

9. भूतकालिक क्तप्रत्ययान्त कृत शब्द से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन	कार्यं कृतम अस्ति	उस से काम किया गया है
तेन	कार्ये कृते स्तः	उस से काम किये गये हैं
तेन	कार्याणि कृतानि सन्ति	उस से काम किये गये हैं
त्वया	कार्य कृतम अस्ति	तुम से काम किया गया है
त्वया	कार्ये कृते स्तः	तुम से काम किये गये हैं
त्वया	कार्याणि कृतानि सन्ति	तुम से काम किये गये हैं
मया	कार्यं कृतम् अस्ति	मुझ से काम किया गया है
मया	कार्ये कृते स्तः	मुझ से काम किये गये हैं
मया	कार्याणि कृतानि सन्ति	हम सब से काम किये गये हैं

लङ् लकार

तेन	कार्यं कृतम आसीत्	उस से काम किया गया था
तेन	कार्ये कृते आस्ताम्	उन से काम किये गये थे
तेन	कार्याणि कृतानि आसन्	उस से काम किये गये थे
त्वया	कार्यं कृतम आसीत्	तुम से काम किया गया था
त्वया	कार्ये कृते आस्ताम्	तुम से काम किये गये थे
त्वया	कार्याणि कृतानि आसन्	तुम से काम किये गये थे
मया	कार्यं कृतम् आसीत्	मुझ से काम किया गया था
मया	कार्ये कृते आस्ताम्	मुझ से काम किये गये थे
मया	कार्याणि कृतानि आसन्	हम सब से काम किये गये थे

लिङ् लकार

तेन	कार्यं कृतं स्यात्।	उस से काम किया गया हो
तेन	कार्ये कृते स्याताम्।	उस से काम किये गये हों

तेन	कार्याणि कृतानि स्युः।	मुझ से काम किये गये हों
त्वया	कार्य कृतम स्यात्	तुम से काम किया गया हो
त्वया	कार्ये कृते स्याताम्।	तुम से काम किये गये हों
त्वया	कार्याणि कृतानि स्युः।	तुम से काम किये गये हों
मया	कार्य कृतं स्यात्।	मुझ से काम किया गया हो
मया	कार्ये कृते स्याताम्।	मुझ से काम किये गये हों
मया	कार्याणि कृतानि स्युः।	मुझ से काम किये गये हों

लृट् लकार

तेन	कार्यं कृतं भविष्यति।	उस से काम किया गया होगा
तेन	कार्यं कृते भविष्यतः।	उस से काम किये गये होंगे
तेन	कार्याणि कृतानि भविष्यन्ति।	उस से काम किये गये होंगे
त्वया	कार्य कृतं भविष्यति।	तुम से काम किया गया होगा
त्वया	कार्ये कृते भविष्यतः।	तुम से काम किये गये होंगे
त्वया	कार्याणि कृतानि भविष्यन्ति।	तुम से काम किये गये होंगे
मया	कार्यं कृतं भविष्यति।	मुझ से काम किया गया होगा
मया	कार्ये कृते भविष्यतः।	मुझ से काम किये गये होंगे
मया	कार्याणि कृतानि भविष्यन्ति।	मुझ से काम किये गये होंगे

लृङ् लकार

तेन	कार्यं कृतम् अभविष्यत्।	उस से काम किया गया होता
तेन	कार्ये कृते अभविष्यताम।	उस से काम किये गये होते
तेन	कार्याणि कृतानि अभविष्यन्।	उस से काम किये गये होते
त्वया	कार्यं कृतं अभविष्यत्।	तुमसे काम किया गया होता
त्वया	कार्ये कृते अभविष्यताम्।	तुम से काम किये गये होते
त्वया	कार्याणि कृतानि अभविष्यन्।	तुम काम किये गये होते
मया	कार्यं कृतम् अभविष्यत्।	मुझसे काम किया गया होता

मया	कार्ये कृते अभविष्यताम्।	मुझ से काम किये गये होते
मया	कार्याणि कृतानि अभविष्यन्।	मुझसे काम किये गये होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रियावाचक पद के लिङ्ग तथा वचन कर्म के अनुसार होते हैं। इसी नियम के अनुसार ऊपर के वाक्यों में 'कार्य कार्ये कार्याणि' ये जो कर्मवाचक पद हैं उन्हीं के अनुसार ''कृतं कृते कृतानि'' ये क्रियावाचक पद भी रखे गये हैं। यदि कर्मवाचक पद स्त्रीलिङ्ग तथा पुल्लिङ्ग होंगे तो क्रियावाचक पद भी क्रमशः पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग हो जायेंगे। यथा- पुल्लिङ्ग में ''पाठः कृतः, पाठौ कृतौ, पाठाः कृता'' तथा स्त्रीलिङ्ग में ''यात्रा कृता, यात्रे कृते, यात्राः कृताः'' आदि।

कर्मवाच्य में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है और उसका क्रियापद से कोई सम्बन्ध नहीं होता। ऊपर के वाक्यों में तृतीया विभक्ति के केवल एकवचन के ही रूप दिये गये हैं। छात्रगण इसके स्थान पर प्रथम पुरुष के अन्य सर्वनाम शब्दों तथा आवश्यकतानुसार द्विवचन तथा बहुवचन का भी प्रयोग कर सकते हैं। यथा- ताभ्यां कार्यं कृतं भविष्यति, तैः कार्यं कृतं भविष्यति इत्यादि।

10. भूतकालिक क्तप्रत्ययान्त प्रेरणार्थक कारित शब्द से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन	कार्यं कारितम् अस्ति।	उससे काम कराया गया है
तेन	कार्ये कारिते स्तः।	उससे काम कराये गये हैं
तेन	कार्याणि कारितानि सन्ति।	उससे काम कराये गये हैं
त्वया	कार्यं कारितम् अस्ति।	तुमसे काम कराया गया है
त्वया	कार्ये कारिते स्तः।	तुमसे काम कराये गये हैं
त्वया	कार्याणि कारितानि सन्ति।	तुमसे काम कराये गये हैं
मया	कार्यं कारितम् अस्ति।	मुझसे काम कराया गया है
मया	कार्ये कारिते स्तः।	मुझसे काम कराये गये हैं
मया	कार्याणि कारितानि सन्ति।	मुझसे से काम कराये गये हैं

लङ् लकार

तेन	कार्यं कारितम् आसीत्।	उस से काम कराया गया था
तेन	कार्ये कारिते आस्ताम्।	उस से काम कराये गये थे
तेन	कार्याणि कारितानि आसन्।	उस से काम कराये गये थे
त्वया	कार्य कारितम् आसीत्।	तुम से काम कराया गया था
त्वया	कार्ये कारिते आस्ताम्।	तुम से काम कराये गये थे
त्वया	कार्याणि कारितानि आसन्।	तुम से काम कराये गये थे
मया	कार्य कारितम् आसीत्।	मुझ से काम कराया गया था
मया	कार्ये कारिते आस्ताम्।	मुझसे काम कराये गये थे
मया	कार्याणि कारितानि आसन्।	मुझसे काम कराये गये थे

लिङ् लकार

तेन	कार्यं कारितं स्यात्।	उससे काम कराया गया हो
तेन	कार्ये कारिते स्याताम्।	उससे काम कराये गये हों
तेन	कार्याणि कारितानि स्युः।	उससे काम कराये गये हों
त्वया	कार्यं कारितं स्यात्	तुम से काम कराया गया हो
त्वया	कार्ये कारिते स्याताम्।	तुम से काम कराये गये हों
त्वया	कार्याणि कारितानि स्युः।	तुम से काम कराये गये हों
मया	कार्यं कारितं स्यात्।	मुझ से काम कराया गया हो
मया	कार्ये कारिते स्याताम्।	मुझ से काम कराये गये हों
मया	कार्याणि कारितानि स्युः।	मुझ से काम कराये गये हों

लृट् लकार

तेन	कार्यं कारितं भविष्यति।	उस से काम कराया गया होगा
तेन	कार्ये कारिते भविष्यतः।	उस से काम कराये गये होंगे
तेन	कार्याणि कारितानि भविष्यन्ति।	उस से काम कराये गये होंगे
त्वया	कार्यं कारितं भविष्यति।	तुम से काम कराया गया होगा

त्वया	कार्ये कारिते भविष्यतः।	तुम से काम कराये गये होंगे
त्वया	कार्याणि कारितानि भविष्यन्ति।	तुम से काम कराये गये होंगे
मया	कार्य कारितं भविष्यति।	मुझ से काम कराया गया होगा
मया	कार्ये कारिते भविष्यतः।	मुझ से काम कराये गये होंगे
मया	कार्याणि कारितानि भविष्यन्ति।	मुझ से काम कराये गये होंगे

लृङ् लकार

तेन	कार्यं कारितम् अभविष्यत्।	उस से काम कराया गया होता
तेन	कार्यं कारिते अभविष्यताम।	उस से काम कराये गये होते
तेन	कार्याणि कारितानि अभविष्यन्।	उस से काम कराये गये होते
त्वया	कार्य कारितम् अभविष्यत्।	तुम से काम कराया गया होता
त्वया	कार्ये कारिते अभविष्यताम्।	तुम से काम कराये गये होते
त्वया	कार्याणि कारितानि अभविष्ययन्।	तुम से काम कराये गये होते
मया	कार्यं कारितम् अभविष्यत्।	मुझ से काम कराया गया होता
मयां	कार्ये कारिते अभविष्यताम्।	मुझ से काम कराये गये होते
मया	कार्याणि कारितानि अभविष्यन्।	मुझ से काम कराये गये होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

पिछले पृष्ठ में ''कृत'' शब्द के साथ बने हुए क्रिया रूपों एवं वाक्यों के सम्बन्ध में जो कर्मवाच्य से सम्बन्धित नियम बतलाये गये हैं वे ही नियम ''कारित'' शब्द के साथ भी लागू होंगे।

कारित शब्द के समान ही पाठित (पढ़ाया गया) लेखित (लिखाया गया) दर्शित (दिखाया गया) श्रावित (सुनाया गया) आदि शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाने चाहिये। विशेष शब्दों के साथ इनके प्रयोग निम्नलिखित रूप में होंगे- पुस्तकं पठितं अस्ति, गीनानि श्रावितानि सन्ति, चित्र दर्शितम् आसीत्, पत्राणि लेखितानि अभविष्यन् इत्यादि।

11. विध्यर्थक तव्यत् प्रत्ययान्त कर्तव्य शब्द से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन	कार्यं कर्तव्यम् अस्ति।	उसे काम करना है
तेन	कार्ये कर्तव्ये स्तः।	उसे काम करने हैं
तेन	कार्याणि कर्तव्यानि सन्ति।	उसे काम करने हैं
त्वया	कार्य कर्तव्यम् अस्ति।	तुम्हें काम करना है
त्वया	कार्ये कर्तव्ये स्तः।	तुम्हें काम करने हैं
त्वया	कार्याणि कर्तव्यानि सन्ति।	तुम्हें काम करने हैं
मया	कार्य कर्तव्यम् अस्ति।	मुझे काम करना है
मया	कार्ये कर्तव्ये स्तः।	मुझे काम करने हैं
मया	कार्याणि कर्तव्यानि सन्ति।	मुझे काम करने हैं

लङ् लकार

तेन	कार्यं कर्तव्यम आसीत्।	उसे काम करना था
तेन	कार्ये कर्तव्ये आसताम्।	उसे काम करने थे
तेन	कार्याणि कर्तव्यानि आसन्।	उसे काम करने थे
त्वया	कार्य कर्तव्यम् आसीत्।	तुम्हें काम करना था
त्वया	कार्ये कर्तव्ये आस्ताम्।	तुम्हें काम करने थे
त्वया	कार्याणि कर्तव्यानि आसन्।	तुम्हें काम करने थे
मया	कार्यं कर्तव्यम् आसीत्।	मुझे काम करना था
मया	कार्ये कर्तव्ये आस्ताम्।	मुझे काम करने थे
मया	कार्याणि कर्तव्यानि आसन्।	मुझे काम करने थे

लिङ् लकार

तेन	कार्यं कर्तव्यं स्यात्।	उसे काम करना हो
तेन	कार्यं कर्तव्ये स्याताम्।	उसे काम करने हों

तेन	कार्याणि कर्तव्यानि स्युः।	उसे काम करने हों
त्वया	कार्यं कर्तव्यं स्यात्	तुम्हें काम करना हो
त्वया	कार्ये कर्तव्ये स्याताम्।	तुम्हें काम करने हों
त्वया	कार्याणि कर्तव्यानि स्युः।	तुम्हें काम करने हों
मया	कार्य कर्तव्यं स्यात्।	मुझे काम करना हो
मया	कार्ये कर्तव्ये स्याताम्।	मुझे काम करने हों
मया	कार्याणि कर्तव्यानि स्युः।	मुझे काम करने हों

लृट् लकार

तेन	कार्यं कर्तव्यं भविष्यति।	उसे काम करना होगा
तेन	कार्ये कर्तव्ये भविष्यतः।	उसे काम करने होंगे
तेन	कार्याणि कर्तव्यानि भविष्यन्ति।	उसे काम करने होंगे
त्वया	कार्य कर्तव्यं भविष्यति।	तुम्हें काम करना होगा
त्वया	कार्ये कर्तव्ये भविष्यतः।	तुम्हें काम करने होंगे
त्वया	कार्याणि कर्तव्यानि भविष्यन्ति।	तुम्हें काम करने होंगे
मया	कार्यं कर्तव्यं भविष्यति।	मुझे काम करना होगा
मया	कार्ये कर्तव्ये भविष्यतः।	मुझे काम करने होंगे
मया	कार्याणि कर्तव्यानि भविष्यन्ति।	मुझे काम करने होंगे

लृङ् लकार

तेन	कार्यं कर्तव्यम् अभविष्यत्।	उसे काम करना होता
तेन	कार्ये कर्तव्ये अभविष्यताम।	उसे काम करने होते
तेन	कार्याणि कर्तव्यानि अभविष्यन्।	उसे काम करने होते
त्वया	कार्यं कर्तव्यम् अभविष्यत्।	तुम्हें काम करना होता
त्वया	कार्ये कर्तव्ये अभविष्यताम्।	तुम्हें काम करने होते
त्वया	कार्याणि कर्तव्यानि अभविष्ययन्।	तुम्हें काम करने होते
मया	कार्यं कर्तव्यम् अभविष्यत्।	मुझे काम करना होता

मया	कार्ये कर्तव्ये अभविष्यताम्।	मुझे काम करने होते
मया	कार्याणि कर्तव्यानि अभविष्यन्।	मुझे काम करने होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. ऊपर के वाक्यों में कर्तव्य शब्द, कार्य शब्द का विशेषण है अतः कार्य शब्द के समान ही कर्तव्य शब्द का नपुंसक लिङ्ग में प्रयोग किया गया है। परन्तु जब कार्य शब्द के स्थान पर अन्य कोई पुलिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग शब्द होगा तो कर्तव्य शब्द का भी तदनुसार ही लिङ्ग बदल जायगा। यथा- पाठः कर्तव्यः अस्ति, पाठौ कर्तव्यौ स्तः, पाठाः कर्तव्याः सन्ति आदि पुलिङ्ग में तथा यात्रा कर्तव्या अस्ति, यात्रे कर्तव्ये स्तः, यात्राः कर्तव्याः सन्ति आदि स्त्रीलिङ्ग में वाक्य बनेंगे।

2. कर्ता के वाचक सभी पदों में एकवचन के ही रूप दिये गये हैं। उनके स्थान पर द्विवचन तथा बहुवचन का भी प्रयोग किया जा सकता है। साथ ही उक्त सर्वनामों के स्थान पर अन्य सर्वनामों का भी प्रयोग करना चाहिये।

3. कर्तव्य शब्द के साथ जब भवति क्रिया का प्रयोग होता है तो उसका ''उसे काम करना होता है, या काम करना पड़ता है'' ऐसा अर्थ करना चाहिये। इसी प्रकार अन्य लकारों में भी प्रयोग करना चाहिये।

12. तव्यत् प्रत्ययान्त प्रेरणार्थक शब्द कारयितव्य से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन	कार्यं कारयितव्यम् अस्ति।	उसे काम कराना है
तेन	कार्ये कारयितव्ये स्तः।	उसे काम कराने हैं
तेन	कार्याणि कारयितव्यानि सन्ति।	उसे काम कराने हैं
त्वया	कार्यं कारयितव्यम् अस्ति।	तुम्हें काम कराना है
त्वया	कार्ये कारयितव्ये स्तः।	तुम्हें काम कराने हैं
त्वया	कार्याणि कारयितव्यानि सन्ति।	तुम्हें काम कराने हैं
मया	कार्यं कारयितव्यम् अस्ति।	मुझे काम कराना है
मया	कार्ये कारयितव्ये स्तः।	मुझे काम कराने हैं
मया	कार्याणि कारयितव्यानि सन्ति।	मुझे काम कराने हैं

लङ् लकार

तेन	कार्यं कारयितव्यम आसीत्।	उसे काम कराना था
तेन	कार्ये कारयितव्ये आस्ताम।	उसे काम कराने थे
तेन	कार्याणि कारयितव्यानि आसन्।	उसे काम कराने थे
त्वया	कार्यं कारयितव्यम् आसीत्।	तुम्हें काम कराना था
त्वया	कार्ये कारयितव्ये आस्ताम्।	तुम्हें काम कराने थे
त्वया	कार्याणि कारयितव्यानि आसन्।	तुम्हें काम कराने थे
मया	कार्ये कारयितव्यम् आसीत्।	मुझे काम कराना था
मया	कार्ये कारयितव्ये आस्ताम्।	मुझे काम कराने थे
मया	कार्याणि कारयितव्यानि आसन्।	मुझे काम कराने थे

लिङ् लकार

तेन	कार्यं कारयितव्यं स्यात्।	उसे काम कराना हो
तेन	कार्ये कारयितव्ये स्याताम्।	उसे काम कराने हों
तेन	कार्याणि कारयितव्यानि स्युः।	उसे काम कराने हों
त्वया	कार्यं कारयितव्यं स्यात्	तुम्हें काम कराना हो
त्वया	कार्ये कारयितव्ये स्याताम्।	तुम्हें काम कराना हों
त्वया	कार्याणि कारयितव्यानि स्युः।	तुम्हें काम कराने हों
मया	कार्यं कारयितव्यं स्यात्।	मुझे काम कराना हो
मया	कार्ये कारयितव्ये स्याताम्।	मुझे काम कराने हों
मया	कार्याणि कांरयितव्यानि स्युः।	मुझे काम कराने हों

लृट् लकार

तेन	कार्यं कारयितव्यं भविष्यति।	उसे काम कराना होगा
तेन	कार्ये कारयितव्ये भविष्यतः।	उसे काम कराने होंगे
तेन	कार्याणि कारयितव्यानि भविष्यन्ति।	उसे काम कराने होंगे
त्वया	कार्यं कारयितव्यं भविष्यति।	तुम्हें काम कराना होगा
त्वया	कार्ये कारयितव्ये भविष्यतः।	तुम्हें काम कराने होंगे

त्वया	कार्याणि कारयितव्यानि भविष्यन्ति।	तुम्हें काम कराने होंगे
मया	कार्यं कारयितव्यं भविष्यति।	मुझे काम कराना होगा
मया	कार्ये कारयितव्ये भविष्यतः।	मुझे काम कराने होंगे
मया	कार्याणि कारयितव्यानि भविष्यन्ति।	मुझे काम कराने होंगे

लृङ् लकार

तेन	कार्यं कारयितव्यम् अभविष्यत्।	उसे काम कराना होता
तेन	कार्ये कारयितव्ये अभविष्यताम।	उसे काम कराने होते
तेन	कार्याणि कारयितव्यानि अभविष्यन्।	उसे काम कराने होते
त्वया	कार्यं कारयितव्यम् अभविष्यत्।	तुम्हें काम कराना होता
त्वया	कार्ये कारयितव्ये अभविष्यताम्।	तुम्हें काम कराने होते
त्वया	कार्याणि कारयितव्यानि अभविष्यन्।	तुम्हें काम कराने होते
मया	कार्यं कारयितव्यम् अभविष्यत्।	मुझे काम कराना होता
मया	कार्ये कारयितव्ये अभविष्यताम्।	मुझे काम कराने होते
मया	कार्याणि कारयितव्यानि अभविष्यन्।	मुझे काम कराने होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. कारयितव्य के समान ही पाठयितव्य, लेखयितव्य, स्थापयितव्य, निवेदयितव्य, ज्ञापयितव्य, दर्शयितव्य, सूचयितव्य, प्रेषयितव्य आदि शब्दों के रूप चलेंगे।

2. अकारान्त होने के कारण इनके पुलिङ्ग रूप बालक शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग रूप विद्या शब्द के समान चलेंगे। यथा- कारयितव्यः कारयितव्यौ, कारयितव्याः (पुं0) कारयितव्या, कारयितव्ये, कारयितव्याः (स्त्री0) कारयितव्यं कारयितव्ये कारयितव्यानि (नपुं0)।

3. पाठयितव्य आदि शब्दों में पाठ, ग्रन्थ, काव्य, लेख, सूचना, कविता वस्तु आदि शब्दों को लगाकर और भी वाक्य बनाने चाहिये।

4. कर्तृवाचक सर्वनाम शब्दों के एकवचन के स्थान पर उनके द्विवचन तथा बहुवचन के रूपों का भी प्रयोग करना चाहिये।

5. कर्तव्य शब्द के समान ही कारयितव्य शब्द के साथ भी भू धातु का प्रयोग करना चाहिये तथा उसका अर्थ कराना होता है, कराना पड़ता है, ऐसा समझना चाहिये।

·13. शानच् प्रत्ययान्त क्रियमाण शब्द से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन	कार्यं क्रियमाणम् अस्ति	उससे काम किया जा रहा है
तेन	कार्ये क्रियमाणे स्तः	उससे काम किये जा रहे हैं
तेन	कार्याणि क्रियमाणानि सन्ति	उससे काम किये जा रहे हैं
त्वया	कार्य क्रियमाणम् अस्ति	तुम से काम किया जा रहा है
त्वया	कार्ये क्रियमाणे स्तः	तुम से काम किये जा रहे हैं
त्वया	कार्याणि क्रियमाणानि सन्ति	तुम से काम किये जा रहे हैं
मया	कार्यं क्रियमाणम् अस्ति	मुझ से काम किया जा रहा है
मया	कार्ये क्रियमाणे स्तः	मुझ से काम किये जा रहे हैं
मया	कार्याणि क्रियमाणानि सन्ति	मुझ से काम किये जा रहे हैं

लङ् लकार

तेन	कार्यं क्रियमाणम् आसीत्	उस से काम किया जा रहा था
तेन	कार्ये क्रियमाणे आस्ताम्	उस से काम किये जा रहे थे
तेन	कार्याणि क्रियमाणानि आसन्	उस से काम किये जा रहे थे
त्वया	कार्यं क्रियमाणम् आसीत्	तुम से काम किया जा रहा था
त्वया	कार्ये क्रियमाणे आस्ताम्	तुम से काम किये जा रहे थे
त्वया	कार्याणि क्रियमाणानि आसन्	तुम से काम किये जा रहे थे
मया	कार्यं क्रियमाणम् आसीत्	मुझ से काम किया जा रहा था
मया	कार्ये क्रियमाणे आस्ताम्	मुझ से काम किये जा रहे थे
मया	कार्याणि क्रियमाणानि आसन्	मुझ से काम किये जा रहे थे

लिङ् लकार

तेन	कार्यं क्रियमाणं स्यात्	उस से काम किया जा रहा हो
तेन	कार्ये क्रियमाणे स्याताम्	उस से काम किये जा रहे हों

तेन	कार्याणि क्रियमाणानि स्युः	उस से काम किये जा रहे हों
त्वया	कार्यं क्रियमाणं स्यात्	तुम से काम किया जा रहा हो
त्वया	कार्ये क्रियमाणे स्याताम्	तुम से काम किये जा रहे हों
त्वया	कार्याणि क्रियमाणानि स्युः	तुम से काम किये जा रहे हों
मया	कार्यं क्रियमाणं स्यात्	मुझ से काम किया जा रहा हो
मया	कार्ये क्रियमाणे स्याताम्।	मुझ से काम किये जा रहे हों
मया	कार्याणि क्रियमाणानि स्युः	मुझ से काम किये जा रहे हों

लृट् लकार

तेन	कार्यं क्रियमाणं भविष्यति	उस से काम किया जा रहा होगा
तेन	कार्ये क्रियमाणे भविष्यतः	उस से काम किये जा रहे होंगे
तेन	कार्याणि क्रियमाणानि भविष्यन्ति	उस से काम किये जा रहे होंगे
त्वया	कार्यं क्रियमाणं भविष्यति	तुम से काम किया जा रहा होगा
त्वया	कार्ये क्रियमाणे भविष्यतः	तुम से काम किये जा रहे होंगे
त्वया	कार्याणि क्रियमाणानि भविष्यन्ति	तुम से काम किये जा रहे होंगे
मया	कार्यं क्रियमाणं भविष्यति	मुझ से काम किया जा रहा होगा
मया	कार्ये क्रियमाणे भविष्यतः	मुझ से काम किये जा रहे होंगे
मया	कार्याणि क्रियमाणानि भविष्यन्ति	मुझ से काम किये जा रहे होंगे

लृङ् लकार

तेन	कार्यं क्रियमाणम् अभविष्यत्	उस से काम किया जा रहा होता
तेन	कार्ये क्रियमाणे अभविष्यताम	उस से काम किये जा रहे होते
तेन	कार्याणि क्रियमाणानि अभविष्यन्	उस से काम किये जा रहे होते
त्वया	कार्यं क्रियमाणम् अभविष्यत्	तुम से काम किया जा रहा होता
त्वया	कार्ये क्रियमाणे अभविष्यताम्	तुम से काम किये जा रहे होते
त्वया	कार्याणि क्रियमाणानि अभविष्ययन	तुम से काम किये जा रहे होते
मया	कार्यं क्रियमाणम् अभविष्यत्	मुझ से काम किया जा रहा होता

मया	कार्ये क्रियमाणे अभविष्यताम्	मुझ से काम किये जा रहे होते
मया	कार्याणि क्रियमाणानि अभविष्यन्	मुझ से काम किये जा रहे होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. क्रियमाण के समान ही पठ्यमान (पढ़ा जा रहा) लिख्यमान (लिखा जा रहा) कथ्यमान (कहा जा रहा) श्रूयमाण (सुना जा रहा) दीयमान (दिया जा रहा) दृश्यमान (दिखा जा रहा) आदि शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाने चाहिये। यथा- पुस्तकं पठ्यमान अस्ति, पुस्तके पठ्यमाने स्तः, पुस्तकानि पठ्यमानानि सन्ति। पत्रं लिख्यमानम् अस्ति, पत्रे लिख्यमाने स्तः, पत्राणि लिख्यमानानि सन्ति इत्यादि।

2. अकारान्त होने के कारण इनके रूप पूर्ववत् पुलिङ्ग में बालक शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग में विद्या शब्द के समान होंगे।

3. सन्नन्त चिकीर्ष्यमाण (करना चाहा जा रहा) आदि शब्दों के रूप भी इसी प्रकार चलेंगे तथा विशेष्य शब्दों के साथ इनके प्रयोग निम्नलिखित रूप में होंगे-

कार्यं चिकीर्ष्यमाणम् अस्ति, कार्ये चिकीर्ष्यमाणे स्तः, कार्याणि चिकीर्ष्यमाणानि सन्ति।

15. शानच् प्रत्ययान्त प्रेरणार्थक शब्द कार्यमाण से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन	कार्यं कार्यमाणम् अस्ति।	उससे काम कराया जा रहा है
तेन	कार्ये कार्यमाणे स्तः।	उससे काम कराये जा रहे हैं
तेन	कार्याणि कार्यमाणानि सन्ति।	उससे काम कराये जा रहे हैं
त्वया	कार्यं कार्यमाणम् अस्ति।	तुम से काम कराया जा रहा है
त्वया	कार्ये कार्यमाणे स्तः।	तुम से काम कराये जा रहे हैं
त्वया	कार्याणि कार्यमाणानि सन्ति।	तुम से काम कराये जा रहे हैं
मया	कार्यं कार्यमाणम् अस्ति।	मुझ से काम कराया जा रहा है
मया	कार्ये कार्यमाणे स्तः।	मुझ से काम कराये जा रहे हैं
मया	कार्याणि कार्यमाणानि सन्ति।	मुझ से काम कराये जा रहे हैं

लङ् लकार

तेन	कार्यं कार्यमाणम् आसीत्।	उस से काम कराया जा रहा था
तेन	कार्ये कार्यमाणे आस्ताम्।	उस से काम कराये जा रहे थे
तेन	कार्याणि कार्यमाणानि आसन्।	उस से काम कराये जा रहे थे
त्वया	कार्यं कार्यमाणम् आसीत्।	तुम से काम कराया जा रहा था
त्वया	कार्ये कार्यमाणे आस्ताम्।	तुम से काम कराये जा रहे थे
त्वया	कार्याणि कार्यमाणानि आसन्।	तुम से काम कराये जा रहे थे
मया	कार्यं कार्यमाणम् आसीत्।	मुझ से काम कराया जा रहा था
मया	कार्ये कार्यमाणे आस्ताम्।	मुझ से काम कराये जा रहे थे
मया	कार्याणि कार्यमाणानि आसन्।	मुझ से काम कराये जा रहे थे

लिङ् लकार

तेन	कार्यं कार्यमाणं स्यात्।	उस से काम कराया जा रहा हो
तेन	कार्ये कार्यमाणे स्याताम्।	उस से काम कराये जा रहे हों
तेन	कार्याणि कार्यमाणानि स्युः।	उस से काम कराये जा रहे हों
त्वया	कार्यं कार्यमाणं स्यात्।	तुम से काम कराया जा रहा हो
त्वया	कार्ये कार्यमाणे स्याताम्।	तुम से काम कराये जा रहे हों
त्वया	कार्याणि कार्यमाणानि स्युः।	तुम से काम कराये जा रहे हों
मया	कार्यं कार्यमाणं स्यात्	मुझ से काम कराया जा रहा हो
मया	कार्ये कार्यमाणे स्याताम्।	मुझ से काम कराये जा रहे हों
मया	कार्याणि कार्यमाणानि स्युः।	मुझ से काम कराये जा रहे हों

लृट् लकार

तेन	कार्यं कार्यमाणं भविष्यति	उस से काम कराया जा रहा होगा
तेन	कार्ये कार्यमाणे भविष्यतः	उस से काम कराये जा रहे होंगे
तेन	कार्याणि कार्यमाणानि भविष्यन्ति	उस से काम कराये जा रहे होंगे
त्वया	कार्यं कार्यमाणं भविष्यति	तुम से काम कराया जा रहा होगा

त्वया	कार्ये कार्यमाणे भविष्यतः	तुम से काम कराये जा रहे होंगे
त्वया	कार्याणि कार्यमाणानि भविष्यन्ति	तुम से काम कराये जा रहे होंगे
मया	कार्यं कार्यमाणं भविष्यति	मुझ से काम कराया जा रहा होगा
मया	कार्ये कार्यमाणे भविष्यतः	मुझ से काम कराये जा रहे होंगे
मया	कार्याणि कार्यमाणानि भविष्यन्ति	मुझ से काम कराये जा रहे होंगे

लृङ् लकार

तेन	कार्यं कार्यमाणम् अभविष्यत्	उस से काम कराया जा रहा होता
तेन	कार्ये कार्यमाणे अभविष्यताम	उस से काम कराये जा रहे होते
तेन	कार्याणि कार्यमाणानि अभविष्यन्	उस से काम कराये जा रहे होते
त्वया	कार्यं कार्यमाणम् अभविष्यत्	तुम से काम कराया जा रहा होता
त्वया	कार्ये कार्यमाणे अभविष्यताम्	तुम से काम कराये जा रहे होते
त्वया	कार्याणि कार्यमाणानि अभविष्यन्	तुम से काम कराये जा रहे होते
मया	कार्यं कार्यमाणम् अभविष्यत्	मुझ से काम कराया जा रहा होता
मया	कार्ये कार्यमाणे अभविष्यताम्	मुझ से काम कराये जा रहे होते
मया	कार्याणि कार्यमाणानि अभविष्यन्	मुझ से काम कराये जा रहे होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. कार्यमाण के समान ही पाठ्यमान (पढ़ाया जा रहा) लेख्यमान (लिखाया जा रहा) दर्श्यमाण (दिखाया जा रहा) श्राव्यमाण (सुनाया जा रहा) ज्वाल्यमान (जलाया जा रहा) निर्वाप्यमाण (बुझाया जा रहा) स्थाप्यमान (रखाया जा रहा) आदि शब्दों के भी प्रयोग करने चाहिये।

2. अकारान्त होने के कारण उपर्युक्त शब्दों के पुलिङ्ग के रूप बालक के समान तथा स्त्रीलिङ्ग के रूप विद्या के समान चलेंगे। विशेष शब्दों के साथ इनके प्रयोग निम्नलिखित रूप से होंगे-

ग्रन्थः पाठ्यमानः अस्ति, कौमुदी पाठ्यमाना अस्ति, संस्कृतं पाठ्यमानम् अस्ति। श्लोकः लेख्यमानः अस्ति, पत्रिका लेख्यमाना अस्ति, पत्रं लेख्यमानम् अस्ति। कथा श्राव्यमाणा अस्ति, दीपकः ज्वाल्यमानः अस्ति, निर्वाप्यमाणः अस्ति इत्यादि।

14. भविष्यत्कालिक स्यमान प्रत्ययान्त करिष्यमाण शब्द से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन	कार्यं करिष्यमाणम् अस्ति।	उससे काम किया जाने वाला है
तेन	कार्ये करिष्यमाणे स्तः।	उससे काम किये जाने वाले हैं
तेन	कार्याणि करिष्यमाणानि सन्ति।	उससे काम किये जाने वाले हैं
त्वया	कार्यं करिष्यमाणम् अस्ति।	तुम से काम किया जाने वाला है
त्वया	कार्ये करिष्यमाणे स्तः।	तुम से काम किये जाने वाले हैं
त्वया	कार्याणि करिष्यमाणानि सन्ति।	तुम से काम किये जाने वाले हैं
मया	कार्यं करिष्यमाणम् अस्ति।	मुझ से काम किया जाने वाला है
मया	कार्ये करिष्यमाणे स्तः।	मुझ से काम किये जाने वाले हैं
मया	कार्याणि करिष्यमाणानि सन्ति।	मुझ से काम किये जाने वाले हैं

लङ् लकार

तेन	कार्यं करिष्यमाणम् आसीत्।	उस से काम किया जाने वाला था
तेन	कार्ये करिष्यमाणे आस्ताम्।	उस से काम किया जाने वाले थे
तेन	कार्याणि करिष्यमाणानि आसन्।	उस से काम किये जाने वाले थे
त्वया	कार्यं करिष्यमाणम् आसीत्।	तुम से काम किया जाने वाला था
त्वया	कार्यं करिष्यमाणे आस्ताम्।	तुम से काम किये जाने वाले थे
त्वया	कार्याणि करिष्यमाणानि आसन्।	तुम से काम किये जाने वाले थे
मया	कार्यं करिष्यमाणम् आसीत्।	मुझ से काम किये जाने वाला था
मया	कार्यं करिष्यमाणे आस्ताम्।	मुझ से काम किये जाने वाले थे
मया	कार्याणि करिष्यमाणानि आसन्।	हम सब से काम किये जाने वाले थे

लिङ् लकार

तेन	कार्यं करिष्यमाणं स्यात्।	उस से काम किया जाने वाला हो
तेन	कार्यं करिष्यमाणे स्याताम्।	उस से काम किये जाने वाले हों

तेन	कार्याणि करिष्यमाणानि स्युः।	उस से काम किये जाने वाले हों
त्वया	कार्यं करिष्यमाणं स्यात्।	तुम से काम किया जाने वाला हो
त्वया	कार्यं करिष्यमाणे स्याताम्।	तुम से काम किये जाने वाले हों
त्वया	कार्याणि करिष्यमाणानि स्युः।	तुम से काम किये जाने वाले हों
मया	कार्यं करिष्यमाणं स्यात्	मुझ से काम किया जाने वाला हो
मया	कार्यं करिष्यमाणे स्याताम्।	मुझ से काम किये जाने वाले हों
मया	कार्याणि करिष्यमाणानि स्युः।	मुझ से काम किये जाने वाले हों

लृट् लकार

तेन	कार्यं करिष्यमाणं भविष्यति	उस से काम किया जाने वाला होगा
तेन	कार्ये करिष्यमाणे भविष्यतः	उस से काम किये जाने वाले होंगे
तेन	कार्याणि करिष्यमाणानि भविष्यन्ति	उस से काम किये जाने वाले होंगे
त्वया	कार्यं करिष्यमाणं भविष्यति	तुम से काम किया जाने वाला होगा
त्वया	कार्ये करिष्यमाणे भविष्यतः	तुम से काम किये जाने वाले होंगे
त्वया	कार्याणि करिष्यमाणानि भविष्यन्ति	तुम से काम किये जाने वाले होंगे
मया	कार्यं करिष्यमाणं भविष्यति	मुझ से काम किया जाने वाला होगा
मया	कार्ये करिष्यमाणे भविष्यतः	मुझ से काम किये जाने वाले होंगे
मया	कार्याणि करिष्यमाणानि भविष्यन्ति	मुझ से काम किये जाने वाले होंगे

लृङ् लकार

तेन	कार्यं करिष्यमाणम् अभविष्यत्	उस से काम किया जाने वाला होता
तेन	कार्ये करिष्यमाणे अभविष्यताम	उस से काम किये जाने वाले होते
तेन	कार्याणि करिष्यमाणानि अभविष्यन्	उस से काम किये जाने वाले होते
त्वया	कार्यं करिष्यमाणम् अभविष्यत्	तुम से काम किया जाने वाला होता
त्वया	कार्ये करिष्यमाणे अभविष्यताम्	तुम से काम किये जाने वाले होते
त्वया	कार्याणि करिष्यमाणानि अभविष्यन्	तुम से काम किये जाने वाले होते
मया	कार्यं करिष्यमाणम् अभविष्यत्	मुझ से काम किया जाने वाला होता

मया	कार्ये करिष्यमाणे अभविष्यताम्	तुम से काम किये जाने वाले होते
मया	कार्याणि करिष्यमाणानि अभविष्यन्	तुम से काम किये जाने वाले होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. करिष्यमाण शब्द के समान ही पठिष्यमाण (पढ़ा जाने वाला) लेखिष्यमाण (लिखा जाने वाला) वक्ष्यमाण (कहा जाने वाला) श्रोष्यमाण (सुना जाने वाला) द्रक्ष्यमाण (देखा जाने वाला) प्रारप्स्यमान (प्रारंभ किया जाने वाला) आदि शब्दों का भी तदनुरूप संज्ञाशब्दों के साथ प्रयोग करना चाहिये।

2. अकारान्त होने के कारण इन शब्दों के पुलिङ्ग के रूप बालक शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग के रूप विद्या के समान चलेंगे। विशेष्य शब्दों के साथ इनके प्रयोग निम्नलिखित रूप से होंगे।

3. किं पठिष्यमाणम् अस्ति? पत्रं कदा लेखिष्यमाणम् अस्ति? अद्य पाठः प्रारप्स्यमाणः अस्ति, श्वः चलचित्रं द्रक्ष्यमाणम् अस्ति, अद्य क्रीडासमान्चारः श्रोष्यमाणः अस्ति इत्यादि।

16. स्यमान प्रत्ययान्त प्रेरणार्थक शब्द कारयिष्यमाण से बने कर्मवाच्य के क्रियारूप

लट् लकार

तेन	कार्यं कारयिष्यमाणम् अस्ति।	उससे काम कराया जाने वाला है
तेन	कार्ये कारयिष्यमाणे स्तः।	उससे काम कराये जाने वाले हैं
तेन	कार्याणि कारयिष्यमाणानि सन्ति।	उस से काम कराये जाने वाले हैं
त्वया	कार्यं कारयिष्यमाणम् अस्ति।	तुम से काम कराया जाने वाला है
त्वया	कार्ये कारयिष्यमाणे स्तः।	तुम से काम कराये जाने वाले हैं
त्वया	कार्याणि कारयिष्यमाणानि सन्ति।	तुम से काम कराये जाने वाले हैं
मया	कार्यं कारयिष्यमाणम् अस्ति।	मुझ से काम कराया जाने वाला है
मया	कार्ये कारयिष्यमाणे स्तः।	मुझ से काम कराये जाने वाले हैं
मया	कार्याणि कारयिष्यमाणानि सन्ति।	मुझ से काम कराये जाने वाले हैं

लङ् लकार

तेन	कार्यं कारयिष्यमाणम् आसीत्।	उस से काम कराया जाने वाला था
तेन	कार्ये कारयिष्यमाणे आस्ताम्।	उस से काम कराये जाने वाले थे
तेन	कार्याणि कारयिष्यमाणानि आसन्।	उस से काम कराये जाने वाले थे
त्वया	कार्यं कारयिष्यमाणम् आसीत्।	तुम से काम कराया जाने वाला था
त्वया	कार्ये कारयिष्यमाणे आस्ताम्।	तुम से काम कराये जाने वाले थे
त्वया	कार्याणि कारयिष्यमाणानि आसन्।	तुम से काम कराये जाने वाले थे
मया	कार्यं कारयिष्यमाणम् आसीत्।	मुझ से काम कराया जाने वाला था
मया	कार्ये कारयिष्यमाणे आस्ताम्।	मुझ से काम कराये जाने वाले थे
मया	कार्याणि कारयिष्यमाणानि आसन्।	मुझ से काम कराये जाने वाले थे

लिङ् लकार

तेन	कार्यं कारयिष्यमाणं स्यात्।	उस से काम कराया जाने वाला हो
तेन	कार्ये कारयिष्यमाणे स्याताम्।	उस से काम कराये जाने वाले हों
तेन	कार्याणि कारयिष्यमाणानि स्युः।	उस से काम कराये जाने वाले हों
त्वया	कार्यं कारयिष्यमाणं स्यात्।	तुम से काम कराया जाने वाला हो
त्वया	कार्ये कारयिष्यमाणे स्याताम्।	तुम से काम कराये जाने वाले हों
त्वया	कार्याणि कारयिष्यमाणानि स्युः।	तुम से काम कराये जाने वाले हों
मया	कार्यं कारयिष्यमाणं स्यात्	मुझ से काम कराया जाने वाला हो
मया	कार्ये कारयिष्यमाणे स्याताम्।	मुझ से काम कराये जाने वाले हों
मया	कार्याणि कारयिष्यमाणानि स्युः।	मुझ से काम कराये जाने वाले हों

लृट् लकार

तेन	कार्यं कारयिष्ययमाणं भविष्यति	उस से काम कराया जाने वाला होगा
तेन	कार्ये कारयिष्यमाणे भविष्यतः	उस से काम कराये जाने वाले होंगे
तेन	कार्याणि कारयिष्यमाणानि भविष्यन्ति	उस से काम कराये जाने वाले होंगे
त्वया	कार्यं कारयिष्यमाणं भविष्यति	तुम से काम कराया जाने वाला होगा

त्वया	कार्ये कारयिष्यमाणे भविष्यतः	तुम से काम कराये जाने वाले होंगे
त्वया	कार्याणि कारयिष्यमाणानि भविष्यन्ति	तुम से काम कराये जाने वाले होंगे
मया	कार्यं कारयिष्यमाणं भविष्यति	मुझ से काम कराया जाने वाला होगा
मया	कार्ये कारयिष्यमाणे भविष्यतः	मुझ से काम कराये जाने वाले होंगे
मया	कार्याणि कारयिष्यमाणानि भविष्यन्ति	मुझ से काम कराये जाने वाले होंगे

लृङ् लकार

तेन	कार्यं कारयिष्यमाणम् अभविष्यत्	उस से काम कराया जाने वाला होता
तेन	कार्ये कारयिष्यमाणे अभविष्यताम	उस से काम कराये जाने वाले होते
तेन	कार्याणि कारयिष्यमाणानि अभविष्यन्	उस से काम कराये जाने वाले होते
त्वया	कार्यं कारयिष्यमाणम् अभविष्यत्	तुम से काम कराया जाने वाला होता
त्वया	कार्ये कारयिष्यमाणे अभविष्यताम्	तुम से काम कराये जाने वाले होते
त्वया	कार्याणि कारयिष्यमाणानि अभविष्यन्	तुम से काम कराये जाने वाले होते
मया	कार्यं कारयिष्यमाणम् अभविष्यत्	मुझ से काम कराया जाने वाला होता
मया	कार्ये कारयिष्यमाणे अभविष्यताम्	मुझ से काम कराये जाने वाले होते
मया	कार्याणि कारयिष्यमाणानि अभविष्यन्	मुझ से काम कराये जाने वाले होते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. कारयिष्यमाण के समान ही पाठयिष्यमाण (पढ़ाया जाने वाला) लेखयिष्यमाण (लिखाया जाने वाला) प्रापयिष्यमाण (पहुँचाया जाने वाला) समापयिष्यमाण (समाप्त कराया जाने वाला) उत्थापयिष्यमाण (उठाया जाने वाला) प्रसारयिष्यमाण (पसारा जाने वाला) आदि शब्दों से भी तदनुरूप संज्ञा शब्द के साथ वाक्य बनाने चाहिये।

2. अकारान्त होने के कारण इन शब्दों के भी पुंलिङ्ग के रूप बालक शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग के रूप विद्या के समान चलेंगे। विशेष्य शब्दों के साथ इनके प्रयोग निम्नलिखित रूप से होंगे-

वेदः पाठयिष्यमाणः अस्ति, गीता पाठयिष्यमाणा अस्ति, रघुवंशं पाठयिष्यमाणम् अस्ति। अनुवादः लेखयिष्यमाणः अस्ति, कविता लेखयिष्यमाणा अस्ति, पत्रं लेखयिष्यमाणम् अस्ति।

तीन आवश्यक सूचनायें

1. पिछले कृदन्त प्रकरण में कुर्वत् शब्द को छोड़कर शेष सभी कृत्प्रत्ययान्त शब्दों के साथ केवल अस धातु का ही प्रयोग किया गया है, भू धातु का प्रयोग नहीं किया गया है। परन्तु यदि क्रिया में निरन्तरता का बोध कराना हो तो उसके स्थान पर सभी क्रिया पदों में भू एवं स्था धातु का प्रयोग करना चाहिये तथा अस् या भू धातु के लगाने से जो अर्थ एवं अभिप्राय में भेद होता है उस पर अच्छी तरह ध्यान देना चाहिये। उदाहरणार्थ कुछ वाक्य नीचे दिये जा रहे हैं-

कर्तृवाच्य के रूप

सः	कार्यं कुर्वन् अस्ति	वह काम कर रहा है
सः	" कुर्वन् भवित	वह काम कर रहा होता है, करता रहता है
सः	" कारयन् अस्ति	वह काम करा रहा है
सः	" कारयन् भवति	वह काम रहा होता है, कराता रहता है
सः	" करिष्यन् अस्ति	वह काम करने वाला है
सः	" करिष्यन् भवति	वह काम करने वाला होता है, रहता है
सः	" कृतवान् अस्ति	उसने काम किया है
सः	" कृतवान् भवति	वह काम किया होता है, रहता है
सः	" चिकीर्षन् अस्ति	वह काम करना चाह रहा है
सः	" चिकीर्षन् भवति	वह काम करना चाहता रहता है

कर्मवाच्य के रूप

तेन	कार्य कर्तव्यम् अस्ति	उसे काम करना है
तेन	" कर्तव्यं भवति	उसे काम करना होता है, पड़ता है
तेन	" कारयितव्यम् अस्ति	उसे काम कराना है
तेन	" कारयितव्यं भवति	उसे काम कराना होता है, पड़ता है
तेन	" कृतम् अस्ति	उस से काम किया गया है
तेन	" कृतं भवति	उस से काम किया गया होता है
तेन	" कारितम् अस्ति	उसे से काम कराया गया है

तेन	'' कारितं भवति	उस से काम कराया गया होता है
तेन	'' क्रियमाणम् अस्ति	उस से काम किया जा रहा है
तेन	'' क्रियमाणं भवति	उस से काम किया जा रहा होता है
तेन	'' करिष्यमाणम् अस्ति	उस से काम किया जाने वाला है
तेन	'' करिष्यमाणं भवति	उस से काम किया जाने वाला होता है

अन्य ज्ञातव्य विषय

2. ऊपर के वाक्यों में केवल लट् लकार का ही प्रयोग किया गया है, इसी प्रकार अन्य लकारों में भी अस् एवं भू का अलग-अलग प्रयोग कर अलग-अलग अर्थ समझने-समझाने का अभ्यास कर लेना चाहिये।

3. ऊपर के वाक्यों में केवल कृ धातु का ही प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार अन्य धातुओं का भी प्रयोग करना चाहिये। यथा- सः पाठं पठन् अस्ति। सः पाठं पठन् भवति। तेन पाठः पठितव्यः, अस्ति, तेन पाठः पठितव्यः भवति इत्यादि।

निमित्तार्थक तुमुन् प्रत्ययान्त पदों के साथ इष्, शक्, ज्ञा, दा, लभ्, लग् आ-या धातुओं के योग से बनने वाले क्रियारूपों के उदाहरण

17. तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ इषु धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् इच्छति	वह काम करना चाहता है
तौ	कार्यं कर्तुम् इच्छतः	वे दोनों काम करना चाहते हैं
ते	कार्यं कर्तुम् इच्छन्ति	वे लोग काम करना चाहते हैं
त्वं	कार्यं कर्तुम् इच्छसि	तुम काम करना चाहते हो
युवां	कार्यं कर्तुम् इच्छथः	तुम दोनों काम करना चाहते हो
यूयं	कार्यं कर्तुम् इच्छथ	तुम लोग काम करना चाहते हो
अहं	कार्यं कर्तुम् इच्छामि	मैं काम करना चाहता हूँ
आवां	कार्यं कर्तुम् इच्छावः	हम दोनों काम करना चाहते हैं
वयं	कार्यं कर्तुम् इच्छामः	हम लोग काम करना चाहते हैं।

लङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् ऐच्छत्	उसने काम करना चाहा
तौ	कार्यं कर्तुम् ऐच्छताम्	उन दोनों ने काम करना चाहा
ते	कार्यं कर्तुम् ऐच्छन्	उन लोगों ने काम करना चाहा
त्वं	कार्यं कर्तुम् ऐच्छः	तुमने काम करना चाहा
युवां	कार्यं कर्तुम् ऐच्छतम्	तुम दोनों ने काम करना चाहा
यूयं	कार्यं कर्तुम् ऐच्छत	तुम लोगों ने काम करना चाहा
अहं	कार्यं कर्तुम् ऐच्छम्	मैंने काम करना चाहा
आवां	कार्यं कर्तुम् ऐच्छाव	हम दोनों ने काम करना चाहा
वयं	कार्यं कर्तुम् ऐच्छाम	हम सबने काम करना चाहा

लिङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् इच्छेत्	वह काम करना चाहे
तौ	कार्यं कर्तुम् इच्छेताम्	वे दोनों काम करना चाहें
ते	कार्यं कर्तुम् इच्छेयुः	वे लोग काम करना चाहें

त्वं	कार्यं कर्तुम् इच्छेः	तुम काम करना चाहो
युवां	कार्यं कर्तुम् इच्छेतम्	तुम दोनों काम करना चाहें
यूयं	कार्यं कर्तुम् इच्छेत्	तुम लोग काम करना चाहें
अहं	कार्यं कर्तुम् इच्छेयम्	मैं काम करना चाहा
आवां	कार्यं कर्तुम् इच्छेव	हम दोनों काम करना चाहें
वयं	कार्यं कर्तुम् इच्छेम	हम लोग काम करना चाहें

लृट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् एषिष्यति	वह काम करना चाहेगा।
तौ	कार्यं कर्तुम् एषिष्यतः	वे दोनों काम करना चाहेंगे।
ते	कार्यं कर्तुम् एषिष्यन्ति	वे लोग काम करना चाहेंगे।
त्वं	कार्यं कर्तुम् एषिष्यसि	तुम काम करना चाहोगे
युवां	कार्यं कर्तुम् एषिष्यथः	तुम दोनों काम करना चाहोगे।
यूयं	कार्यं कर्तुम् एषिष्यथ	तुम लोग काम करना चाहोगे।
अहं	कार्यं कर्तुम् एषिष्यामि	मैं काम करना चाहूँगा।
आवां	कार्यं कर्तुम् एषिष्यावः	हम दोनों काम करना चाहेंगे
वयं	कार्यं कर्तुम् एषिष्यामः	हम सब काम करना चाहेंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यत्	वह काम करना चाहता
तौ	कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यताम्	वे दोनों काम करना चाहते
ते	कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यन्	वे लोग काम करना चाहते
त्वं	कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यः	तुम काम करना चाहते
युवां	कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यतम्ः	तुम दोनों काम करना चाहते
यूयं	कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यत	तुम लोग काम करना चाहते
अहं	कार्यं कर्तुम् ऐषिष्यम्	मैं काम करना चाहता
आवां	कार्यं कर्तुम् ऐषिष्याव	हम दोनों काम करना चाहते
वयं	कार्यं कर्तुम् ऐषिष्याम	हम सब काम करना चाहते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. 'इच्छति' के स्थान पर सभी इच्छार्थक अन्य क्रियाओं का भी प्रयोग करना चाहिये। यथा- अभिलषति, कामयते, वाञ्छति, ईहते, समीहते इत्यादि।

2. कर्तुं के स्थान पर ''कारयिंतु'' इस प्रेरणार्थक पद का भी प्रयोग करना चाहिये यथा- सः कार्यं कारयितुम् इच्छति- वह काम कराना चाहता है।

3. कर्तुं कारयितुं के समान ही पठितुं, पाठयितुं, लेखितुं, लेखयितुं, श्रोतुं श्रावयितुं, द्रष्टुं दर्शयितुं आदि पदों का भी इष धातु के साथ प्रयोग करना चाहिये। यथा

सः पाठं पठितुं, पाठयितुम् इच्छति	वह पाठ पढ़ना, पढ़ाना चाहता है
सः लेखं लिखितुं, लेखयितुम् इच्छति	वह लेख लिखना, लिखाना चाहता है
सः गीतं श्रोतुं, श्रावयितुम् इच्छति	वह गीत सुनना, सुनाना चाहता है
सः दृश्यं द्रष्टुं, दर्शयितुम् इच्छति	वह दृश्य देखना, दिखाना चाहता है

18. तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ शक् धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् शक्नोति।	वह काम कर सकता है
तौ	कार्यं कर्तुम् शक्नुतः।	वे दोनों काम कर सकते हैं
ते	कार्यं कर्तुम् शक्नुवन्ति।	वे लोग काम कर सकते हैं
त्वं	कार्यं कर्तुम् शक्नोसि।	तुम काम कर सकते हो
युवां	कार्यं कर्तुम् शक्नुथः।	तुम दोनों काम कर सकते हो
यूयं	कार्यं कर्तुम् शक्नुथ।	तुम लोग काम कर सकते हो
अहं	कार्यं कर्तुम् शक्नोमि।	मैं काम कर सकता हूँ
आवां	कार्यं कर्तुम् शक्नुवः।	हम दोनों काम कर सकते हैं
वयं	कार्यं कर्तुम् शक्नुमः।	हम लोग काम कर सकते हैं।

लङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् अशक्नोत्।	वह काम कर सका
तौ	कार्यं कर्तुम् अशक्नुताम्।	वे दोनों काम कर सके

ते	कार्यं कर्तुम् अशक्नुवन्।	वे लोग काम कर सके
त्वं	कार्यं कर्तुम् अशक्नोः।	तुम काम कर सके
युवां	कार्यं कर्तुम् अशक्नुतम्।	तुम दोनों काम कर सके
यूयं	कार्यं कर्तुम् अशक्नुत।	तुम लोग काम कर सके
अहं	कार्यं कर्तुम् अशक्नवम्।	मैं काम कर सका
आवां	कार्यं कर्तुम् अशक्नुव।	हम दोनों काम कर सके
वयं	कार्यं कर्तुम् अशक्नुम।	हम लोग काम कर सके

लङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् शक्नुयात्।	वह काम कर सके
तौ	कार्यं कर्तुम् शक्नुयाताम्।	वे दोनों काम कर सकें
ते	कार्यं कर्तुम् शक्नुयुः।	वे लोग काम कर सकें
त्वं	कार्यं कर्तुम् शक्नुयाः।	तुम काम कर सको
युवां	कार्यं कर्तुम् शक्नुयातम्।	तुम दोनों काम कर सको
यूयं	कार्यं कर्तुम् शक्नुयात।	तुम लोग काम कर सको
अहं	कार्यं कर्तुम् शक्नुयाम्।	मैं काम कर सकूँ
आवां	कार्यं कर्तुम् शक्नुयाव।	हम दोनों काम कर सकें
वयं	कार्यं कर्तुम् शक्नुयाम।	हम लोग काम कर सकें

लृट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यति।	वह काम कर सकेगा
तौ	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यतः।	वे दोनों काम कर सकेंगे
ते	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यन्ति।	वे लोग काम कर सकेंगे
त्वं	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यसि।	तुम काम कर सकोगे
युवां	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यथः।	तुम दोनों काम कर सकोगे
यूयं	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यथ।	तुम लोग काम कर सकोगे
अहं	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यामि।	मैं काम कर सकूँगा

आवां	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यावः।	हम दोनों काम कर सकेंगे
वयं	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यामः।	हम सब काम कर सकेंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यत्।	वह काम कर सकता
तौ	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यताम्।	वे दोनों काम कर सकते
ते	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यन्।	वे लोग काम कर सकते
त्वं	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यः।	तुम काम कर सकते
युवां	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यतम्।	तुम दोनों काम कर सकते
यूयं	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यत।	तुम लोग काम कर सकते
अहं	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यम्।	मैं काम कर सकता
आवां	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्याव।	हम दोनों काम कर सकते
वयं	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्याम।	हम लोग काम कर सकते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. ''शक्नोति'' के स्थान पर ''क्षमते'' का भी प्रयोग करना चाहिये।

2. कर्तु के स्थान पर प्रेरणार्थक ''कारयितुं'' पद का प्रयोग कर ''सः कार्यं कारयितुं शक्नोति- वह काम कर सकता है'' इत्यादि सभी लकारों में वाक्य बनाने चाहिये।

3. कर्मवाच्य में ''तेन कार्यं कर्तुं- शक्यते, अशक्यत, शक्येत, शक्ष्यते, अशक्ष्यत'' आदि रूपों का प्रयोग करना चाहिये।

4. कर्तु के स्थान पर प्रेरणार्थक ''कारयितु'' का प्रयोग कर ''तेन कार्यं कारयितुं शक्यते- उससे काम कराया जा सकता है'' इत्यादि वाक्य बनाने चाहिये। इस प्रकार के वाक्य सभी लकारों में बनाने चाहिये।

19. तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ ज्ञा धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् जानाति।	वह काम करना जानता है
तौ	कार्यं कर्तुम् जानीतः।	वे दोनों काम करना जानते हैं

ते	कार्यं कर्तुम् जानन्ति।	वे लोग काम करना जानते हैं
त्वं	कार्यं कंर्तुम् जानासि।	तुम काम करना जानते हो
युवां	कार्यं कर्तुम् जानीथः।	तुम दोनों काम करना जानते हो
यूयं	कार्यं कर्तुम् जानीथ।	तुम लोग काम करना जानते हो
अहं	कार्यं कर्तुम् जानामि।	मैं काम करना जानता हूँ
आवां	कार्यं कर्तुम् जानीवः।	हम दोनों काम करना जानते हैं
वयं	कार्यं कर्तुम् जानीमः।	हम लोग काम करना जानते हैं।

लङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् अजानात्।	वह काम करना जाना
तौ	कार्यं कर्तुम् अजानीताम्।	वे दोनों काम करना जाने
ते	कार्यं कर्तुम् अजानन्।	वे लोग काम करना जाने
त्वं	कार्यं कर्तुम् अजानाः।	तुमने काम करना जाना
युवां	कार्यं कर्तुम् आजनीतम्।	तुम दोनों काम करना जाने
यूयं	कार्यं कर्तुम् अजानीत।	तुम लोग काम करना जाने
अहं	कार्यं कर्तुम् अजानाम्।	मैंने काम करना जाना
आवां	कार्यं कर्तुम् अजानीव।	हम दोनों काम करना जाने
वयं	कार्यं कर्तुम् अजानीम।	हम लोग काम करना जाने

लिङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् जानीयत्।	वह काम करना जाने
तौ	कार्यं कर्तुम् जानीयाताम्।	वे दोनों काम करना जानें
ते	कार्यं कर्तुम् जानीयुः।	वे लोग काम करना जानें
त्वं	कार्यं कर्तुम् जानीथाः।	तुम काम करना जानो
युवां	कार्यं कर्तुम् जानीयातम्।	तुम दोनों काम करना जानो
यूयं	कार्यं कर्तुम् जानीयात।	तुम लोग काम करना जानो

अहं	कार्यं कर्तुम् जानीयाम्।	मैं काम कर जानूँ
आवां	कार्यं कर्तुम् जानीयाव।	हम दोनों काम करना जानें
वयं	कार्यं कर्तुम् जानीयाम।	हम लोग काम करना जाने

लृट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् ज्ञास्यति।	वह काम करना जानेगा
तौ	कार्यं कर्तुम् ज्ञास्यतः।	वे दोनों काम करना जानेंगे
ते	कार्यं कर्तुम् ज्ञास्यति।	वे लोग काम करना जानेंगे
त्वं	कार्यं कर्तुम् ज्ञास्यसि।	तुम काम करना जानोगे
युवां	कार्यं कर्तुम् ज्ञास्यथः।	तुम दोनों काम कराना जानोगे
यूयं	कार्यं कर्तुम् ज्ञास्यथ।	तुम लोग काम करना जानोगे
अहं	कार्यं कर्तुम् ज्ञास्यामि।	मैं काम करना जानूँगा
आवां	कार्यं कर्तुम् ज्ञास्यावः।	हम दोनों काम करना जानेंगे
वयं	कार्यं कर्तुम् ज्ञास्यामः।	हम सब काम करना जानेंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यत्।	वह काम करना जानता
तौ	कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यताम्।	वे दोनों काम करना जानते
ते	कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यन्।	वे लोंग काम करना जानते
त्वं	कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यः।	तुम काम करना जानते
युवां	कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यतम्।	तुम दोनों काम करना जानते
यूयं	कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यत।	तुम लोग काम करना जानते
अहं	कार्यं कर्तुम् अज्ञास्यम्।	मैं काम करना जानता
आवां	कार्यं कर्तुम् अज्ञास्याव।	हम दोनों काम करना जानते
वयं	कार्यं कर्तुम् अज्ञास्याम।	हम लोग काम करना जानते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. ''जानाति'' के स्थान पर ''वेत्ति, अवगच्छति, बुध्यते'' आदि क्रियारूपों का भी प्रयोग करना चाहिये।

2. कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक ''कारयितुं'' पद का प्रयोग कर ''सः कार्यं कारयितुं जानाति- वह काम कराना जानता है'' ऐसे वाक्यों को सभी लकारों में बनाना चाहिये।

3. कर्मवाच्य में ''तेन कार्यं कर्तुं-ज्ञायते, अज्ञायत, ज्ञायेत, ज्ञास्यते, अज्ञास्यत'' आदि क्रियारूपों का प्रयोग करना चाहिये।

4. कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक कारयितुं का प्रयोग कर ''तेन कार्यं कारयितुं ज्ञायते- उससे कराना जाना जाता है'' इत्यादि वाक्य सभी लकारों में बनाने चाहिये।

20. तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ दा धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् ददाति।	वह काम करने देता है
तौ	कार्यं कर्तुम् दत्तः।	वे दोनों काम करने देते हैं
ते	कार्यं कर्तुम् ददति।	वे लोग काम करने देते हैं
त्वं	कार्यं कर्तुम् ददासि।	तुम काम करने देते हो
युवां	कार्यं कर्तुम् दत्थः।	तुम दोनों काम करने देते हो
यूयं	कार्यं कर्तुम् दत्थ।	तुम लोग काम करने देते हो
अहं	कार्यं कर्तुम् ददामि।	मैं काम करने देता हूँ
आवां	कार्यं कर्तुम् दद्वः।	हम दोनों काम करने देते हैं
वयं	कार्यं कर्तुम् दद्मः।	हम लोग काम करने देते हैं।

लङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् अददात्।	उसने काम करने दिया
तौ	कार्यं कर्तुम् अदत्ताम्।	वे दोनों काम करने दिये
ते	कार्यं कर्तुम् अददुः।	वे लोग काम करने दिये
त्वं	कार्यं कर्तुम् अददाः।	तुमने काम करने दिया

युवां	कार्यं कर्तुम् अदत्तम्।	तुम दोनों काम करने दिये
यूयं	कार्यं कर्तुम् अदत्त।	तुम लोग काम करने दिये
अहं	कार्यं कर्तुम् अददाम्।	मैंने काम करने दिया
आवां	कार्यं कर्तुम् अदद्व।	हम दोनों ने काम करने दिये
वयं	कार्यं कर्तुम् अदद्म।	हम लोग काम करने दिये

लिङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् दद्यात्।	वह काम करने दे
तौ	कार्यं कर्तुम् दद्याताम्।	वे दोनों काम करने दें
ते	कार्यं कर्तुम् दद्युः।	वे लोग काम करने दें
त्वं	कार्यं कर्तुम् दद्याः।	तुम काम करने दो
युवां	कार्यं कर्तुम् दद्यातम्।	तुम दोनों काम करने दो
यूयं	कार्यं कर्तुम् दद्यात।	तुम लोग काम करने दो
अहं	कार्यं कर्तुम् दद्याम्।	मैं काम करने दूँ
आवां	कार्यं कर्तुम् दद्याव।	हम दोनों काम करने दें
वयं	कार्यं कर्तुम् दद्याम।	हम लोग काम करने दें

लृट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् दास्यति।	वह काम करने देगा
तौ	कार्यं कर्तुम् दास्यतः।	वे दोनों काम करने देंगे
ते	कार्यं कर्तुम् दास्यन्ति।	वे लोग काम करने देंगे
त्वं	कार्यं कर्तुम् दास्यसि।	तुम काम करने दोगे
युवां	कार्यं कर्तुम् दास्यथः।	तुम दोनों काम करने दोगे
यूयं	कार्यं कर्तुम् दास्यथ।	तुम लोग काम करने दोगे
अहं	कार्यं कर्तुम् दास्यामि।	मैं काम करना दूँगा
आवां	कार्यं कर्तुम् दास्यावः।	हम दोनों काम करने देंगे
वयं	कार्यं कर्तुम् दास्यामः।	हम लोग काम करने देंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् अदास्यत्।	वह काम करने देता
तौ	कार्यं कर्तुम् अदास्यताम्।	वे दोनों काम करने देते
ते	कार्यं कर्तुम् अदास्यन्।	वे लोग काम करने देते
त्वं	कार्यं कर्तुम् अदास्यः।	तुम काम करने देते
युवां	कार्यं कर्तुम् अदास्यतम्।	तुम दोनों काम करने देते
यूयं	कार्यं कर्तुम् अदास्यत।	तुम लोग काम करने देते
अहं	कार्यं कर्तुम् अदास्यम्।	मैं काम करने देता
आवां	कार्यं कर्तुम् अदास्याव।	हम दोनों काम करने देते
वयं	कार्यं कर्तुम् अदास्याम।	हम लोग काम करने देते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. "ददाति" के स्थान पर इसके आत्मनेपदी रूप दत्ते तथा दाण् धातु के परिवर्तित रूप प्रयच्छति का भी प्रयोग करना चाहिए।

2. कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक "कारयितुं" का प्रयोग कर सः कार्यं कारयितुं ददाति (वह काम कराने देता है) इत्यादि वाक्यों का सभी लकारों में प्रयोग करना चाहिये।

3. कर्मवाच्य में "तेन कार्यं कर्तुं-दीयते, अदीयत, दीयेत, दास्यते, अदास्यत" आदि क्रियारूपों का प्रयोग करना चाहिये।

4. कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक "कारयितुं" का प्रयोग कर "तेन कार्यं कारयितुं दीयते-उससे काम कराने दिया जाता है" ऐसे वाक्य सभी लकारों में बनाने चाहिये।

5. "वह काम करने देता है" इस वाक्य के स्थान पर यदि "वह उसे काम करने देता है" ऐसा वाक्य हो तो प्रथम कर्मवाचक शब्द में षष्ठी विभक्ति लगाई जाती है। यथा- स तस्य कार्यं कर्तुं ददाति। अगले प्रकरण में इसके प्रयोग देखिये।

21. तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ लभ् धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् लभते।	वह काम कर पाता है
तौ	कार्यं कर्तुम् लभेते।	वे दोनों काम कर पाते हैं

ते	कार्यं कर्तुम् लभन्ते।	वे लोग काम कर पाते हैं
त्वं	कार्यं कर्तुम् लभसे।	तुम काम कर पाते हो
युवां	कार्यं कर्तुम् लभेथे।	तुम दोनों काम कर पाते हो
यूयं	कार्यं कर्तुम् लभध्वे।	तुम लोग काम कर पाते हो
अहं	कार्यं कर्तुम् लभे।	मैं काम कर पाता हूँ
आवां	कार्यं कर्तुम् लभावहे।	हम दोनों काम कर पाते हैं
वयं	कार्यं कर्तुम् लभामहे।	हम लोग काम कर पाते हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् अलभत्।	वह काम कर पाया
तौ	कार्यं कर्तुम् अलभेताम्।	वे दोनों काम कर पाये
ते	कार्यं कर्तुम् अलभन्त।	वे लोग काम कर पाये
त्वं	कार्यं कर्तुम् अलभथाः।	तुम काम कर पाये
युवां	कार्यं कर्तुम् अलभेथाम्।	तुम दोनों काम कर पाये
यूयं	कार्यं कर्तुम् अलभध्वम्।	तुम लोग काम कर पाये
अहं	कार्यं कर्तुम् अलभे।	मैं काम कर पाया
आवां	कार्यं कर्तुम् अलभावहि।	हम दोनों काम कर पाये
वयं	कार्यं कर्तुम् अलभामहि।	हम लोग काम कर पाये

लिङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् लभेत्।	वह काम कर पाये
तौ	कार्यं कर्तुम् लभेयाताम्।	वे दोनों काम कर पाये
ते	कार्यं कर्तुम् लभेरन्।	वे लोग काम कर पावें
त्वं	कार्यं कर्तुम् लभेथाः।	तुम काम कर पाओ
युवां	कार्यं कर्तुम् लभेयाथाम्।	तुम दोनों काम कर पाओ
यूयं	कार्यं कर्तुम् लभेध्वम्।	तुम लोग काम कर पाओ
अहं	कार्यं कर्तुम् लभेय।	मैं काम कर पाऊँ

आवां	कार्यं कर्तुम् लभेवहि।	हम दोनों काम कर पावें
वयं	कार्यं कर्तुम् लभेमहि।	हम लोग काम कर पावें

लृट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् लप्स्यते	वह काम कर पायेगा
तौ	कार्यं कर्तुम् लप्स्येते	वे दोनों काम् कर पायेंगे
ते	कार्यं कर्तुम् लप्स्यन्ते	वे लोग काम कर पायेंगे
त्वं	कार्यं कर्तुम् लप्स्यसे	तुम काम कर पाओगे
युवां	कार्यं कर्तुम् लप्स्येथे	तुम दोनों काम कर पाओगे
यूयं	कार्यं कर्तुम् लप्स्यध्वे	तुम लोग काम कर पाओगे
अहं	कार्यं कर्तुम् लप्स्ये	मैं काम कर पाऊँगा
आवां	कार्यं कर्तुम् लप्स्यावहे।	हम दोनों काम कर पायेंगे
वयं	कार्यं कर्तुम् लप्स्यामहे।	हम लोग काम कर पायेंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् अलप्स्यत्	वह काम कर पाता
तौ	कार्यं कर्तुम् अलप्स्येताम्	वे दोनों काम कर पाते
ते	कार्यं कर्तुम् अलप्स्यन्त	वे लोग काम कर पाते
त्वं	कार्यं कर्तुम् अलप्स्यः	तुम काम कर पाते
युवां	कार्यं कर्तुम् अलप्स्येथाम्	तुम दोनों काम कर पाते
यूयं	कार्यं कर्तुम् अलप्स्यध्वम्	तुम लोग काम कर पाते
अहं	कार्यं कर्तुम् अलप्स्ये	मैं काम कर पाता
आवां	कार्यं कर्तुम् अलप्स्यावहि	हम दोनों काम कर पाते
वयं	कार्यं कर्तुम् अलप्स्यामहि	हम लोग काम कर पाते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. 'लभते' के स्थान पर ''प्राप्नोति'' का भी प्रयोग करना चाहिये।

2. कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक ''कारयितुं'' पद का प्रयोग कर ''सः कार्यं कारयितुं लभते (वह काम करा पाता है) आदि वाक्यों का प्रयोग करना चाहिये।

3. कर्मवाच्य में "तेन कार्यं कर्तुं-लभ्यते, अलभ्यत, लभ्यते, लप्स्यते, अलप्स्यत" आदि रूपों का प्रयोग करना चाहिये।

4. कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक "कारयितुं" का प्रयोग कर "तेन कार्यं कारयितुं" लभ्यते "उससे काम करा पाया जाता है" इस प्रकार के वाक्य बनाने चाहिये।

22. तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ लग् धातु का प्रयोग

लट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् लगति	वह काम करने लगता है
तौ	कार्यं कर्तुम् लगतः	वे दोनों काम करने लगते हैं
ते	कार्यं कर्तुम् लगन्ति	वे लोग काम करने लगते हैं
त्वं	कार्यं कर्तुम् लगसि	तुम काम करने लगते हो
युवां	कार्यं कर्तुम् लगथः	तुम दोनों काम करने लगते हो
यूयं	कार्यं कर्तुम् लगथ	तुम सब काम करने लगते हो
अहं	कार्यं कर्तुम् लगामि	मैं काम करने लगता हूँ
आवां	कार्यं कर्तुम् लगावः	हम दोनों काम करने लगते हैं
वयं	कार्यं कर्तुम् लगामः	हम सब काम करने लगते हैं

लङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् अलगत्	वह काम करने लगा
तौ	कार्यं कर्तुम् अलगताम्	वे दोनों काम करने लगे
ते	कार्यं कर्तुम् अलगन्	वे लोग काम करने लगे
त्वं	कार्यं कर्तुम् अलगः	तुम काम करने लगे
युवां	कार्यं कर्तुम् अलगतम्	तुम दोनों काम करने लगे
यूयं	कार्यं कर्तुम् अलगत	तुम लोग काम करने लगे
अहं	कार्यं कर्तुम् अलगम्	मैं काम करने लगा
आवां	कार्यं कर्तुम् अलगाव	हम दोनों काम करने लगे
वयं	कार्यं कर्तुम् अलगाम	हम लोग काम करने लगे

लिङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् लगेत्।	वह काम करने लगे
तौ	कार्यं कर्तुम् लगेताम्।	वे दोनों काम करने लगे
ते	कार्यं कर्तुम् लगेयुः।	वे लोग काम करने लगे
त्वं	कार्यं कर्तुम् लगेः।	तुम काम करने लगे
युवां	कार्यं कर्तुम् लगेतम्।	तुम दोनों काम करने लगे
यूयं	कार्यं कर्तुम् लगेत्।	तुम लोग काम करने लगे
अहं	कार्यं कर्तुम् लगेयम्।	मैं काम करने लगूँ
आवां	कार्यं कर्तुम् लगेव।	हम दोनों काम करने लगे
वयं	कार्यं कर्तुम् लगेम।	हम लोग काम करने लगे

लृट् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् लगिष्यति	वह काम करने लगेगा
तौ	कार्यं कर्तुम् लगिष्यतः	वे दोनों काम करने लगेंगे
ते	कार्यं कर्तुम् लगिष्यन्ति	वे लोग काम करने लगेंगे
त्वां	कार्यं कर्तुम् लगिष्यसि	तुम काम करने लगोगे
युवं	कार्यं कर्तुम् लगिष्यथः	तुम दोनों काम करने लगोगे
यूयं	कार्यं कर्तुम् लगिष्यथ	तुम लोग काम करने लगोगे
अहं	कार्यं कर्तुम् लगिष्यामि	मैं काम करने लगूँगा
आवां	कार्यं कर्तुम् लगिष्यावः	हम दोनों काम करने लगेंगे
वयं	कार्यं कर्तुम् लगिष्यामः	हम लोग काम करने लगेंगे

लृङ् लकार

सः	कार्यं कर्तुम् अलगिष्यत्	वह काम करने लगता
तौ	कार्यं कर्तुम् अलगिष्यताम्	वे दोनों काम करने लगते
ते	कार्यं कर्तुम् अलगिष्यन्	वे लोग काम करने लगते
त्वं	कार्यं कर्तुम् अलगिष्यः	तुम काम करने लगते

युवां	कार्यं कर्तुम् अलगिष्यतम्	तुम दोनों काम करने लगते
यूयं	कार्यं कर्तुम् अलगिष्यत	तुम लोग काम करने लगते
अहं	कार्यं कर्तुम् अलगिष्यम्	मैं काम करने लगता
आवां	कार्यं कर्तुम् अलगिष्याव	हम दोनों काम करने लगते
वयं	कार्यं कर्तुम् अलगिष्याम	हम लोग काम करने लगते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. ''लगति'' के स्थान पर ''प्रवर्तते, प्रक्रमते, उपक्रमते, आरभते, प्रारभते'' आदि क्रियारूपों का भी प्रयोग करना चाहिये।

2. कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक ''कारयितुं'' पद का प्रयोग कर ''सः कार्यं कारयितुं लगति (वह काम कराने लगता है) इस प्रकार के वाक्यों का भी प्रयोग करना चाहिये।

3. कर्मवाच्य में लगति के स्थान पर लग्यते पद का प्रयोग कर 'तेन कार्यं कर्तुं लग्यते तथा तेन कार्यं कारयितुं लग्यते'' आदि वाक्यों का निर्माण करना चाहिये।

4. संस्कृत के ग्रन्थों में लगति के स्थान पर अन्य उपर्युक्त क्रियाओं का अधिक प्रयोग होता है पर उन सब का हिन्दी में ''लगना'' यही अर्थ होता है।

23. तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ आ उपसर्ग सहित या धातु का प्रयोग

लट् लकार

तस्य	कार्यं कर्तुम् आयाति	उसको काम करने आता है
तयोः	कार्यं कर्तुम् आयाति	उन दोनों को काम करने आता है
तेषां	कार्यं कर्तुम् आयाति	उन लोगों को काम करने आता है
तव	कार्यं कर्तुम् आयाति	तुमको काम करने आता है
युवयोः	कार्यं कर्तुम् आयाति	तुम दोनों को काम करने आता है
युष्माकं	कार्यं कर्तुम् आयाति	तुम लोगों को काम करने आता है
मम	कार्यं कर्तुम् आयाति	हमको काम करने आता है
आवयोः	कार्यं कर्तुम् आयाति	हम दोनों को काम करने आता है
अस्माकं	कार्यं कर्तुम् आयाति	हम लोग को काम करने आता है

लङ् लकार

तस्य	कार्यं कर्तुम् आयात्	उसको काम करना आया
तयोः	कार्यं कर्तुम् आयात्	उन दोनों को काम करना आया
तेषां	कार्यं कर्तुम् आयात्	उन लोगों को काम करना आया
तव	कार्यं कर्तुम् आयात्	तुमको काम करना आया
युवयोः	कार्यं कर्तुम् आयात्	तुम दोनों को काम करना आया
युष्माकं	कार्यं कर्तुम् आयात्	तुम लोगों को काम करना आया
मम	कार्यं कर्तुम् आयात्	हमको काम करना आया
आवयोः	कार्यं कर्तुम् आयात्	हम दोनों को काम करना आया
अस्माकं	कार्यं कर्तुम् आयात्	हम लोगों को काम करना आया

लिङ् लकार

तस्य	कार्यं कर्तुम् आयायात्	उसको काम करना आवे
तयोः	कार्यं कर्तुम् आयायात्	उन दोनों को काम करना आवे
तेषां	कार्यं कर्तुम् आयायात्	उन लोगों को काम करना आवे
तव	कार्यं कर्तुम् आयायात्	तुमको काम करना आवे
युवयोः	कार्यं कर्तुम् आयायात्	तुम दोनों को काम करना आवे
युष्माकं	कार्यं कर्तुम् आयायात्	तुम लोगों को काम करना आवे
मम	कार्यं कर्तुम् आयायात्	हमको काम करना आवे
आवयोः	कार्यं कर्तुम् आयायात्	हम दोनों को काम करना आवे
अस्माकं	कार्यं कर्तुम् आयायात्	हम लोगों को काम करना आवे

लृट् लकार

तस्य	कार्यं कर्तुम् आयास्यति	उसको काम करने आयेगा
तयोः	कार्यं कर्तुम् आयास्यति	उन दोनों को काम करने आयेगा
तेषां	कार्यं कर्तुम् आयास्यति	उन लोगों को काम करने आयेगा

तव	कार्यं कर्तुम् आयास्यति	तुमको काम करने आयेगा
युवयोः	कार्यं कर्तुम् आयास्यति	तुम दोनों को काम करने आयेगा
युष्माकं	कार्यं कर्तुम् आयास्यति	तुम लोगों को काम करने आयेगा
मम	कार्यं कर्तुम् आयास्यति	हमको काम करने आयेगा
आवयोः	कार्यं कर्तुम् आयास्यति	हम दोनों को काम करने आयेगा
अस्माकं	कार्यं कर्तुम् आयास्यति	हम लोगो को काम करने आयेगा

लृङ् लकार

तस्य	कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	उसको काम करने आता
तयोः	कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	उन दोनों को काम करने आता
तेषां	कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	उन लोगों को काम करने आता
तव	कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	तुमको काम करने आता
युवयोः	कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	तुम दोनों को काम करने आता
युष्माकं	कार्यं कर्तुम् आयास्यन्	तुम लोगों को काम करने आता
मम	कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	हमको काम करने आता
आवयोः	कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	हम दोनों को काम करने आता
अस्माकं	कार्यं कर्तुम् आयास्यत्	हम लोगों को काम करने आता

अन्य ज्ञातव्य विषय

ऊपर हिन्दी में जैसे वाक्य दिये गये हैं वैसे वाक्य हिन्दी में बहुत चलते हैं। जैसे- उस को पढ़ने आता है, लिखने आता है इत्यादि। पर संस्कृत में ठीक इस प्रकार के वाक्यों का प्रयोग नहीं मिलता। संस्कृत में आयाति के स्थान पर "जानाति" का प्रयोग चलता है जिसका भावार्थ आयाति के समान ही होता है। परन्तु महाभारत के (सभा0 25 ।33) वक्तुं नायाति राजेन्द्र एतयोर्नियमस्थयोः। इस श्लोक में तथा "इष्टगोष्ठ्यामपि यदपि तदपि वक्तुमायाति कि पुनर्वादावस्थायाम्" इस खरतरगच्छ-वृदद्गुर्वावलि (पृष्ठ 36) में प्रयुक्त "वक्तुं आयाति" इस वाक्य के आधार पर संस्कृत में ऐसे अन्य वाक्यों का भी प्रयोग करना व्यवहार की दृष्टि से उचित प्रतीत होता है। इसीलिये कर्तुं के साथ आयाति का प्रयोग किया गया है।

24. तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ शक् धातु का कर्मवाच्य में प्रयोग

लट् लकार

तेन	कार्यं कर्तुम् शक्यते	उससे काम किया जा सकता है
तेन	कार्ये कर्तुम् शक्येते	उससे काम किया जा सकते हैं
तेन	कार्याणि कर्तुम् शक्यन्ते	उससे काम किया जा सकते हैं
त्वया	कार्यं कर्तुम् शक्यते	तुमसे काम किया जा सकता है
त्वया	कार्ये कर्तुम् शक्येते	तुमसे काम किये जा सकते हैं
त्वया	कार्याणि कर्तुम् शक्यन्ते	तुमसे काम किये जा सकते हैं
मया	कार्यं कर्तुम् शक्येते	मुझसे काम किये जा सकता है
मया	कार्ये कर्तुम् शक्येते	मुझसे काम किये जा सकते हैं
मया	कार्याणि कर्तुम् शक्यन्ते	मुझसे काम किये जा सकते हैं

लङ् लकार

तेन	कार्यं कर्तुम् अशक्यत	उससे काम किया जा सका
तेन	कार्ये कर्तुम् अशक्येताम्	उससे काम किया जा सके
तेन	कार्याणि कर्तुम् अशक्यन्त	उससे काम किया जा सके
त्वया	कार्यं कर्तुम् अशक्यत	तुमसे काम किया जा सका
त्वया	कार्ये कर्तुम् अशक्येताम्	तुमसे काम किया जा सके
त्वया	कार्याणि कर्तुम् अशक्यन्त	तुमसे काम किया जा सके
मया	कार्यं कर्तुम् अशक्यत	मुझसे काम किया जा सका
मया	कार्ये कर्तुम् अशक्येताम्	मुझसे काम किया जा सके
मया	कार्याणि कर्तुम् अशक्यन्त	मुझसे काम किया जा सके

लिङ् लकार

तेन	कार्यं कर्तुम् शक्येत	उससे काम किया जा सका
तेन	कार्ये कर्तुम् शक्येयाताम्	उससे काम किये जा सकें
तेन	कार्याणि कर्तुम् शक्येरन्	उससे काम किये जा सकें

त्वया	कार्यं कर्तुम् शक्येत	तुमसे काम किया जा सके
त्वया	कार्ये कर्तुम् शक्येयाताम्	तुमसे काम किये जा सकें
त्वया	कार्याणि कर्तुम् शक्येरन्	तुमसे काम किये जा सके
मया	कार्यं कर्तुम् शक्येत	मुझसे काम किया जा सके
मया	कार्ये कर्तुम् शक्येयाताम्	मुझसे काम किये जा सकें
मया	कार्याणि कर्तुम् शक्येरन्	मुझसे काम किये जा सकें

लृट् लकार

तेन	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यते	उससे काम किया जा सकेगा
तेन	कार्ये कर्तुम् शक्ष्येते	उससे काम किये जा सकेंगे
तेन	कार्याणि कर्तुम् शक्ष्यन्ते	उससे काम किया जा सकेंगे
त्वया	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यते	तुमसे काम किया जा सकेगा
त्वया	कार्ये कर्तुम् शक्ष्येते	तुमसे काम किये जा सकेंगे
त्वया	कार्याणि कर्तुम् शक्ष्यन्ते	तुमसे काम किये जा सकेंगे
मया	कार्यं कर्तुम् शक्ष्यते	मुझसे काम किया जा सकेगा
मया	कार्ये कर्तुम् शक्ष्येते	मुझसे काम किये जा सकेंगे
मया	कार्याणि कर्तुम् शक्ष्यन्ते	मुझसे काम किये जा सकेंगे

लृङ् लकार

तेन	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यत	उससे काम किया जा सकता
तेन	कार्ये कर्तुम् अशक्ष्येताम्	उससे काम किया जा सकते
तेन	कार्याणि कर्तुम् अशक्ष्यन्त	उससे काम किया जा सकते
त्वया	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यत	तुमसे काम किया जा सकता
त्वया	कार्ये कर्तुम् अशक्ष्येताम्	तुमसे काम किये जा सकते
त्वया	कार्याणि कर्तुम् अशक्ष्यन्त	तुमसे काम किये जा सकते
मया	कार्यं कर्तुम् अशक्ष्यत	मुझसे काम किया जा सकता
मया	कार्ये कर्तुम् अशक्ष्येताम्	मुझसे काम किये जा सकते
मया	कार्याणि कर्तुम् अशक्ष्यन्त	मुझसे काम किये जा सकते

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक कारयितुं पद लगाकर भी वाक्यों का निर्माण करना चाहिये। यथा-

तेन कार्यं कारयितुं शक्यते	उससे काम कराया जा सकता है
तेन कार्यं कारयितुं अशक्यत	उससे काम कराया जा सका
तेन कार्यं कारयितुं शक्येत	उससे काम कराया जा सके
तेन कार्यं कारयितुं शक्ष्यते	उससे काम कराया जा सकेगा
तेन कार्यं कारयितुं अशक्ष्यत	उससे काम कराया जा सकता

2. इसी प्रकार पाठः पाठयितुम्, लेखः लेखयितुम् आदि पद को भी जोड़ कर वाक्य बनाने चाहिये।

3. ऊपर के वाक्यों में तृतीयान्त एकवचन के स्थान पर द्विवचन एवं बहुवचन का भी आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जायेगा।

25. तुमुन् प्रत्ययान्त पद के साथ दा धातु का कर्मवाच्य में प्रयोग

लट् लकार

तेन	कार्यं कर्तुम् दीयते	उससे काम करने दिया जाता है
ताभ्यां	कार्यं कर्तुम् दीयते	उन दोनों से काम करने दिया जाता है
तैः	कार्यं कर्तुम् दीयते	उन लोगों से काम करने दिया जाता है
त्वया	कार्यं कर्तुम् दीयते	तुमसे काम करने दिया जाता है
युवाभ्यां	कार्यं कर्तुम् दीयते	तुम दोनों से काम करने दिया जाता है
युष्माभिः	कार्यं कर्तुम् दीयते	तुम लोगों से काम करने दिया जाता है
मया	कार्यं कर्तुम् दीयते	मुझसे काम करने दिया जाता है
आवाभ्यां	कार्यं कर्तुम् दीयते	हम दोनों से काम करने दिया जाता है
अस्माभिः	कार्यं कर्तुम् दीयते	हम लोगों से काम करने दिया जाता है

लङ् लकार

तेन	कार्यं कर्तुम् अदीयत	उससे काम करने दिया गया
ताभ्यां	कार्यं कर्तुम् अदीयत	उन दोनों से काम करने दिया गया

तैः	कार्यं कर्तुम् अदीयत	उन लोगों से काम करने दिया गया
त्वया	कार्यं कर्तुम् अदीयत	तुमसे काम करने दिया गया
युवाभ्यां	कार्यं कर्तुम् अदीयत	तुम दोनों से काम करने दिया गया
युष्माभिः	कार्यं कर्तुम् अदीयत	तुम लोगों से काम करने दिया गया
मया	कार्यं कर्तुम् अदीयत	मुझसे काम करने दिया गया
आवाभ्यां	कार्यं कर्तुम् अदीयत	हम दोनों से काम करने दिया गया
अस्माभिः	कार्यं कर्तुम् अदीयत	हम लोगों से काम करने दिया गया

लिङ् लकार

तेन	कार्यं कर्तुम् दीयेत	उससे काम करने दिया जाता है
ताभ्यां	कार्यं कर्तुम् दीयेत	उन दोनों से काम करने दिया जाता है
तैः	कार्यं कर्तुम् दीयेत	उन लोगों से काम करने दिया जाता है
त्वया	कार्यं कर्तुम् दीयेत	तुमसे काम करने दिया जाता है
युवाभ्यां	कार्यं कर्तुम् दीयेत	तुम दोनों से काम करने दिया जाता है
युष्माभिः	कार्यं कर्तुम् दीयेत	तुम लोगों से काम करने दिया जाता हो
मया	कार्यं कर्तुम् दीयेत	हमसे काम करने दिया जाता हों
आवाभ्यां	कार्यं कर्तुम् दीयेत	हम दोनों से काम करने दिया जाता है
अस्माभिः	कार्यं कर्तुम् दीयेत	हम लोगों से काम करने दिया जाता है

लृट् लकार

तेन	कार्यं कर्तुम् दास्यते	उससे काम करने दिया जायेगा
ताभ्यां	कार्यं कर्तुम् दास्यते	उन दोनों से काम करने दिया जायेगा
तैः	कार्यं कर्तुम् दास्यते	उन लोगों से काम करने दिया जायेगा
त्वया	कार्यं कर्तुम् दास्यते	तुमसे काम करने दिया जायेगा
युवाभ्यां	कार्यं कर्तुम् दास्यते	तुम दोनों से काम करने दिया जायेगा
युष्माभिः	कार्यं कर्तुम् दास्यते	तुम लोगों से काम करने दिया जायेगा
मया	कार्यं कर्तुम् दास्यते	मुझसे काम करने दिया जायेगा

आवाभ्यां कार्यं कर्तुम् दास्यते	हम दोनों से काम करने दिया जायेगा
अस्माभिः कार्यं कर्तुम् दास्यते	हम लोगों से काम करने दिया जायेगा

लृङ् लकार

तेन	कार्यं कर्तुम् अदास्यत	उससे काम करने दिया जाता
ताभ्यां	कार्यं कर्तुम् अदास्यत	उन दोनों से काम करने दिया जाता
तैः	कार्यं कर्तुम् अदास्यत	उन लोगों से काम करने दिया जाता
त्वया	कार्यं कर्तुम् अदास्यत	तुमसे काम करने दिया जाता
युवाभ्यां	कार्यं कर्तुम् अदास्यत	तुम दोनों से काम करने दिया जाता
युष्माभिः	कार्यं कर्तुम् अदास्यत	तुम लोगों से काम करने दिया जाता
मया	कार्यं कर्तुम् अदास्यत	मुझसे काम करने दिया जाता
आवाभ्यां	कार्यं कर्तुम् अदास्यत	हम दोनों से काम करने दिया जाता
अस्माभिः	कार्यं कर्तुम् अदास्यत	हम लोगों से काम करने दिया जाता

अन्य ज्ञातव्य विषय

1. उपर्युक्त वाक्यों में सब जगह कर्म एवं क्रिया में एकवचन का ही प्रयोग किया गया है। इनमें आवश्यकतानुसार द्विवचन एवं बहुवचन का भी प्रयोग किया जायेगा।

2. उपर्युक्त वाक्यों में एक विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि इनके साथ-साथ जब एक और कर्म जोड़ा जायेगा तो उसमें पूर्ववत् द्वितीया विभक्ति के स्थान पर चतुर्थी या षष्ठी विभक्ति लगा करेगी। यथा-

हिन्दी- उससे उसे काम करने दिया जाता है। तेन तस्मै/तस्य कार्यं कर्तुं दीयते।

3. कर्तुं के स्थान पर प्रेरणार्थक पद कारयितुम् को लगाकर निम्नलिखित ढंग से वाक्य बनाने चाहिये। यथा-

तेन कार्यं कारयितुं दीयते	उससे काम कराने दिया जाता है
तेन कार्यं कारयितुं अदीयत	उससे काम कराने दिया गया
तेन कार्यं कारयितुं दीयेत	उससे काम कराने दिया जाय
तेन कार्यं कारयितुं दास्यते	उससे काम कराने दिया जायेगा
तेन कार्यं कारयितुं अदास्यत	उससे काम कराने दिया जाता

कृत्प्रत्ययान्त शब्दों से बने क्रियारूपों के प्राचीन ग्रन्थों से संकलित उदाहरण

1. शतृप्रत्ययान्त शब्दों से बने क्रियारूपों के उदाहरण

ऋतस्य योनिं विमृशन्त आसते। ऋग्वेद संहिता 10।65।7

ऋत (सत्य) के मूल कारण का विचार करते रहते हैं।

जुस्वद् आस्ते। सुन्वन्त आसते। अनुपृच्छन्त आसते।

जैमिनीय ब्राह्मण 1।1, 1।364, 3।55

स वरमवृणीत। अस्यामेव हीत्रायामिन्द्रभूतं पुनन्तः स्तुवन्तः संशन्तस्तिष्ठेयुरिति।

गोपथ ब्राह्मण, पूर्वभाग, प्र0 2। क019

उसने वर माँगा। इसी स्तुति में आप लोग मुझ इन्द्र को पवित्र करते हुए, स्तवन करते हुए और प्रशंसा करते हुए रहें।

एतत् साम गायन्नास्ते। तैत्तिरीय उपनिषद् 3।10।5

यह साम गा रहा है।

तस्याहं तपसो वीर्यं जानन्नासं तपोधन।	महाभारतम् आदिपर्व	11।5
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।	भर्तृहरिनीतिशतकम्	79
दिनत्रयं भ्रमन्नासमेकं फलहकं स्थितः।	कथासरित्सागरः	5।3।122
तत्रैव गच्छन्नागच्छन्नासीद् विद्याधरोऽथ सः।	,,	6।8।27
गृहानेषोऽनया क्रीडन्नास्तापास्तपरिच्छदः।	,,	7।8।140
दूरात् सकौतुकश्चाहं पश्यन्नासमलक्षितः।	,,	9।6।209
तत्रासीत् स तपः कुर्वन् राजाऽन्यरसनिःस्पृह।	,,	12।6।98
यत्र क्वापि दिनेष्वेषु गच्छन्ती चास्मि न त्वया।	,,	12।19।112
नरवाहनदत्तोऽत्र क्रीडन्नासीदितस्ततः।	,,	13।3।28
धुर्यान् विश्रमयन्नासे जाततीव्रश्रमानिति।	वृहत्कथाश्लोकसंग्रह	10।89
अर्थशास्त्राणि शंसन्तो महाकाव्यानि चास्महे।	,,	10।129
वयं च सहिना दारैः क्रीडन्तः सुखमास्महि।	,,	15।67
स मयोक्तस्तया साकं हसन्तः सुखमास्महे।	,,	20।5
तत्राप्यहानि द्वित्राणि वहन्नेवाभवन्नृपः।	राजतरङ्गिणी	4।290

कार्याणि घटयन्नासीद् दुर्घटान्यपि हेलया।	,,	4 ।364
वीक्ष्य राज्यश्रियं शोचन्नासीत् कमलवर्धनः।	राजतरङ्गिणी	5 ।467
संघटय्याखिलान् स्थेयान् आसीत्तत्वं विचारयन्।	,,	6 ।28
उपायांश्चिन्तयन्नासीत् तस्य कार्यस्य सिद्धये।	,,	7 ।753
स्वमेव केवलं रक्षन्नासीत् स चकितोऽन्वहम्।	,,	7 ।1021
नन्दयन् मेदिनीमास्ते जयसिंहो महीपतिः।	,,	8 ।3448
तथा दृट्वा लोको बौद्धभक्ता भवन्नास्ते	प्रबन्धकोश	पृ0 1
पादलिप्ताचार्याः समागच्छन्तः सन्ति प्रातः।	,,	पृ0 14
तान् सर्वान् हन्तुमहं सन्नह्य चलन्नासम्।	,,	पृ0 26
अन्येऽपि खादन्तः सन्ति।	,,	पृ0 99
तत्र क्षेत्रं कारयन्नस्मि।	,,	पृ0 104
यानपात्रातुरङ्गा उत्तरन्तः सन्ति।	,,	पृ0 121
पौरजनसाक्षिकं भवन्मन्दिरमानीतया तोयजाक्ष्या सह क्रीडन्नायुष्मान् यदि भविष्यसि''''......।	दशकुमारचरितम्	पू0 पी0 4
भैक्ष्यं सम्पाद्य दददेतेभ्यो वसामि शिवालयेऽस्मिन्।	,,	,,
,,	3	
इत आखेटक एकः शुकान् व्यापादयन्नस्ति।	पुरातनप्रबन्धसंग्रहः	पृ0 6
इतस्तत्र कोऽपि शूलाक्षितो जीवन्नस्ति।	,,	पृ0 7
राज्ञा उक्तम्-यूयं किं किं वाचयन्तः स्थः।	,,	पृ0 37
गुरुभिः कथितम्-किं पृच्छन्नसि।	,,	पृ0 37
अहं नित्यं नगरमनुष्यमनोऽभिप्रायं विलोकयन्नस्मि।	,,	पृ0 78
मध्यरात्रौ सुखासनाधिरूढा अमात्याद्याः श्रृण्वन्तः सन्ति।	,,	पृ0 78
यस्मिन्नभूम चिरमेव पुरा वसन्तः।	उत्तररामचरितम्	2 ।22
शरीराभ्यङ्गं कारयंस्तिष्ठति।	खरतरगच्छ-वृहद्गुर्वावलिः	पृ0 0
विदेशादागत्य लोकाः स्वयमेव वसन्तः सन्ति।	लिखनावली	पृ0 9
वादिप्रतिवादिनौ गच्छन्तौ तिष्ठतः।	,,	पृ0 15

भिक्षार्थं गच्छन्तौ वर्तेते।	"	पृ0 16
वयमागच्छन्त एव तिष्ठामः।	"	पृ0 20
गृहं गच्छन्तो वर्तन्ते।	लिखनावली	पृ0 30
लोकाः कृषिं कुर्वाणाः वसन्तः सन्ति।	"	पृ0 35
कपर्दकाश्च भवतां यथागता एव गच्छन्तः सन्ति।	"	पृ0

2. शानच् प्रत्ययान्त शब्दों से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूपों के उदाहरण

हदानी वयं गुरुमुखश्रुतानां विस्तीर्णानां रसाढयानां चतुर्विशतेः प्रबन्धानां संग्रहं कुर्वार्णाः स्म।	प्रबन्धकोशः	पृ0 1
श्रीमन्त्रिपादाश्चिरं राज्यमुपभुञ्जानाः सन्ति।	"	पृ0 123
देवीं प्रतीक्षमाणोऽस्थात् सरित्पारे ततः क्षणम्।	राजतरङ्गिणी	7/349
आस्कन्दं शङ्कमानोऽस्याद् द्विजाद् राजा बलोर्जितात्।	"	8/557
दूयमानोऽस्मि दायाददुःखदायी दिने दिने।	"	8/1025
समावदेव यशे कुर्वाणा आसन्।	गोपथब्राह्मणम्	
वे यज्ञ में वही कर रहे थे।		
यः पूर्वमनीजानः स्यात्।	ऐतरेयब्राह्मणम्	1/4/1
जो पहले कोई यज्ञ न कर रहा हो।		

3. शानच् प्रत्ययान्त शब्दों से बने कर्मवाच्य के क्रियारूपों के उदाहरण

अद्यापि कष्टापहारर्थिभिस्तत् पठयमानमास्ते।	प्रबन्धकोशः	पृ0 4
किमयं समर्घो लभ्यमानोऽस्ति।	"	पृ0 16
गुरभिर्बोध्यमानोऽस्ति। बुध्यस्व, मा मुहः।	"	पृ0 65
तृतीयं तु खण्डं प्रतोलीद्वारे चतुष्पथमध्ये निपतितमद्यापि तथैव वीक्ष्यमाणमास्ते।	"	पृ0 68
बालकैः पाल्यमानोऽभूत् पृथिवीभोगभागिभिः।	राजतरङ्गिणी	4/6/79
युधि सोऽन्वीयमानोऽभूद् वाम्याटविकमण्डलैः।	"	4/474

आनीयमानं मासार्धवासरे मासि मास्यभूत्। ,, 7/196

मृतानामपि संस्कारः क्रियमाण इवाऽभवत्। ,, 8/2804

ततोऽनुबध्यमाऽनोभूद् अपर्यन्तव्यथातुरः। राजतरङ्गिणी 5/443

4. स्यतृ-स्यमान प्रत्ययान्त शब्दों से बने कर्तृवाच्य के क्रियारूपों के उदाहरण

उद्यास्यन् या अरेऽहमस्मात् स्थानादस्मि। वृहचारण्यकोषनिषद्, 2/4/1

अरे! इस स्थान से मैं चला जाने वला हूँ।

यक्ष्यमाणो हवै भगवन्तोऽहमस्मि। छान्दोग्योपनिषद् 5/11/5

भगवन्! मैं यज्ञ करने वाला हूँ।

आधास्यन् भवति। शतपथब्राह्मणम् 3/5/2/36

आधान करने वाला होता है।

यद् वदिष्यन् करिष्यन् वा स्यात्। ,, ,, 2/4/1/14

अथ यदि रथं वा युक्तं दास्यन् स्यात्। ,, ,, 4/8/15

यदि बोलने वाला हो अथवा करने वाला हो। यदि जोड़ा रथ देने वाला हो।

स यदा उत्क्रमिष्यन् भवति। मैत्रायणी आरण्यकम् 2/6

वह जब उत्क्रमण करने वाला होता है।

उपतिष्ठते अग्नीन् प्रवत्स्यंश्च प्रोषितवांश्च। कौषीतकीब्राह्मणम्, 2, 6

प्रवास करने वाला और प्रवास किया हुआ व्यक्ति अग्नि का उपस्थान करता है।

तं यत्र निहनिष्यन्तो भवन्ति। ऐतरेयब्राह्मणम् 2/11/6

जहाँ उसे हनन करने वाले होते हैं।

यत्र क्व च होष्यन्त्स्यात्। आश्वलायनगृह्यसूत्रम् 1/3/1

जहाँ कहीं भी हवन करने वाला हो।

तस्थौ चिराय तपसे तोषयिष्यन्नुमापतिम्। कथासरित्सागरः 1/7/53

शंकरजी को संतुष्ट करने की इच्छा करता हुआ बहुत समय तक तपस्या करता रहा।

5. क्त प्रत्ययान्त शब्दों से बने कर्तृवाच्य एवं कर्मवाच्य के क्रिया रूपों के उदाहरण

अर्थी भवन्तमुपागतोऽस्मीति स एनमभिवाद्योवाच।	महाभारतम्, आदि0	3/103
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः।	भगवद्गीता	11/51
प्रबुद्धाः स्मः प्रहृष्टाः स्मः प्रविष्टाः स्मः स्वमास्पदम्।	योगवाशिष्ठः, नि0 पू0	29/7
तत् कस्त्वं कस्य पुत्रस्त्वं किमायातोऽस्यनुग्रहात्।	,, ,,	85/83
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिश्ये वचनं तव।	भगवद्गीता	18/73
कुर्वन् वणिज्यां क्रमशः सम्पन्नोऽस्मि महाधनः।	कथासरित्सागरः	1/6/47
आगत्यैव प्रसूतास्मि युगपत्तनयावुभौ।	,,	4/1/147
कुतः प्राप्तोऽसि गन्तासि क्व च भद्रोच्यतामिति।	,,	5/2/17
सुप्ता जाने स्त्रिया स्वप्ने कयाऽप्युक्ताऽस्मि दिव्यया।	,,	5/2/166
महाकालार्चनायाता विश्रान्तास्मीह सम्प्रति।	,,	7/3/23
उद्धृत्य वह्नौ क्षिप्ताः स्मो न च दह्यामहेऽग्निना।	,,	8/140
भ्रामितोऽस्मि च मिथ्यैव दूराद्दूरं दुरात्मना।	,,	9/6/69
अद्वारेण प्रविष्टाः स्थ निर्भया राजकिल्विषात्।	महाभारतम्, सभा0	21/45
प्रातः पितृगृहं यास्याम्युत्सवेऽस्मि निमन्त्रिता।	,,	10/6/226
इति शार्ङ्गभृताऽदिष्टः प्रबुद्धोऽस्मि निशाक्षये।	,,	12/4/124
आगताऽस्मि तवाख्यातुं प्रमाणं स्वमतः परम्।	,,	12/4/145
ततः प्रधाव्य केनापि ब्राह्मणेनाऽस्मि मोचिता।	,,	12/4/173
आगतोऽस्मि वशं भद्रे तव मन्त्रबलात् कृतः।	महाभारतम् वन0	307/11
गम्यतां भगवस्तत्र यत एवाऽगतो ह्यसि।	,,	307/12
ततः स्वामिकुमारस्य पादमूलं गतोऽभवत्।	कथासरित्सागरः	2/2/60
अध्यापयितुमस्मांश्च प्रवृत्तोऽभूदसौ ततः।	,,	1/2/89
स्वदेशमागतोऽभूवं दर्शयिष्यन् निजान् गुणान्।	,,	/6/23
कुर्वन् वणिज्यां क्रमशः सम्पन्नोऽस्मि महाधनः।	,,	1/6/47

तत्सकाशं ततोऽगच्छद् येनासौ प्रेषितोऽभवत्।	,,	1/6/61
उद्यानपालः पृष्टोऽभून्मया तत्र तदागमम्।	,,	1/6/73
वापीजलेऽवतीर्णोऽभूत् क्रीडितुं कामिनीसखः।	,,	1/6/108
शर्ववर्मा निराहारस्तत्रैव प्रस्थितोऽभवत्।	,,	1/6/153
तदर्थमेव हि मया त्वमानीत इहाऽभवः।	,,	3/6/3
आसीन्मृतेव सुप्तेव लिखितेव विचेतना।	,,	3/3/7
अत्रान्तरे स राजापि नीतोऽभूतेन वाजिना।	,,	3/4/96
मासमात्रं स्थिताऽभूवं कृच्छ्रकर्मोपजीविनी।	,,	4/1/115
अहं च प्रापितोऽभूवं क्रमात्तेन तरस्विना।	,,	4/2/101
कृतविद्यो यथावच्च परिणीतोऽभवत्ततः।	,,	4/2/153
ततोऽन्यैरहमाहूतस्तन्मध्ये मिलितोऽभवम्।	,,	5/2/275
उष्ट्रः सोऽनुचरीकृत्य स्वान्तिके स्थापितोऽभवत्।	,,	10/1/148
पतितः पाशनिकैर्बद्धोऽभूत् सपरिच्छदः।	,,	10/5/62
उपवेश्य च-पर्यङ्के स पृष्टोऽभूत् तया तदा।	,,	12/4/35
इत्यालोच्याथ तेनाहं मार्गेण प्रस्थितोऽभवम्।	,,	18/4/58
राज्ञा स्वयं गृहं नीत्वा साचिव्यं ग्राहितोऽभवत्।	राजतरङ्गिणी	7/265
दत्तैः समग्रैरपि तैर्नास्याः किन्चित् कृतं भवेत्।	कथासरित्सागरः	7/4/44
तत्सुतस्य च सम्मानः कुतस्तस्य कृतो भवेत्।	,,	8/2/197
कथयेयं यदि गुणान्न कथा कथिता भवेत्।	बृहत्कथाश्लोकसंग्रहः	4/15
इतरा यदि नृत्यन्ती तेन दृष्टा भवेत्तदा।	,,	11/44
कोपिता वा भवेद् भर्त्रा।	,,	12/4
विद्याधराधमेनासौ नीता यदि भवेदिति।	,,	12/21
न दृश्यते सानुदासः क्व नु यातो भवेदिति।	,,	18/20

कुत्र नु गता तत्रभवती पद्मावती, लतामण्डपं गता
भवेत्, उताहो.......पर्वततिलकं शिलापट्टकं गता भवेत्,

अथवा सप्तच्छदवनं प्रविष्टा भवेत्, अथवा.............
दारुपर्वतकं गता भवेत्। स्वप्नवासवदत्तम्, अङ्क 4

किं नु खलु भवेत्? आः, रात्रिजागरतया प्रभातप्रसुप्ता भवेत्। अविमारकम्, अङ्क 4

किन्तु खलु दुरात्मा कंसो.....माँ ग्रहीतुमागतो भवेत्। बालचरितम् अङ्क 1

किमुद्दिश्य भगवता काश्यपेन मत्सकाशमृषयः प्रेरिताः स्युः। अभिज्ञानशाकुन्तलम्, अङ्क 5

श्रुतं हि तेन तदभूत्। महाभारतम्, आदि0 42/34

अथौं द्वावपि निष्पन्नौ युधिष्ठिर भविष्यतः। " " 162/21

द्यूते जिता चासि कृतासि दासी। " सभा0 68/34

स्वयं नाम भट्टिन्या कथितं भवति। अविमारकम् अङ्क 3

6. क्त प्रत्ययान्त शब्दों से बने भविष्यत्कालिक क्रियारूपों के उदाहरण

तैः सीता निहता घोरैर्भविश्यति न संशयः। वाल्मीकीयरामायणम्, अरण्य0 58/16

मन्ये लक्ष्मण वैदेही राक्षसैः कामरूपिभिः। " "

भित्वा भित्वा विभक्ता वा भक्षिता वा भविष्यति। अरण्यकाण्डम् 64/41

न जानेऽहं क्व याता सा जानाम्येतावदेव तु।

भिल्ला इहाऽगता आसंस्तैः सा नीता भविष्यति।। कथासरित्सागरः 10/15/149

तत् कुत्र नीतस्ताक्ष्र्येण क्षणेऽस्मिन् भविष्यति। " " 22/237

सोऽपि मन भ्राता तत्र गतो भविष्यति। कुवलयमा लाकथा 1/8

हे कुब्जिके, यदियमन्येनापि भगवतः श्रीमदादिनाथयस्त प्रतिमा केनाऽप्यर्चिता,
परमिति न ज्ञायते यद्देवेन मानुषेण वा। कुब्जिकयोक्तम्-अत्र वने शवरैरभ्यर्चिता
भविष्यति। " " 3/36

ततो मया चिन्तितम्—हन्त। किमेतदिति। प्रकाशितं केनचित् भविष्यति
मित्रगुह्यम्। समरादित्यकथा पृ0 121

(संस्कृतच्छाया)

केनापि च कथिता भवदीयवार्ता भविष्यति। तद् गृह्यतां प्रसादः
सन्मान्यतामाकारकः। शृंगारमञ्जरीकथा पृ0 69

नूनं तेजोमतो तत्र परिणीता भविष्यति।। सुगन्धदशमीकथा 105
अल्माकमश्वाः-प्रविष्टा भविष्यन्ति। पुरातनप्रबन्धसंग्रह पृ0 52
भद्दिनि! सुलभापराधः परिजनो नाम। अपराद्धा भविष्यति। प्रतिमानाटकम्, अङ्क 2
यानि पुनः सिद्धान्तमध्ये सन्त्यक्षराणि तान्यन्यैरपि दृष्टानि भविष्यन्ति।

खरतरगच्छ-वृहद्गुर्वावलि द्द0 35

7. क्तवत् प्रत्ययान्त शब्दों से बने क्रियारूपों के उदाहरण

आपृच्छे त्वां गमिऽयामि द्वारकं कुरुनन्दन।
राजसूयं क्रतुश्रेष्ठं दिष्ट्या त्वं प्राप्तवानसि।। महाभारतम्, सरा0 45।
वयं त्वप्रतिमं वीर्ये सर्वे सौभद्रमात्मजम्। " "
उक्तवन्तः स्म तं तात मिन्ध्यनीकमिति प्रभो।। द्रोण0 73/5
कृतवानसि यत् कर्म श्रुतवानस्मि भार्गव। बाल्मीकिरामायणम्, आदि0 76/2
नभसीव नभः शान्ते विश्रान्तिमसि लब्धवान्। योगवाशिष्ठः नि0 उ0 201/32
दिवसः सफलो मन्ये यत्वामद्यास्मि दृष्टवान्। नि0पू0 85/69
निर्वाणार्थ तपः साधो कच्चित संभृतवानसि। नि0पू0 85/74
परे पदे महानन्दे कच्चिद् विश्रान्तवानसि। नि0पू0 103/54
इदं भेदमयं दुःखं कच्चित् संत्यक्तवानसि।
उक्तवानस्मि कल्याणि धर्मस्य परमा गतिः। महाभारतम्, समा0 69/14
सुदुर्दर्शभिदं रूपं द्दष्टवानसि यन्मम। भगवद्गीता 11/52
पूर्वमेव मया दत्तं दृष्टवत्यसि येन माम्। महाभारतम् वन0 307/20
अयुक्तं कृतवत्यः स्म क्षन्तुमर्हसि नो द्विज। " आदि0 217/2
उपयुक्ता माणवका इत्युच्यन्ते य एते नियमपूर्वकमधीतवन्तो भवन्ति।

आख्यातोपयोगे 1/429 सूत्र पर महाभाष्य

यत्समूमौ लावणकं नाम ग्रामः तत्र उषितवानस्मि। स्वप्नवासवदतम्, अंक 1
कृतवत्यसि नावधीरणामपराद्धेऽपि यदा चिरं मयि। रघुवंश 8/48
सखे! सर्वमिदानीं स्मरामि शकुन्तलायाः प्रथमबृतान्तम्। कथितवानस्मि च भवते।...

कच्चिदहमिव विस्मृतवानसि त्वम्। अभिज्ञानशाकुन्तलम्, अङ्क 6,

मेनका किल सख्यास्ते जन्मप्रतिष्ठेति श्रुतवानस्मि। " "

वृत्तान्तं न ब्रवीषि, निष्कारणं क्षिपसीति संक्रुद्धवानस्मि। अविमारकम्, अङ्क 6

एवं पितृश्चापचितिं कृतवांस्त्वं भविष्यसि।

मम प्रियं च सुमहत् कृतं राजन् भविष्यति।। महाभारतम् आदि0 3/84

8. तव्यत् प्रत्ययान्त शब्दों के साथ बने क्रियारूपों के उदाहरण

एतदपि मया कर्तव्यमासीत्। स्वप्तवासवदत्तम् अङ्क 3,

तद क्व खल्वयमायुष्मान् नेतव्यो भविष्यति। बालचरितम्, अङ्क 1,

मयाऽपि नाम स्त्रींवधः कर्तव्यो भवति। बालचरितम् अङ्क 2,

ननु सा तौ कुमारौ महाराजस्य समयावसाने प्रेक्षितव्या भविष्यन्ति। प्रतिमा अङ्क 2

किन्तु खलु तस्मै जनाय दातव्यं भविष्यति। चारुदत्तम् अङ्क 3,

अन्यस्मै नाऽस्मि दातव्या कार्यं मज्जीवितेन चेत्। कथासरित्सागरः 12/12/9

सखि! प्रष्टव्यासि किमपि। बलवान् खलु ते सन्तापः। अभिज्ञानशाकुन्तलम् अङ्क 2

न जाने कथं चिकित्सितव्यो भविष्यति। " " अङ्क 6,

यदि अन्यहस्तगतं भवेत् सत्यमेव शोचनीयं भवेत्। " " अङ्क 6,

सर्वेषां विबुधानां च वक्तव्यः स्यां यथा शुभे। महाभारतम्, वन0 307/27

तात! भवते विज्ञापनीयानि बहूनि सन्ति। दशकुमारचरितम्, पू0पी0 4,

देव! भवते विज्ञापनीयं रहस्यं किञ्चिदस्ति। " " 5

9. तुमुन् प्रत्यायान्त पदों के साथ दा धातु के प्रयोगों के उदाहरण

प्रजागरा्त खिलीभूतस्तस्याः स्वप्ने समागमः।

वाष्पस्तु न ददात्येनां द्रष्टुं चित्रगतामपि।। अभिज्ञानशाकुन्तलम् 6/22

स्वेच्छया स्त्रीणां धर्मार्थकामेषु व्यवहर्तुं न देयम्। मनुस्मृतिः 9/2 मेधातिथिभाष्यम्

यस्मिन् काले वर्णानामाधमिणाश्च साहसकारादिभिर्धर्मः कर्तुं न दीयेत।

मनुस्मृतिः 8/348 पर कुल्लूकभट्ट।

स्प्रष्टुं द्रष्टुं न दद्यात्।

स्नेहात् स्वप्तुमपि न ददाति। कामसूत्रम् 6/2/9 जयमङ्गला टीका।

यो ददाति न ते तुभ्यं दातुं सेष रविः प्रभो। कथासरित्सागरः 9/4/158

इहाश्रिताया वस्तुं मे देहि याम्यन्यतोऽन्यथा। ,, ,, 6/8/22

महानसे च पाकं कु र्वन्तीनां स्तनबन्धं कारयित्वा बालानां स्तनं पातुं न ददाति

कथाकोशः (प्रभाचन्द्र) 78 कथा

कस्यापि ग्रहीतुं न ददाति। ,, ,, 48 कथा

तस्याः संस्कारं कर्तुं न ददाति। (जगदीशचन्द्र) पृ0 24

इसे पुत्र्यौ कुलयस्याभीष्टे। कोऽपि त्यक्तुं न दास्यति ,, ,, पृ0 96

भूपः प्राह न दास्यामि गन्तुं निजपुरन्तु वः। प्रभावकचरितम् (वीराचार्य0) 11

भोक्तुं नादाच्च सर्वेषामेकमक्ष्यचिकित्सया। ,, ,, (अभयदेव) 317

अलसयति गात्राखिलं क्लेशं मोचयति लोचनं हरति।

स्वाप इव प्रेयान् मम मोक्तुं न ददाति शयनीयम्।। आर्यासप्तशती, अकारादि 54

स्पर्शादिव स्वेदं जनयति न च मे ददाति निद्रातुम्।

प्रिय इव जघनांशकमपि न निदाघः क्षणमपि क्षमते।। ,, सकारादि 37

हस्तौ विवुनोति, स्विद्यति, दशति, उत्त्यातुं न ददाति....। कामसूत्रम् 2/7/9

पर्वतेऽधिरोढुं न ददाति। प्रबन्धचिन्तामणिः 227

तत्र मृतकानां दाहं दातुं न ददते। पुरातनप्रबन्धसंग्रहः प्रबन्ध 322

जिनधर्ममहं भद्रे न विधातुं ददामि ते। वृहत्कथाकोशः 54/24

स्वामिन्नहं न ते गन्तुं ददामि पदमग्रतः। ,, ,, 59/56

मन्त्री यो राजकार्यं तु भवितुं न ददाति वै। नृपतिनीतिगर्भितवृत्तम् 128

बद्धशस्त्रः समागन्तुं दातव्यः सुखमिच्छता। ,, ,, 530

प्राणयुक्तो न संस्धातुं देयश्चेत्थं तु मे मतिः।

एकोऽपि कृष्णसारो न ददाति गन्तुं प्रदक्षिणं वलन्।

किं पुनर्वाष्पाकुलितं लोचनयुगं प्रियतमायाः।।	गाथासप्तशती	1/24
ईर्ष्याशीलः पतिरस्या रात्रौ मधकं न ददात्युच्चेतुम्।	(संस्कृतच्छाया)	
उच्चिनोत्यात्मनैव मातरति ऋजुकस्वभावः।।	"	2/59
ईर्ष्यां जनयन्ति दीपयन्ति मन्मथं विप्रियं साहयन्ति।		
विरहे न ददति मर्तुमहो गुणास्तस्य बहुमार्गाः।।	"	4/27
रेवतकपर्वते दिगम्बराः कृतवसतयः सिताम्बरान् तान् पाखण्डिरूपान् परिकल्प्य पर्वतेऽधिरोढुं न ददाति।	प्रबन्धचिन्तामणिः	पृ0 123
शूद्रको बहिश्चरान् वीरान् पुरमध्ये प्रवेष्टुमपि न दत्तवान्।	प्रबन्धकोशः	पृ0 69

10. तुमुन् प्रत्ययान्त पदों के साथ लभ् धातु के प्रयोगों के उदाहरण

स्वप्नकामो न लभते स्वप्तुं कार्यार्थिभिनरे।	महाभारतम्, शान्ति0	320/11
स्वजनेभ्यो मया लब्धं नानुगन्तुं सगर्भया।	कथासरित्सागरः	21/112
तदेवं नेच्छति विधौ न मर्तुमपि लभ्यते।	"	12/29/22
नाधर्मो लभ्यते कर्तुं लोके वैद्याधरे सुत।	"	14/2/156
नैव लेभे ततो गन्तुं प्रमोदवनमागतः।	भुशुण्डिरामायणम् उ0	5/2
सोऽपि किं लभते वक्तुं न वेल्यादिशत प्रभो।	प्रभावकचरितम् (वादिदेताल शान्तिसूरिचरितम्)	78
अस्मिन् न लभ्यते स्थातुं चैत्यवाससिताम्बरैः।	(अभयदेवचरितम्)	64
तयोक्तमननुज्ञातेः गन्तुं न लभ्यते।	वृहत्कथाश्लोकासंग्रहः	1/118
तयोक्तमिच्छया गन्तुमागन्तुं वा न लभ्यते।"	"	11/11
घटिकायुग्ममणि पुण्यं कर्तुं न लभ्यते। तत् किमनेन राज्येन?	कथाकोशः (जग0)	पृ0 30
अहं सप्तमभूमेरधः उत्तरितुं न लभे।	पुरातनप्रबन्धसंग्रहः	प्रबन्ध-1
तत्तीर्थ दिगम्बरै रुद्धं श्वेताम्वरसंघः प्रवेष्टुं न लभते।	प्रबन्धकोशः	प्रबन्ध-9

पुरो गन्तुं न लभ्यते ,, प्रबन्ध-22

यदि स्वस्थाने गन्तुं लभ्येत तदा दर्शयामि वपुःपौरुषम्। प्रबन्धचिन्तामणिः पृ0 216

प्रवेष्टुं लभते नासौ बलवानपि मागधः। वृहत्कथाकोशः 56/83

तृतीये स्नातुं भोक्तुं च लभते दशकुमारचरितम्, उत्तरपीठिका, अष्टम उच्छ्वासः।

लभते सा न निर्गन्तुं न युक्तं गमनं च ते। अवदानकल्पलता, आम्रपाल्यवदानम् 78

किन्तु पितरावेकेन सार्धं मां स्थातुं न प्रयच्छतस्तस्माद् देशान्तरं यावः।

पुण्याश्रवकथाकोशः 3/4

भोगास्तथापि दैवात् सकृदपि भोक्तुं न लम्यन्ते। औचित्यविचारचर्चा 83

यदि स्वस्थाने गन्तुं लभेत ताहि दर्शयामि स्ववपुः पौरुषम्।प्रबन्धचिन्तामणि पृ0 117

जैनप्रासादः कारयितुं न लभ्यते। प्रबन्धकोशः पृ0 20

व्रती स्थण्डिलशायी च शङ्के जीवति वा न वा।

नहि वैदेहि रामस्त्वां द्रष्टुं वाऽप्युपलप्स्यते।। वामीकिरामायणम, सुन्दर0 20/27

11. तुमुन् प्रत्ययान्त पदों के साथ लग् धातु के प्रयोगों के उदाहरण

राज्ञा तुङ्गदिभिश्चेतत् यावत्तेभ्यः प्रतिश्रुतम्।

अन्यत प्रार्थयितुं लनास्तावत्ते शठबुद्धयः।। राजतरङ्गिणी 7/16

पवनवेगेन गन्तुं लग्नः। कथाकोशः (प्रभाचन्द्रः) पृ0 143

नागकुमारः प्रत्यक्षीभूय वक्तुं लग्नः। ,, ,, पृ0 146

तां पूजयितुं लग्नः। ,, ,, पृ0 147

एष आगत एव मम पृष्ठे लग्नः। कुवलयमालाकथा संक्षेपः 2/33

अथ कर्मदौर्वल्यात् श्रीर्गन्तुं लग्ना। पुरातनप्रबन्धसंग्रहः 21 वसाह

अभडप्रबन्धः पृ0 33

उपद्रवं कर्तुं लग्नः। ,, ,, ,, 23 प्रबन्ध

ततः शंखसैन्यं हतप्रहतं नष्टुं लग्नम्। ,, ,, ,, 35 प्रबन्ध

ते च लाजाः कठिनकर्कशपाषाणरूपा राज्ञः शिरसि लमितुं लग्नाः।
प्रबन्धकोशः प्रबन्धः 17

तेन स्वजीवनार्थ विक्रेतुं कोहलकानि समानीतानि।
विक्रेतुं लग्नः। ,, प्रबन्ध-24

ताः सर्वा आहवे पयः पातुं लग्ना। ,, प्रबन्ध-24

ततो लग्नः संहर्तुम्। पुरातनप्रबन्धसंग्रहः, प्रबन्धः 322

उदाहरणों के सन्दर्भग्रन्थों की सूची

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदासः)
अवदानकल्पलता, प्रथमः खण्डः (क्षेमेन्द्रः)
अविमारकम् (भासकृत-नाटकम्)
आर्यासप्तशती (गोवर्धनाचार्यः)
आश्वलायनगृह्यसूत्रम्
उत्तररामचरितम् (भवभूतिः)
ऐतरेयब्राह्मणम्
ऐतरेयारण्यकम्
ऋग्वेदसंहिता
औचित्यविचारचर्चा (क्षेमेन्द्रः)
कथाकोशः (प्रभाचन्द्रः)
,, (जगदीशचन्द्रः)
कथासरित्सागरः (सोमदेवः)
कामसूत्रम् (वात्स्यायनः)
कुवलयमालाकथासंक्षेपः (श्रीरत्नप्रभसूरिः)
कौषीतकीब्राह्मणम्
खरतरगच्छ-वृहद्गुर्वावलि (श्री जिनपालोपाध्यादिसंकलित)
गोपथब्राह्मणम्
चारुदत्तम् (भासकृत-नाटकम्)
छान्दोग्योपनिषद्
जैमिनीयब्राह्मणम्
तैत्तिरीय आरण्यकम्
दशकुमारचरितम् (दण्डी)
नृपतिनीतिगर्भितवृत्तम् (लक्ष्मीपतिः)

पुण्याश्रवकथाकोशः (रामचन्द्रमुमुक्षुः)
पुरातनप्रबन्धसंग्रहः (जिनविजयमुनिः)
प्रतिभा (भासकृत-नाटकम्)
प्रबन्धकोशः (श्रीराजशेखरसूरिः)
प्रबन्धचिन्तामणिः (मेरुतुङ्गाचार्यः)
प्रभावकचरितम् (श्रीप्रभाचन्द्राचार्यः)
बालचरितम् (भासकृत-नाटकम्)
भगवद्गीता (वेदव्यासः)
महाभाष्यम् (पतञ्जलिः)
भर्तुहरिनीतिशतकम् (भर्तृहरिः)
भृशुण्डिरामायणम्
मनुस्मृतिः (मनुः)
महाभारतम् (वेदव्यासः)
मैत्रायणी आरण्यकम्
योगवाशिष्ठः (वाल्मीकिः)
रघुवंशम् (कालिदासः)
राजतरङ्गिणी (कल्हणः)
लिखनावली (मैथिलकविर्विद्यापतिः)
वाल्मीकिरामायणम् (वाल्मीकिः)
वृहत्कथाकोशः (श्रीहरिषेणाचार्यः)
वृहत्कथाश्लोकसंग्रहः (श्री भट्टबुधस्वामी)
बृहदारण्यकोपनिषद्
शतपथब्राह्मणम्
शृङ्गरमञ्जरीकथा (भोजदेवः)
समरादित्यकथा (आचार्यहरिभद्रः)
सुगन्धदशमीकथा (श्रुतसागरः)
स्वप्नवासवदत्तम् (भासकृत-नाटकम्)


संस्कृत भवन
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान
संस्कृताधीतिनः सन्तु सर्वे भारतभूमिजाः।
संस्कृतेनैव कुर्वन्तु व्यवहारं परस्परम्।।